04 - प्रश्नपत्र लीक: क्या सुरक्षित हैं हमारी परीक्षाएँ?

05 - गुस्से में आग बबूला, अपना आपा भूला

06 - सौहार्द, सम्मान, संस्कार और राष्ट्रप्रेम के संदेश के साथ ब्रह्माकुमारी...

07 - 15 जून से आईएसबीटी से भी मिलेंगी मुरैना एवं...

A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 02 जून, 2026
इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 11 अंक 240, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

भाववाचक चिह्न को देखकर
आदमी
भाषा में मौन को गढ़ता है
अर्थात्
मौन को पढ़ा जा सकता है
आदमी
मौन में अपने से बोलता है
अर्थात्
मौन में कहा जा सकता है
मौन
सबकी भाषा है
प्रकृति की भी
जो मौन में है
नैसर्गिक है।

– राग तेलंग

प्रसंगवश

भारत में कैसे बढ़ रहा है पॉलिटिकल कंसल्टेंसी मार्केट

अपूर्वा मंधानी

2019 लोकसभा चुनाव में पश्चिम बंगाल में हार मिलने के बाद, जहां 2014 के मुकाबले पार्टी की सीटें काफी कम हो गई थीं, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) को वापसी का एक मौका दिखा। यह प्रतिष्ठा की बड़ी लड़ाई थी, इसलिए उस समय की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रशांत किशोर और उनकी इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमेटी (आई-पैक) को जिम्मेदारी दी। भारत में कई राजनीतिक सलाहकारों के लिए प्रशांत किशोर और आई-पैक, राजनीतिक कंसल्टेंसी की 'आईवी लीग' मानी जाती है। अब कई दूसरी चुनाव प्रबंधन कंपनियां अब पार्टियों के अंदरूनी विभागों से आगे बढ़कर किराए पर काम करने वाली जरूरी ग्राउंड टीमें बन गई हैं। इंडस्ट्री की सकारात्मक वैल्यूएशन सालाना 1,500 करोड़ रुपये से ज्यादा मानी जाती है। खुद किशोर ने 2024 में कहा था कि एक चुनाव की सलाह देने के लिए उनकी फीस 100 करोड़ रुपये थी।अब सिर्फ पार्टियां ही नहीं, बल्कि अलग-अलग नेता भी चुनाव से पहले राजनीतिक सलाहकारों को रख रहे हैं। इसी मांग को पूरा करने के लिए कई छोटी-बड़ी कंपनियां सामने आई हैं। शोटाइम कंसल्टिंग के संस्थापक रॉबिन शर्मा, जो इस इंडस्ट्री के बड़े नामों में गिने जाते हैं, कहते हैं कि उन्हें यह इंडस्ट्री कानूनी क्षेत्र जैसी लगती है। आपको एक समस्या चुननी होती है और चुनाव जिताना होता है। लेकिन हर राज्य अलग है, हर समस्या अलग है, हर चुनौती अलग है। हर जगह एक जैसा तरीका नहीं चल सकता।' राजनीतिक कंसल्टेंसी इंडस्ट्री को प्रशांत किशोर से पहले और बाद के दौर में बांटा जा सकता है। राजनीति में पेशेवर तरीके की शुरुआत पार्टियों के अंदर बदलाव से हुई। पार्टियां अलग-अलग विभागों में काम बांटने लगीं और कैंपेन मैनेजमेंट तथा डेटा एनालिटिक्स जैसे कामों के लिए कर्मचारियों पर निर्भर होने लगीं। अपनी किताब 'द बैकस्टेज ऑफ डेमोक्रेसी' में लेखक अमोघ धर शर्मा लिखते हैं कि कांग्रेस में यह पेशेवर बदलाव 1980 के दशक में राजीव गांधी के समय शुरू हुआ था। तब पार्टी तकनीक, डेटा आधारित जानकारी और कंप्यूटराइज्ड विश्लेषण का इस्तेमाल करने लगी थी। इसके मुकाबले शर्मा बीजेपी में शुरुआती पेशेवर बदलाव का श्रेय प्रमोद महाजन को देते हैं। 1990 और 2000 के दशक में उन्होंने लालकृष्ण आडवाणी की रथ यात्रा की व्यवस्था संभाली थी। उन्होंने यात्रा के रास्ते में बीजेपी दफ्तरों में फैक्स मशीनें लगवाईं और हर घंटे प्रेस रिलीज दिल्ली स्थित मुख्य कार्यालय भेजी जाती थी, जिसे बाद में मीडिया तक पहुंचाया जाता था। चुनावी रणनीतिकार अब्बिन थीपुरा, जिन्होंने कई साल किशोर के साथ काम करने के बाद पी-मार्क शुरू किया, बताते हैं कि पहले इस इंडस्ट्री का कोई नाम नहीं था। 'पॉलिटिकल स्ट्रैटेजिस्ट' और 'पॉलिटिकल कंसल्टेंट' जैसे शब्द भी नहीं थे। सर्वे होते थे। यह सब पार्टी सिस्टम के अंदर ही होता था और पीआर टीम मीडिया मैनेजमेंट संभालती थी।'

उनकी कंपनी नेताओं की राजनीतिक ब्रांडिंग, मंत्रियों और सरकार को नीति सलाह और एग्जिट पोल का काम करती है। शर्मा की किताब में विप्लव के एक नए प्रयोग सुपरकॉलर का जिक्र है। यह एक डिजिटल कॉलिंग टूल था जो हर दिन 5 लाख वोटरों तक रिकॉर्डेड मैसेज पहुंचाता था। कंपनी 'कांस्टीट्यूएंसी मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर' भी देती थी, जिसमें वोटरों की सामाजिक-आर्थिक जानकारी और मतदान का डेटा होता था।

आई-पैक को भारत की कई राजनीतिक कंसल्टेंसी कंपनियों की 'पैरेंट कंपनी' माना जा सकता है। वह आई-पैक को 'आईवी लीग' भी कहती हैं।

सिटिजन्स फॉर अकाउंटेबल गवर्नेंस (सीएजी) नाम के राजनीतिक समूह को 2014 चुनाव से पहले मोदी के कई अभियानों की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है। इसमें प्रशांत किशोर मुख्य भूमिका में थे। चुनाव के बाद सीएजी अलग हो गया और 2015 में बिहार चुनाव से पहले आई-पैक बना। रॉबिन शर्मा, जो सीएजी और आई-पैक के संस्थापक सदस्यों में थे, ने 2019 में शोटाइम कंसल्टिंग शुरू की। कंपनी दावा करती है कि उसका '100 प्रतिशत स्ट्राइक रेट' है। इस कंपनी ने कई बड़े नेताओं और पार्टियों के साथ काम किया है। नरेश अरोड़ा की डिजाइनबॉक्स्ड ने भी कई पार्टियों और नेताओं के साथ काम किया है। एसोसिएशन ऑफ बिलियन माइंड्स (एबीएम) को बीजेपी से जुड़ा माना जाता है और 'नेशन विद नमो' अभियान इसी का बनाया हुआ बताया जाता है। इसी से निकली बेंगलुरु की वराहे एनालिटिक्स भी सिर्फ बीजेपी के लिए काम करती है। मुंबई की जार्विस कंसल्टिंग भी बीजेपी से जुड़ी मानी जाती है। इसी तरह इन्क्लूसिव माइंड्स, जिसे सुनील कनुगोलु चलाते हैं, सिर्फ कांग्रेस के लिए काम करती है। दक्षिण भारत में डीएमके की राजनीतिक रणनीति यूनिट पॉपुलस एम्पावरमेंट नेटवर्क (पेन) को पार्टी प्रमुख एम.के. स्टालिन के दामाद सबरीसन वेदमूर्ति चलाते हैं। हैदराबाद की प्रमाण्य स्ट्रैटेजी कंसल्टिंग ने भी कथित तौर पर AIADMK और पवन कल्याण की जन सेना पार्टी जैसी पार्टियों के साथ काम किया है। छोटी कंपनियां भी तेजी से बढ़ी हैं और कई लोग व्यक्तिगत तौर पर भी इस क्षेत्र में आ गए हैं, जो नेताओं को चुनाव संभालने में मदद कर रहे हैं।

यह इंडस्ट्री अब एक 'अच्छी तरह तेल लगी मशीन' जैसी बन गई है। एक राजनीतिक कंसल्टेंसी में काम करने वाला सलाहकार, जो एक प्रमुख विपक्षी पार्टी के साथ काम करता है, कहता है कि राजनीतिक कंसल्टेंसी में एक सामान्य नौकरी जैसी सभी चीजें होती हैं, । एक ही पार्टी के साथ लंबे समय तक काम करने से पार्टी के साथ बेहतर जुड़ाव बनता है।

यह इंडस्ट्री अब शायद स्थायी प्रकृति की बनती जा रही है। आज के समय में सिर्फ सबसे अच्छे प्रोफेशनल्स को रखना ही काफी नहीं है। यह भी जानना जरूरी है कि विपक्षी पार्टियां किन फर्मों को साथ रख रही हैं। राजनीतिक कंसल्टेंसी की शुरुआत एक ऐसे उद्योग के रूप में हुई थी जो केवल चुनाव से पहले की योजना और क्रियान्वयन पर केंद्रित था। लेकिन चुनाव प्रबंधन के विशेषज्ञ कई बार इस दायरे से बाहर जाकर पार्टी या नेता की शासन व्यवस्था में भी मदद करने लगे हैं। जहां राजनेता छवि और दृश्यता पर निर्भर होते हैं, वहीं राजनीतिक कंसल्टेंसी उद्योग काफी हद तक अपारदर्शी मॉडल पर काम करता है। कंसल्टेंसी फर्मों में रिसर्च विभाग भी होता है जो पॉलिसी पेपर और भाषण लिखने और मैनिफेस्टो बनाने में मदद करता है। इस उद्योग में काम करने वाले लोगों की योग्यता और कौशल भी बहुत विविध हैं। अब कंपनियां ऐसे लोगों को चाहती हैं जो एनालिटिक्स, ऑडियंस बिहेवियर, डिजिटल आउटरीच और रिजल्ट ड्रिवन कम्युनिकेशन समझते हों। कॉरपोरेट अनुभव वाले लोग भी इस क्षेत्र में आना चाहते हैं क्योंकि उन्हें तेजी से सीखने, ज्यादा जिम्मेदारी और लोगों से जुड़े काम की तलाश होती है। एक चीज जो नहीं बदली है वह यह है कि जमीनी स्तर को समझने वाले लोगों का महत्व अभी भी बहुत ज्यादा है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

● अर्जुन सिंह-तपस रॉय मंत्री बने, शुभेंदु मंत्रिमंडल में अब 41 मिनिस्टर

पश्चिम बंगाल में कैबिनेट विस्तार, 35 मंत्रियों ने ली शपथ

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में सोमवार को सरकार का पहला मंत्रिमंडल विस्तार हुआ। लोकभवन में हुए कार्यक्रम में राज्यपाल आरएन रवि ने 35 नए मंत्रियों को शपथ दिलाई। सीएम शुभेंदु अधिकारी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। 13 नेताओं को कैबिनेट मंत्री, 3 को राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 19 को राज्य मंत्री बनाया गया। इस विस्तार के साथ बंगाल में मंत्रिपरिषद की मंत्रियों की संख्या 41 हो गई है। इससे पहले 9 मई को शुभेंदु अधिकारी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। उनके साथ दिलीप घोष, अग्निमित्रा पॉल, निशीथ प्रमाणिक, अशोक कीर्तनिया और क्षुदीराम टुडू ने भी मंत्री पद की शपथ ली थी।

मंत्रिपरिषद की लिमिट 44, सरकार में 41 मंत्री होंगे– संविधान के 91वें संशोधन के अनुसार, राज्य मंत्रिमंडल में विधायकों की संख्या विधानसभा की कुल संख्या के 15 फीसदी तक सीमित है। पश्चिम बंगाल में 294 विधायक हैं, इसलिए मंत्रिमंडल में अधिकतम 44 मंत्री हो सकते हैं। सोमवार के शपथ ग्रहण के बाद कैबिनेट में 41 मंत्री हो गए हैं। तय सीमा के आधार पर 3 मंत्री और बनाए जा सकते हैं। रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि फिलहाल यह 3 पद खाली ही रहेंगे।

बंगाल में पहली बार भाजपा जीती– 4 मई को 293 सीटों के नतीजे आए। भाजपा को 207 सीटें मिलीं। टीएमसी सिर्फ 80 पर सिमट गई। राज्य में कुल 294 विधानसभा सीट हैं, एक पर 21 को मतदान हुआ।

सीएम शुभेंदु ने गृह और वित्त विभाग अपने पास रखा

इससे पहले 11 मई को सीएम शुभेंदु ने अपने मंत्रियों को विभागों का बंटवारा कियाा था। इसमें निशिथ प्रमाणिक को उत्तर बंगाल विकास, खेल और युवा कल्याण मंत्रालय सौंपा गया। दिलीप घोष को ग्रामीण विकास, पशु संसाधन विकास, कृषि विपणन की जिम्मेदारी सौंपी गई। अग्निमित्रा पॉल को महिला एवं बाल विकास, समाज कल्याण, नगर निकाय विभाग दिए गए। अशोक कीर्तनिया को खाद्य एवं आपूर्ति, सहकारिता विभाग दिया गया। क्षुदीराम टूडू को जनजातीय विकास, पिछड़ा वर्ग कल्याण, अल्पसंख्यक मामले और मदरसा शिक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई। सीएम शुभेंदु अधिकारी ने गृह मंत्रालय समेत अन्य सभी मंत्रालय अपने पास रखे हैं। अब आगे नए मंत्रियों को विभाग बांटे जाएंगे।

जिस घर में रहता था असद उस पर चलेगा बुलडोजर!

● सूर्या चौहान मर्डर केस में बड़ी तैयारी

ढोल लेकर पहुंचा प्रशासन

गाजियाबाद (एजेंसी)। बकरीद के दिन गाजियाबाद की खोड़ा कॉलोनी में सूर्या चौहान की हत्या करने वाले असद का एनकाउंटर हो चुका है। अब प्रशासन ने एक और कार्रवाई की है। जांच में सामने आया कि खोड़ा के नवनीत विहार में सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा कर एक इमारत बनाई गई है। इसी इमारत में असद अपने माता-पिता के साथ किराए पर रहता था। प्रशासन ने नोटिस जारी कर बिल्डिंग मालिक को 15 दिन में जमीन को खाली करने का अल्टीमेटम जारी कर नोटिस चस्पा कर दिया है। असद का एनकाउंटर होने के बाद रविवार को नायब तहसीलदार गाजियाबाद एवं अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद खोड़ा-मकरपुर की टीम मौके पर पहुंची। ढोल बजवाकर और लाउडस्पीकर से मुनादी कराने के बाद टीम ने बिल्डिंग मालिक के नाम पर नोटिस चस्पा कर दिया। नोटिस के अनुसार, ग्राम खोड़ा के खसरा संख्या 70 की सरकारी भूमि पर अवैध रूप से यह निर्माण किया गया है। राजस्व रिकॉर्ड में यह जमीन 5-3 भूमि के तौर पर दर्ज है।

ओडिशा, मिजोरम सिक्किम और मणिपुर में एसआईआर शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने ओडिशा, मिजोरम, सिक्किम और मणिपुर में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का तीसरा चरण शुरू कर दिया है। इन राज्यों में अगले साल विधानसभा चुनाव हैं। निर्वाचन आयोग ने 14 मई को संविधान के अनुच्छेद 324 और जनप्रतिनिधित्व कानून 1950 की धारा 21 के तहत 16 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में एसआईआर का आदेश दिया था। उसी प्रक्रिया के तहत अब ओडिशा, मिजोरम, सिक्किम और मणिपुर में 30 मई से एन्यूमरेशन फेज शुरू हो गया है। एसआईआर के तहत बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) घर–घर जाकर मतदाताओं का वेरिफिकेशन करेंगे और फॉर्म जमा कराएंगे। आयोग ने कहा है कि 28 जून 2026 तक जिन लोगों के फॉर्म चुनाव पंजीकरण अधिकारी को मिल जाएंगे, उनके नाम ड्राफ्ट वोटर लिस्ट में शामिल किए जाएंगे।

मप्र में जल्द लागू करेंगे समान नागरिक संहिता : मुख्यमंत्री

बोले– बहनों के तलाक रोकने के लिए यह जरूरी, सभी धर्मों से ले रहे सुझाव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्य प्रदेश में जल्द ही समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू की जाएगी। इसके लिए राज्य सरकार ने एक समिति का गठन किया है, जो विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोगों से सुझाव प्राप्त कर रही है। सरकार ने सुझावों के लिए एक वेबसाइट भी शुरू की है, जहां नागरिक अपने विचार और सुझाव दर्ज कर सकते हैं।

भोपाल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में विवाह, तलाक और पारिवारिक मामलों से जुड़े कई प्रकरण अलग-अलग धार्मिक और पारंपरिक व्यवस्थाओं के आधार पर सामने आते हैं। वर्तमान समय में समानता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए समान नागरिक संहिता की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

तलाक के मामलों में राहत मिलेगी– उन्होंने कहा कि विशेष रूप से महिलाओं से जुड़े विवाह विच्छेद (तलाक) जैसे मामलों में यूसीसी लागू होने के बाद राहत और समान अधिकार सुनिश्चित किए जा सकेंगे। सरकार सभी धर्मों और समुदायों के लोगों की राय लेकर इस दिशा में आगे बढ़ रही है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि यूसीसी के अध्ययन और सुझावों के लिए गठित समिति में सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीशों सहित कई विद्वान और विशेषज्ञ शामिल हैं। समिति विभिन्न वर्गों से संवाद कर सुझाव एकत्रित कर रही है, जिसके आधार पर अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

सीएम की अपील– वेबसाइट के माध्यम से अपने सुझाव अवश्य दें– डॉ. यादव ने कहा कि उत्तराखंड, गुजरात और असम जैसे राज्यों ने समान नागरिक संहिता की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। मध्य प्रदेश भी विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर इसे लागू करने की तैयारी कर रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रदेश यूसीसी लागू करने के लिए सबसे अनुकूल राज्यों में से एक है।

प्रदेश में गठित की गई है उच्च स्तरीय समिति

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में समान नागरिक संहिता (यू.सी.सी) लागू करने की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है। वर्तमान समय में विभिन्न धर्मों में विवाहित बहनों के लिए प्रचलित अलग-अलग रीति-रिवाज और नियमों की आवश्यकता नहीं है। मध्यप्रदेश को आज समान नागरिक संहिता की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। वर्तमान में देश के तीन राज्यों उत्तराखंड, गुजरात और असम ने समान नागरिक संहिता को लागू किया है। मध्यप्रदेश सरकार ने भी यूसीसी (यूनिफॉर्म सिविल कोड) को लागू करने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह जानकारी आज सोमवार को मंत्रालय में मीडिया को जारी वक्तव्य में दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में यूसीसी के लिए सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय समिति गठित की गई है।

इंडो-पैसिफिक में मजबूत होगी भारत-ऑस्ट्रेलिया की ताकत

● दिल्ली में दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों ने बैठक में दिए बड़े संकेत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच रक्षा संबंधों को नई उड़ान देने के लिए सोमवार को नई दिल्ली में एक दूसरी द्विपक्षीय बैठक हुई। बैठक में भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह व ऑस्ट्रेलिया के उप प्रधानमंत्री एवं रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को और मजबूत बनाने पर चर्चा की। इस बैठक में समुद्री सुरक्षा, सैन्य सहयोग, रक्षा उद्योग, सह–विकास और इंडो–पैसिफिक क्षेत्र की सुरक्षा से जुड़े मुद्दे प्रमुख रहे। बैठक के दौरान रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने ऑस्ट्रेलिया की 2026 की राष्ट्रीय रक्षा रणनीति और इंटीग्रेटेड इन्वेस्टमेंट प्रोग्राम का स्वागत करते हुए कहा कि दोनों देशों के रक्षा संबंधों में विकास की अपार संभावनाएं हैं।

भारत–ऑस्ट्रेलिया रणनीतिक रूप से एकजुट– वहीं रिचर्ड मार्ल्स ने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया पहले से कहीं अधिक रणनीतिक रूप से एकजुट हैं और दोनों देश समुद्री क्षेत्र में सहयोग बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा, हम निश्चित रूप से समुद्री क्षेत्र में और अधिक काम कर रहे हैं और हम आज अपनी नियमित बैठक में इस बारे में बात करेंगे।

जेईई एडवांस में बिहार के शुभम टॉपर

● दिल्ली के कबीर दूसरे, झुंझनूं के जतिन तीसरे नंबर पर

कोटा (एजेंसी)। जॉइंट एंट्रेंस एग्जाम यानी जेईई-एडवांस का रिजल्ट रविवार देर रात जारी हुआ। इसमें बिहार के शुभम कुमार टॉपर रहे। दूसरे नंबर पर दिल्ली के कबीर छिल्लर और तीसरे नंबर पर झुंझनूं (राजस्थान) के जतिन चाहर रहे। टॉप-10 में रहे 6 स्टूडेंट्स ने राजस्थान के कोचिंग संस्थानों में पढ़ाई की। एजुकेशन एक्सपर्ट के मुताबिक परीक्षा में बैठने वाले कैंडीडेट्स में 31.65 फीसदी पास हुए। जेईई एडवांस में 1 लाख 79 हजार 694 स्टूडेंट्स शामिल हुए थे। 56 हजार 880 कैंडिडेट्स ने परीक्षा पास की। इस साल परीक्षा का कटऑफ बढ़कर 92 हो गया है। 2025 की तुलना में कटऑफ में 18 अंक का इजाफा हुआ। वहीं, सब्जेक्ट वाइज कटऑफ में जनरल कैटेगरी में 8 अंक बढ़े हैं।

नीट री-एग्जाम पेन-पेपर मोड में ही होगी

● सुप्रीम कोर्ट बोला- एजेंसियां पहले से दबाव में हैं ● कहा- अभी परीक्षा का तरीका बदलना संभव नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने 21 जून को होने वाली नीट री-एग्जाम को कंप्यूटर बेस्ड टेस्ट (सीबीटी) मोड में कराने की मांग मानने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई जुलाई में तय की है। इससे 21 जून को होने वाली परीक्षा फिलहाल पेन-पेपर मोड में ही होगी। जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस अरविंद कुमार की बेंच आरजेडी सांसद सुधाकर सिंह की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। याचिकाकर्ता के वकील ने नीट की दोबारा परीक्षा सीबीटी मोड में कराने की मांग की। देशभर में 3 मई को नीट-यूजी परीक्षा हुई थी। 7 मई की शाम पेपर लीक की खबर सामने आई थी। 12 मई को परीक्षा रद्द कर दी गई। 21 जून को री-एग्जाम होगा।

● **याचिका में 4 बड़े बदलावों की मांग–** एनटीए की जगह एक स्वतंत्र वैधानिक राष्ट्रीय परीक्षा प्राधिकरण बनाया जाए। इसके साथ ही पूर्व इसरो प्रमुख के राधाकृष्णन समिति की सिफारिशें लागू की जाए। बायोमेट्रिक सत्यापन, एआई आधारित निगरानी, एन्क्रिप्टेड डिजिटल प्रश्नपत्र प्रणाली और प्रश्नपत्रों को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखा जाए।

● **संसदीय समिति में एनटीए की जगह नई संस्था का प्रस्ताव–** इधर संसद की शिक्षा, महिला, बाल, युवा एवं खेल मामलों की स्थायी समिति की बैठक सोमवार को हुई। बैठक की अध्यक्षता कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह ने की। इसमें नीट परीक्षा, एनटीए और पेन–पेपर बनाम सीबीटी मोड पर चर्चा हुई। यूनाइटेड डॉक्टर्स फ्रंट ने समिति ने कहा कि नीट से जुड़े सवाल केवल परीक्षा के तरीके तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पारदर्शिता, जवाबदेही और परीक्षा कराने वाली एजेंसी की विश्वसनीयता से भी जुड़े हैं। संगठन ने एनटीए को भंग कर संसद के कानून के तहत नई राष्ट्रीय परीक्षा संस्था बनाने की मांग की। यह भी कहा कि नीट–यूजी 2026 पेपर लीक की जांच को 2024 की परीक्षा से जुड़े विवादों के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 02 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

शादी के दिन हेलीकॉप्टर क्रैश में भारतवंशी पायलट की मौत

- अमेरिका के जॉर्जिया में हादसा, पत्नी 6 घंटे मलबे में फंसी रही

जॉर्जिया (एजेंसी)। अमेरिका के जॉर्जिया में शादी के कुछ घंटों बाद भारतीय मूल के पायलट की हेलीकॉप्टर हादसे में मौत हो गई। उनकी पत्नी घायल हो गईं और करीब 6 घंटे तक मलबे में फंसी रहीं। डेव फिजी और जेस्री की शादी 29 मई को डॉसनविल के द रिवेरे वेडिंग वेन्यू में हुई थी। समारोह में करीब 400 मेहमान शामिल हुए थे। नवविवाहित जोड़ा शादी के बाद हेलीकॉप्टर से अटलांटा के लिए रवाना हुआ था, लेकिन उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद हेली दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

डेव बचपन का सपना पूरा कर पायलट बना था

परिवार के अनुसार डेव फिजी बचपन से ही पायलट बनना चाहता था। उसने अपनी मेहनत और लगन से यह सपना पूरा किया और बाद में डेल्टा एयर लाइंस में फर्स्ट ऑफिसर के तौर पर नियुक्त हुआ। डेव को उड़ान और विमानन क्षेत्र से बेहद लगाव था। परिवार के अनुसार वह बेहद अनुशासित और जिम्मेदार पेशेवर पायलट था। हादसे से पहले डेव ने चर्चा की थी।

अमेरिका ने ईरान की रडार-ड्रोन कंट्रोल साइट्स पर किया हमला

- ईरान ने जवाबी हमले में एयरबेस को निशाना बनाया, ईरानी राष्ट्रपति के इस्तीफे का दावा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका ने कहा कि हमने ईरान के गोरुक और केश्म आईलैंड पर रडार और ड्रोन कंट्रोल साइट्स को निशाना बनाया है। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने बताया है कि यह कार्रवाई ईरान की आक्रामक गतिविधियों के जवाब में की गई। अमेरिका ने आरोप लगाया कि ईरान ने रविवार को अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में एक अमेरिकी ड्रोन को गिराया था। अमेरिकी सेना ने ईरान के एयर डिफेंस सिस्टम, एक ग्राउंड कंट्रोल स्टेशन और दो ड्रोन को तबाह कर दिया। दूसरी तरफ, ईरान की इस्लामिक रेवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने दावा किया कि हमने उस एयरबेस को निशाना बनाया, जिसका इस्तेमाल सीरिक आइलैंड के पास अमेरिकी ऑपरेशन में हुआ था। वहीं, ईरान इंटरनेशनल की रिपोर्ट में दावा किया गया कि ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने इस्तीफा दे दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक पजशकियान ने आरोप लगाया कि देश की सत्ता पर अब पूरी तरह आईआरजीसी के कमांडरों का कंट्रोल है। फ्रांस ने लेबनान में इजराइल की बढ़ती सैन्य कार्रवाई को लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आपात बैठक बुलाने की मांग की है।

डिप्टी सीएम ने नि:शुल्क फाइब्रोस्कैन स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ किया

भोपाल। मध्यप्रदेश शासन के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने सोमवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में चिकित्सा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित नि:शुल्क फाइब्रोस्कैन स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ किया। इस दौरान प्रदेश शासन के मंत्री श्री गौतम टेटवाल, तीर्थ एवं मेला प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री विनोद गोटिया एवं चिकित्सा प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक डॉ. विशाल बघेल सहित चिकित्सा प्रकोष्ठ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यकर्ताओं के लिए चिकित्सा शिविर बड़ी सौगात- देवड़ा- मध्यप्रदेश शासन के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने आयोजकों एवं चिकित्सकों की टीम को बधाई देते हुए कहा कि स्वास्थ्य शिविर में मशीन द्वारा नि:शुल्क लिवर की जांच की जा रही है। प्रदेश भर से कार्यकर्ता एवं आमजन भाजपा प्रदेश कार्यालय आते हैं, जिन्हें चिकित्सकीय परामर्श एवं स्वास्थ्य जांच की आवश्यकता होती है। यह स्वास्थ्य शिविर समाज के प्रति सेवा, समर्पण एवं स्वास्थ्य जागरूकता के भाव को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

ब्रह्मोस, आकाश और नेत्र...

डिफेंस एक्सपोर्ट में भारत का दबदबा

दुनिया के 4 देशों से 21000 करोड़ के सौदे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रक्षा उद्योग वैश्विक मंच पर एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। ऑपरेशन सिंदूर में ब्रह्मोस, आकाश मिसाइल, लॉयटरिंग म्यूनिशन और नेत्र जैसे स्वदेशी हथियारों के शानदार प्रदर्शन के बाद दुनिया भर में भारतीय वार मशीनरी की मांग में भारी उछाल आया है। रक्षा मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार, भारत ने वित्त वर्ष 2025-26 में 38,424 करोड़ का रिकॉर्ड रक्षा निर्यात दर्ज किया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 62 फीसदी अधिक है। भारत ने अब 2029-30 तक 50,000 करोड़ के रक्षा निर्यात का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है।

ब्रह्मोस मिसाइल की दुनिया भर में बढ़ी मांग

भारत की सबसे घातक ब्रह्मोस मिसाइल के लिए फिलीपींस, वियतनाम और दो अन्य देशों के साथ करीब 12,500 करोड़ के सौदे हो चुके हैं। फिलीपींस के साथ करीब 3,200 करोड़ की डील पूरी हो चुकी है। वियतनाम से 5,800 करोड़ की डील पर हस्ताक्षर हो चुके हैं, जिसकी औपचारिक घोषणा जल्द होने वाली है। इंडोनेशिया में लगभग 3,600 करोड़ की डील अंतिम चरण में है, जबकि मलेशिया और थाईलैंड ने भी इसमें गहरी रुचि दिखाई है।

आकाश-1एस एयर डिफेंस सिस्टम

आकाश मिसाइल सिस्टम के लिए आर्मेनिया के साथ 6,100 करोड़ का अनुबंध पहले ही हो चुका है और इसकी डिलीवरी वर्तमान में जारी है, जिसे हाल ही में आर्मेनिया की सालाना परेड में भी देखा गया था। इसके अलावा, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देशों ने भी आकाश-1एस में रुचि दिखाई है, जबकि आकाश-एनजी को लेकर नई बातचीत चल रही है। दूसरी ओर, भारत की पिनाका बहु-नल रॉकेट प्रणाली की डिलीवरी आर्मेनिया को की जा चुकी है, जहां इसे शांत नाम से सेना में शामिल किया गया है। गाइडेड पिनाका की मारक क्षमता 75 किलोमीटर है और अब इसे खरीदने के लिए फ्रांस की संभावित रुचि की खबरें भी सामने आ रही हैं।

लॉयटरिंग म्यूनिशन और 'नेत्र' सिस्टम

भारतीय लॉयटरिंग म्यूनिशन (नागास्त्र-1 और स्काईस्ट्राइकर) की विदेशों में मांग तेजी से बढ़ी है। साइप्रस ने अपने 2026-31 के रक्षा रोडमैप में इसे खरीदने की इच्छा जताई है। इसके अलावा, दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व के देशों से भी लगातार पूछताछ आ रही है। इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए एचएएल और अदानी डिफेंस जैसी कंपनियां अपना उत्पादन तेजी से बढ़ा रही हैं। भारत वर्तमान में दुनिया के 100 से अधिक देशों को रक्षा उपकरण निर्यात कर रहा है, जिनमें अमेरिका, फ्रांस और आर्मेनिया प्रमुख हैं। अमेरिका सबसे बड़ा खरीददार है।

हमलों से पहले

अब आपको मिलेगा अलर्ट!

- देश के 244 जिलों में लग रहा एयर रेड वॉर्निंग सिस्टम
- मिसाइल, ड्रोन, हमले से पहले देगा चेतावनी

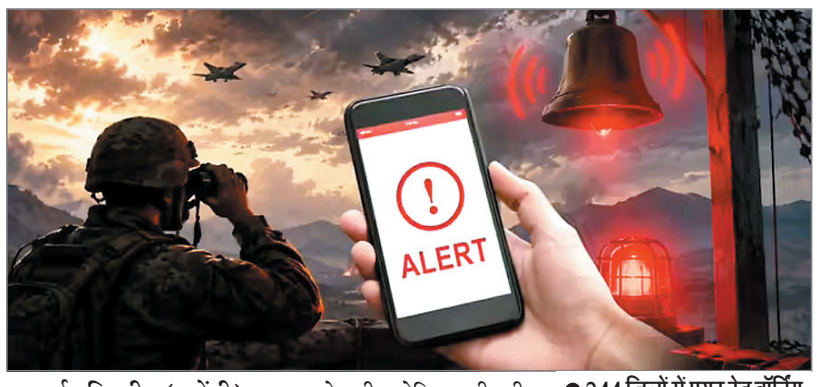

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार देश के उन जिलों में अत्याधुनिक एयर रेड वॉर्निंग सिस्टम लगाने पर काम कर रही है, जो संवेदनशील हैं या दुश्मनों के हवाई हमलों की स्थिति में सबसे पहले चपेट में आ सकते हैं।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देश देख चुका है कि पश्चिमी सीमा पर राजस्थान से लेकर जम्मू और कश्मीर तक पाकिस्तान ने कौड़ियों के भाव वाले तुर्की के सैकड़ों ड्रोन भेजकर किस तरह से दहशत मचाने की कोशिश की थी। केंद्र जिस अत्याधुनिक एयर रेड वॉर्निंग सिस्टम प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है, एजेंसी की एक रिपोर्ट के अनुसार इसके लिए एयर फोर्स के पूर्व अधिकारियों की नियुक्ति प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। रिपोर्ट में इस मामले की जानकारी रखने वाले अफसरों के हवाले से बताया गया है कि इस प्रोजेक्ट की अगुवाई एयर फोर्स के ऐसे पूर्व अफसर करेंगे, जो एयर डिफेंस ऑपरेशन के क्षेत्र में आगे हैं।

- **244 जिलों में एयर रेड वॉर्निंग सिस्टम-** यह एयर रेड वॉर्निंग सिस्टम सभी तरह के ड्रोन, मिसाइलों और लड़ाकू विमानों से हवाई हमलों से खतरे की स्थिति में नागरिकों को चेतावनी देंगे। इस प्रोजेक्ट पर काम पूरा होने के बाद देश के सभी 244 संवेदनशील जिले किसी भी हवाई हमले को लेकर इस चेतावनी नेटवर्क से जुड़ जाएंगे। देश के इन 244 जिलों में से ज्यादातर सीमावर्ती इलाकों में हैं।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद महसूस हुई जरूरत

इस प्रोजेक्ट की जानकारी रखने वाले एक अधिकारी ने जो कुछ बताया, उससे इसके बारे में काफी कुछ पता चल सकता है। इस प्रोजेक्ट से यह सुनिश्चित होगा कि सिविल डिफेंस मैनुअल के अनुसार ही जमीनी स्तर पर एक स्टैंडर्ड एयर वॉर्निंग सिस्टम भी मौजूद रहे। नए एयर डिफेंस वॉर्निंग सिस्टम का प्रस्ताव पिछले साल ऑपरेशन सिंदूर के तुरंत बाद ही आया था। युद्ध में ड्रोन का इस्तेमाल शुरू होने के बाद नागरिकों के लिए हवाई रक्षा चेतावनी प्रणाली जरूरी हो जाती है। एक बार यह प्रोजेक्ट स्थापित हो गया, फिर सिविल वॉलेंटियर को भी इससे जुड़ी ट्रेनिंग दी जाएगी।

गृह मंत्रालय के अधीन है यह एयर डिफेंस प्रोजेक्ट

ऑपरेशन सिंदूर के कुछ दिनों बाद ही ऐसी रिपोर्ट आई थी कि कुछ एयर वॉर्निंग सिस्टम ठीक से काम नहीं कर रहे थे और उनमें से कई बहुत पुराने पड़ चुके थे। उनकी जगह तात्कालिक सायरन से भी काम चलाना पड़ा। रिपोर्ट के मुताबिक एयर रेड वॉर्निंग सिस्टम प्रोजेक्ट की अगुवाई डायरेक्टोरेट जनरल- फायर सर्विस आदि करेंगे।

मुख्यमंत्री ने सोमवार को मंत्रालय में मध्यप्रदेश यात्री परिवहन एवं इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड के संचालक मंडल की तीसरी बैठक में समीक्षा की।

कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर 44 रुपया महंगा

भोपाल में 3116, इंदौर में 3222, ग्वालियर में 3338 में मिलेगा; 3 महीने में 1300 बढ़े

भोपाल (नप्र)। कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमतें आज से फिर बढ़ गई है। मध्य प्रदेश में यह 44 रुपए तक महंगा हुआ है। भोपाल में अब 3116.50 रुपए में सिलेंडर मिलेगा। वहीं, इंदौर में 3222.50 रुपए, जबलपुर में 3290 रुपए, ग्वालियर में 3338.50 रुपए और उज्जैन में 3250 रुपए कीमत हो गई है।

तीन महीने में रेट करीब 1300 रुपए तक बढ़े हैं। इससे पहले 1 मई को रेट बढ़े थे। सिलेंडर की कीमतें लगातार बढ़ने से खाना महंगा हो गया है। भोपाल में ही खाना 10 से 15 प्रतिशत तक महंगा हुआ है। जुलाई तक प्रदेश में 20 हजार से ज्यादा शादियां होनी हैं, ऐसे में आम लोगों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं।

कीमतें बढ़ने से रेट बढ़ रहे

भोपाल होटल एवं रेस्टोरेंट संघ के अध्यक्ष तेजकुल पाल सिंह पाली ने बताया कि कमर्शियल गैस सिलेंडर के रेट लगातार बढ़ रहे हैं। यह पहले की तुलना में 60 प्रतिशत तक महंगा हो गया है। इस कारण खाना भी महंगा हो रहा है। पिछली बढ़ोतरी के बाद 10 से 15 प्रतिशत तक रेट बढ़े थे। आगे और बढ़ने की संभावना है। मध्य प्रदेश टेंट कैटर्स एसोसिएशन के रामबाबू शर्मा ने बताया, सिलेंडर के रेट बढ़ने से होटल और कैटर्स में 10 प्रतिशत तक कॉस्टिंग का फर्क पड़ा है। 500 लोगों के 5 लाख रुपए के खाने का बजट अब 45 से 50 हजार रुपए तक बढ़ चुका है। आगे भी ऐसे हालात बन सकते हैं।

2-3 जून को पानी की सप्लाई नहीं, कोलार लाइन से जुड़े इलाकों में पानी नहीं मिलेगा, 75 इलाकों में असर

भोपाल (नप्र)। भोपाल में कोलार लाइन से जुड़े करीब 75 इलाकों में 2 और 3 जून को पानी की सप्लाई नहीं होगी। कोलार की ग्रेविटी मेन में जरूरी सुधार के कारण ऐसा होगा। लाइन में सुधार का काम 2 जून की सुबह 10 बजे से अगले दिन 10 बजे तक चलेगा। इस कारण दोनों ही दिन पानी की सप्लाई बाधित रहेगी। ऐसे में नगर निगम टैंकरों के जरिए जलापूर्ति करेगा।

यूपी बीजेपी की 'नई टीम' को लेकर बड़ा मंथन

मजबूत रणनीति के साथ चुनाव मैदान में उतरेगी पार्टी

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति की रविवार को अहम बैठक हुई। भाजपा चुनाव समिति ने संगठनात्मक तैयारियों की समीक्षा की और राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर पार्टी की लंबित नियुक्तियों पर चर्चा की। बैठक की अध्यक्षता भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने की और इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शामिल हुए। सूत्रों के अनुसार बैठक में भाजपा की उत्तर प्रदेश संगठनात्मक टीम के गठन पर भी चर्चा हुई, जिसका नेतृत्व प्रदेश इकाई के नवनियुक्त अध्यक्ष पंकज चौधरी करेंगे। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में अब सिर्फ 10 महीने बचा है ऐसे में भाजपा देश के राजनीतिक रूप से सबसे अधिक महत्वपूर्ण राज्य में एक पूर्ण संगठनात्मक टीम बनाने और अपनी चुनावी रणनीति को और मजबूत करने की दिशा में काम कर रही है। उत्तर प्रदेश से लोकसभा में 80 सांसद चुनकर जाते हैं और राज्य में विधानसभा की 403 सीट हैं। सूत्रों ने बताया कि शीर्ष नेतृत्व ने कुछ अन्य राज्यों से संबंधित राजनीतिक घटनाक्रमों की भी समीक्षा की जहां संगठनात्मक और प्रशासनिक बदलाव होने हैं। इस हफ्ते असम में मंत्रिमंडल विस्तार करने के साथ ही राजनीतिक नियुक्तियां भी होंगी।

पत्रकारिता का धर्म अज्ञानता को दूर करना है

नई दिल्ली। हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली तथा माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल द्वारा आयोजित दो-दिवसीय 'हिन्दी पत्रकारिता द्विशताब्दी महोत्सव' आज सम्पन्न हुआ। समापन सत्र की अध्यक्षता राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ने की। 'हिन्दी पत्रकारिता : भविष्य, चुनौतियां और संभावनाएं' विषय पर केन्द्रित सत्र में आईजीएनसीए के अध्यक्ष पद्म भूषण रामबहादुर राय ने 'आपातकाल : सीख और सबक' विषय पर बात की। इस सत्र के दौरान आईआईएमसी के प्रो. प्रमोद कुमार द्वारा संपादित पुस्तक 'पारखी दृष्टि में समग्र भारतीय पत्रकारिता' का भी लोकार्पण किया गया।

हरिवंश ने कहा, 'उदन्त मार्त्तण्ड' के मास्ट हेड के नीचे एक स्लोगन लिखा होता था, संस्कृत में जिसका अर्थ था - 'सूर्य के प्रकाश के बिना जिस तरह अंधेरा नहीं मिटता, उसी तरह समाचार सेवा के बिना

अज्ञ जन जानकार नहीं बन पाते। इसलिए मैं यह समाचार पत्र प्रकाशन रूपी प्रयत्न कर रहा हूं।

पत्रकारिता का धर्म है कि जैसे सूर्य का प्रकाश अंधेरे को दूर करता है, उसी तरह सूचनाएं या जानकारी लोगों की अज्ञानता को दूर करती है। है कि एक व्यक्ति जिसे समझ में आता है कि भारत की पराधीनता का कारण आर्थिक है, वह आर्थिक सवालों को उठाता है कि हमारी दृष्टि इस पर होनी चाहिए। मैं अपने से पूछता हूं कि क्या आज की हमारी पत्रकारिता इन आर्थिक सवालों पर खासतौर से हिंदी पत्रकारिता कितनी सजग है? उन्होंने कहा, जिस देश से प्रेरित होकर यह पत्रकारिता शुरू हुई 200 वर्षों पहले, आज की पत्रकारिता में वह देश कहां है। हिन्दी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष के अवसर पर हमें आत्ममंथन करना चाहिए।

रामबहादुर राय ने आपातकाल को याद करते हुए कहा, उस दौरान भूमिगत आंदोलन में अगर साहित्य का वितरण अगर कोई कर सका, तो वह आज के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी थे। इस सत्र में सुश्री क्षमा शर्मा ने हिन्दी पत्रकारिता में महिला सहभागिता, हिमांशु शेखर ने पेड न्यूज, दिलीप मंडल ने सोशल मीडिया कितना सोशल, सुश्री खुशबू जैन ने तकनीकी नवाचार और निमिष कपूर ने डिजिटल युग में पर्यावरण पत्रकारिता पर बात की।

इससे पहले, संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'हिन्दी पत्रकारिता के 200 साल : पुनरावलोकन' विषय पर हुआ, जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। उन्होंने कहा, पं. युगल किशोर शुक्ल ने 'उदन्त मार्त्तण्ड' की शुरुआत लोगों को जगाने के बड़े लक्ष्य के साथ की थी। अख़बार प्रतिरोध का काम करते रहे हैं। पत्रकारिता में जो नैतिक साहस था, अब वह खंडित हो रहा है। नैतिकता और प्रतिरोध एक दूसरे से जुड़े हैं। नैतिकता होगी, तभी प्रतिरोध होगा।

इस सत्र में प्रो. कृपाशंकर चौबे ने हिन्दी पत्रकारिता के विकास में अहिन्दीभाषी मनीषियों के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया। डॉ. धनंजय चोपड़ा ने हिन्दी पत्रकारिता और जनआंदोलनों के सम्बंधों की चर्चा करते हुए कहा कि हिन्दी पत्रकारिता ने सभी आंदोलनों को हाथोंहाथ लिया है।

परिसीमन बिल की नई तैयारी में मोदी सरकार

टीएमसी की हार, ओएनओई पर बना बड़ा प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओएनओई यानी एक देश एक चुनाव और परिसीमन विधेयक जल्द ही एक बार फिर संसद में पेश किया जा सकता है। खबर है कि पहली बार परिसीमन बिल पर चोट के बाद भारतीय जनता पार्टी अब बड़ी प्लानिंग कर रही है। हालांकि, इसे लेकर आधिकारिक रूप से कुछ नहीं कहा गया है। खास बात है कि यह घटनाक्रम ऐसे समय पर हो रहा है, जब पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और तमिलनाडु में द्रविड़ मुन्नेत्र कझगम जैसे बड़े क्षेत्रीय दलों को चुनावी हार का सामना करना पड़ा है। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि सरकार 2029 लोकसभा चुनाव से पहले एक देश एक चुनाव बिल पेश कर सकती है। खास बात है कि अप्रैल में संविधान संशोधन बिल फेल होने के बाद अब भाजपा नए सिरे से तैयारी कर रही है। सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि केंद्रीय गृहमंत्रालय नया परिसीमन बिल तैयार कर रहा है।

क्षेत्रीय दल निभाएंगे बड़ी भूमिका

रिपोर्ट के मुताबिक, भाजपा की ये कोशिशें हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव के बाद तेज हुई हैं। सूत्रों ने अखबार को बताया कि तमिलनाडु में हार और कांग्रेस के साथ छोड़ने के बाद डीएमके यानी द्रविड़ मुन्नेत्र कझगम कुछ मुद्दों पर भाजपा के साथ बातचीत के लिए तैयार है। कहा यह भी जा रहा है कि भाजपा की नजरें टीएमसी में जारी गतिविधियों पर भी हैं। ये अटकलें ऐसे समय पर सामने आई हैं, जब बंगाल चुनाव में हार के बाद टीएमसी नेताओं में जमकर मतभेद की खबरें सामने आ रही हैं। वहीं, पार्षद स्तर के नेता इस्तीफा सौंप रहे हैं। रिपोर्ट में बताया गया था कि कुछ सांसद टीएमसी छोड़कर भाजपा में जा सकते हैं।

दो बसों पर 1 लाख फ़ाईन, परमिट में खामी

इंदौर। सोमवार सुबह आरटीओ उड़नदस्ता टीम ने शहर के प्रमुख चौराहों पर सघन वाहन जांच अभियान चलाया। रेडिसन चौराहा, तीन इमली और नेमावर रोड पर हुई कार्रवाई के दौरान 50 से अधिक बसों की गहन जांच की गई। अभियान का नेतृत्व आरटीओ इंदौर एवं उड़नदस्ता प्रभारी ने किया। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी प्रदीप शर्मा ने बताया कि जांच के दौरान ललितपुर से इंदौर तक बिना वैध परमिट यात्रियों का परिवहन कर रही एक बस पकड़ी गई। नियमों के उल्लंघन पर बस संचालक से मौके पर ही 50 हजार रुपए का जुर्माना वसूला गया। एक अन्य बस मुंबई-इंदौर के अस्थायी परमिट पर संचालित पाई गई, जबकि वह नागपुर से इंदौर तक यात्रियों को लेकर आ रही थी। परमिट शर्तों के उल्लंघन पर इस बस पर भी 50 हजार रुपए की कार्रवाई की गई। अभियान के दौरान इमरजेंसी गेट, फायर एक्सटिंग्विशर, फर्स्ट एड बॉक्स, फिटनेस, बीमा और अन्य सुरक्षा मानकों की जांच की गई। दो बसों पर कार्रवाई कर कुल एक लाख रुपए का राजस्व वसूला गया।

ऑटो रोका चालक से मोबाइल छीना

इंदौर। परदेशीपुरा थाना क्षेत्र में एक ऑटो चालक से मोबाइल छीनने का मामला सामने आया है। आरोपी ने पहले सड़क पर टक्कर होने का आरोप लगाकर चालक को रोका और बातचीत के दौरान उसके हाथ से मोबाइल छीनकर फरार हो गया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार सेक्टर-एफ, कुमेड़ी कांकड़ निवासी अमन वर्मा ने शिकायत दर्ज कराई है। अमन ने बताया कि शनिवार को वह अपनी ऑटो लेकर मरी माता क्षेत्र से देवास नाका की ओर जा रहा था। इसी दौरान परदेशीपुरा पेट्रोल पंप के सामने एक युवक ने उसे रोक लिया। युवक एक्टिवा पर सवार था। उसने अमन से कहा कि उसकी ऑटो की टक्कर एक्टिवा से हो गई है और इसी बात को लेकर बहस शुरू कर दी। शिकायत के मुताबिक बहस के दौरान आरोपी ने मौका देखकर अमन के हाथ से मोबाइल फोन झपट लिया। वारदात को अंजाम देने के बाद वह तत्काल एक्टिवा पर सवार होकर वहां से भाग निकला। घटना के बाद अमन सीधे परदेशीपुरा थाने पहुंचा और मामले की शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने लूट का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

आबकारी की दबिश, 145 पाव जब्त

इंदौर। अवैध मदिरा के कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए आबकारी विभाग ने महू नाका और लुनियापुरा क्षेत्र में विशेष अभियान चलाकर कार्रवाई की। सहायक आयुक्त आबकारी अभिषेक तिवारी के निर्देश तथा कंट्रोलर देवेश चतुर्वेदी एवं डिप्टी कंट्रोलर मनोज अग्रवाल के मार्गदर्शन में वृत्त बम्बई बाजार की टीम ने दबिश देकर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। कार्रवाई के दौरान अमित पिता लालाराम साहू और हेमू पिता नंदलाल को अवैध शराब के साथ पकड़ा गया। टीम ने आरोपियों के कब्जे से 145 पाव देशी मदिरा, जो करीब 26.1 बल्क लीटर है, जब्त की। साथ ही एक बिना नंबर की एक्सेस स्कूटर भी बरामद की गई। जब्त मदिरा और वाहन की कुल अनुमानित बाजार कीमत 78 हजार 500 रुपए बताई गई है। दोनों आरोपियों के विरुद्ध धारा 34(1)(क) के तहत प्रकरण दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

ट्रैक्टर से कुचलकर किसान की मौत

इंदौर। खुडैल थाना क्षेत्र में शनिवार को दो अलग-अलग हादसों ने क्षेत्र में शोक की लहर फैला दी। एक घटना में खेत पर काम कर रहे किसान की ट्रैक्टर दुर्घटना में मौत हो गई, जबकि दूसरी घटना में अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की जान चली गई। पुलिस ने दोनों मामलों में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार निरंजनपुर निवासी 58 वर्षीय केदार पिता कुंवर का गोगाखेड़ी क्षेत्र में खेत है। वे अपने खेत पर ट्रैक्टर से कृषि कार्य कर रहे थे। इसी दौरान अचानक संतुलन बिगड़ने से ट्रैक्टर से गिर पड़े। गिरते ही ट्रैक्टर का पहिया उनके ऊपर से गुजर गया, जिससे उन्हें गंभीर चोटें आईं। खेत में मौजूद लोगों ने तुरंत उन्हें अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक का एक बेटा है, जो किसानी का कार्य करता है। दूसरे मामले में खुडैल थाना क्षेत्र के देवगुराड़िया इलाके में भी सड़क हादसा हुआ। बड़गांव आगर निवासी 23 वर्षीय प्रीतम सिंह पिता ओमसिंह बाइक से कहीं जा रहे थे। इसी दौरान किसी अज्ञात वाहन ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में प्रीतम सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें बचाने का प्रयास किया गया, लेकिन उनकी मौत हो गई। घटना के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया।

लुटेरे से मंगलसूत्र और एक्टिवा बरामद

इंदौर। राजेन्द्र नगर पुलिस ने चेन स्नेचिंग के आरोपी से मंगलसूत्र तथा एक्टिवा वाहन बरामद की है। फरियादिया ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि 18 मई की रात 9.30 बजे वह वीआईपी परस्पर नगर स्थित दर्शन कैफे क्षेत्र में टहल रही थीं। इसी दौरान एक्टिवा से आए अज्ञात युवक ने मंगलसूत्र छीन लिया। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे खंगाले और संदिग्धों की पहचान के प्रयास शुरू किए। मुखबिर की सूचना पर आरोपी हितेश पिता प्रकाश पंजाबी निवासी सुदामा नगर को गिरफ्तार किया। पुलिस द्वारा आरोपी का आपराधिक रिकॉर्ड खंगालने पर उसके विरुद्ध इंदौर के थानों में 20 प्रकरण दर्ज होना पाए गए हैं।

18 जून के बाद इंदौर पहुंचेगा मानसून प्री-मानसून से सुहाने मौसम के आसार

तेज हवा, गरज-चमक के साथ वर्षा होगी, कई जिलों में भारी बारिश

इंदौर। इंदौर सहित मध्य प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में इन दिनों प्री-मानसून गतिविधियां सक्रिय हैं। बादलों की आवाजाही, बूंदाबांदी और तेज हवाओं के कारण मौसम में बदलाव महसूस किया जा रहा है। इसी का असर है कि पिछले कुछ दिनों से भीषण गर्मी से जूझ रहे इंदौर समेत प्रदेश के कई शहरों को राहत मिली है। मौसम विभाग के अनुसार इस वर्ष देश में सामान्य से कम वर्षा होने की आशंका जताई गई है। दूसरी ओर मानसून की रफ्तार भी अपेक्षाकृत धीमी बनी हुई है। अभी तक मानसून केरल तट तक नहीं पहुंच पाया है। सामान्य तौर पर इंदौर में मानसून 14 से 15 जून के बीच दस्तक देता है, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए इस बार इसके 18 जून के बाद शहर पहुंचने की संभावना है।

मौसम में बदलाव से पारा गिरा

पिछले दो दिनों से इंदौर में बादल छाने, हल्की वर्षा और तेज हवाएं चलने से तापमान में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। बीते पांच दिनों के दौरान शहर के अधिकतम तापमान में 5.5 डिग्री सेल्सियस की कमी आई है, जिससे लोगों को गर्मी से काफी राहत मिली है। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार इंदौर शहर और पूरे संभाग में अगले चार से पांच दिनों तक गरज-चमक के साथ वर्षा का दौर जारी रह सकता है। संभाग के आलीराजपुर, धार, बड़वानी और झाबुआ जिलों में कहीं-कहीं तेज वर्षा होने की संभावना भी जताई गई है। इस दौरान इंदौर में 50 से 70 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं।

वर्षा संबंधी गतिविधियां

मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश के ऊपर एक पश्चिमी विक्षोभ चक्रवाती परिसंचरण के रूप में सक्रिय है। इसी प्रणाली के प्रभाव से इंदौर सहित प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा संबंधी गतिविधियां बनी हुई हैं। रविवार को इंदौर का अधिकतम तापमान 36.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 4 डिग्री सेल्सियस कम रहा। वहीं न्यूनतम तापमान 22.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से 3 डिग्री सेल्सियस कम था। मौसम में आई इस नरमी ने लोगों को तपिश से राहत पहुंचाई है।

महिलाओं की सुरक्षा पर पुलिस की नजर, रात में बिना खाकी निकली

राजेंद्र नगर, राऊ में कार्रवाई, संवेदनशील इलाकों में निरीक्षण

इंदौर। महिलाओं की सुरक्षा व्यवस्था को परखने और संवेदनशील क्षेत्रों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए पुलिस ने शुक्रवार देर रात विशेष अभियान चलाया। थाना राजेंद्र नगर और राऊ पुलिस की संयुक्त टीम ने सादे कपड़ों में विभिन्न इलाकों का भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। अभियान के दौरान महिला पुलिसकर्मियों को आम नागरिकों की तरह क्षेत्र में भेजा गया, ताकि हालात का प्रत्यक्ष आकलन किया जा सके।

पुलिस उपायुक्त जोन-1 नरेंद्र सिंह रावत के मार्गदर्शन में महिला अधिकारियों और पुलिसकर्मियों की टीम ने केशरबाग ब्रिज, सिलिकॉन सिटी और स्टार सिटी सहित कई क्षेत्रों में देर रात तक निगरानी की। करीब 3 से 4 घंटे तक चले इस अभियान में सार्वजनिक स्थानों, मार्गों और आसपास के माहौल पर विशेष नजर रखी गई। निरीक्षण के दौरान महिलाओं के साथ छेड़छाड़, अभद्रता या अन्य किसी प्रकार की सुरक्षा संबंधी घटना सामने नहीं आई। पुलिस अधिकारियों ने इसे संतोषजनक स्थिति बताते हुए कहा कि नागरिकों, विशेषकर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इस तरह के अभियान आगे भी नियमित रूप से संचालित किए जाएंगे।

बच्चों की सुरक्षा के प्रति जागरूक

उधर, जोन-2 के पुलिस उपायुक्त अमन सिंह राठौर ने बच्चों की सुरक्षा और जागरूकता से जुड़े अभियान के तहत सी-21 मॉल और मल्हार मेगा मॉल का दौरा किया। उन्होंने वहां मौजूद बच्चों से बातचीत कर उनके मोबाइल नंबर और सुरक्षा संबंधी जानकारी के बारे में प्रश्न पूछे। सही उत्तर देने वाले बच्चों को प्रोत्साहन के रूप में चॉकलेट भी दी गई।

बदमाशों की तलाश में अभियान- देर रात पुलिस ने कई क्षेत्रों में सघन जांच अभियान भी चलाया। संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान और जांच की गई, वहीं अपराधियों की धरपकड़ के उद्देश्य से विशेष निगरानी और तलाशी अभियान संचालित किया गया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि महिलाओं, बच्चों और आम नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए ऐसे अभियान लगातार जारी रहेंगे।

आबादी और हाईवे के नीचे आकार ले रही रेल सुरंग, जुलाई तक पूरी होगी

इंदौर-दाहोद रेल परियोजना का चुनौतीपूर्ण हिस्सा अंतिम चरण में

इंदौर। इंदौर-दाहोद रेल परियोजना के तहत पीथमपुर के पास बन रही रेल सुरंग का निर्माण अब अंतिम चरण में पहुंच गया है। बन चौपाटी से नूतन नगर के बीच लगभग 2956 मीटर लंबी यह सुरंग परियोजना का सबसे महत्वपूर्ण और तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण हिस्सा मानी जा रही है। इसकी खासियत यह है कि सुरंग के ऊपर रिहायशी क्षेत्र और आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग मौजूद है, जबकि नीचे जमीन के भीतर रेल मार्ग तैयार किया जा रहा है। सुरंग के भीतर इन दिनों तेजी से निर्माण कार्य चल रहा है। कई हिस्सों में कंक्रीट परत का काम पूरा हो चुका है, जबकि लगभग 1000 मीटर क्षेत्र में रेल पटरियां भी बिछा दी गई हैं। यहां पारंपरिक गिट्टी के स्थान पर कंक्रीट आधार पर पटरियां डाली जा रही हैं, जिससे रेल संचालन अधिक सुरक्षित और स्थिर रहेगा। निर्माण के दौरान अभियंताओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती ऊपर की सतह को सुरक्षित रखते हुए नीचे सुरंग तैयार करना था। चट्टानी क्षेत्र, पानी के रिसाव और लगातार चल रहे यातायात के बीच काम को सावधानीपूर्वक आगे बढ़ाया गया। अब अधिकांश तकनीकी चुनौतियां दूर हो चुकी हैं और परियोजना निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। रेलवे अधिकारियों के अनुसार जुलाई 2026 तक सुरंग निर्माण पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके बाद इस खंड में परीक्षण संचालन शुरू किया जाएगा। साथ ही संकेत व्यवस्था और विद्युत संबंधी कार्य भी समानांतर रूप से जारी हैं।

पीथमपुर को मिलेगा बड़ा लाभ

सुरंग तैयार होने के बाद औद्योगिक नगरी पीथमपुर पहली बार सीधे रेल संपर्क से जुड़ जाएगी। इससे माल परिवहन में समय और लागत दोनों की बचत होगी। उद्योगों को बेहतर सुविधाएं मिलने के साथ क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर भी विकसित होने की उम्मीद है। रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी के अनुसार पीथमपुर के पास लगभग 2956 मीटर लंबी सुरंग का निर्माण तेजी से आगे बढ़ रहा है। करीब 1000 मीटर हिस्से में रेल पटरियां बिछाई जा चुकी हैं। संकेत व्यवस्था और विद्युत कार्य भी जारी है तथा जुलाई तक सुरंग का कार्य पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

24 घंटे में 3 मौत, अलग-अलग हालात में युवाओं ने उठाया आत्मघाती कदम

छात्र, चालक और युवक की मौत से सनसनी, पुलिस जांच में जुटी

इंदौर। शहर में अलग-अलग थाना क्षेत्रों में 24 घंटे के भीतर आत्महत्या के तीन मामलों ने लोगों को झकझोर दिया। एक और पढ़ाई कर रहे छात्र ने छात्रावास में फांसी लगाकर जान दे दी, वहीं एक चालक ने घर में फंदा लगा लिया। तीसरे मामले में एक युवक ने जहरीला पदार्थ खाकर जीवन समाप्त कर लिया। पुलिस तीनों घटनाओं के कारणों की जांच कर रही है। भंवरकुआं क्षेत्र स्थित एक छात्रावास में रहकर पढ़ाई कर रहे 21 वर्षीय राजू पुत्र दिनेश निनामा भील ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। राजू ग्राम कवटी, थाना महू का निवासी था और एक निजी महाविद्यालय में बीए प्रथम वर्ष का छात्र था। वह करीब एक माह पहले ही छात्रावास में रहने आया था। शनिवार को जब वह काफी देर तक कमरे से बाहर नहीं निकला तो छात्रावास संचालक सिद्धांत को संदेह हुआ। दरवाजा खुलवाने पर राजू का शव पंखे से लटका मिला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को परीक्षण के लिए भेज दिया। परिजनों के अनुसार 27 मई की रात पुलिस की नशे में वाहन चलाने के विरुद्ध कार्रवाई के दौरान उसकी मोटरसाइकिल जब्त कर ली गई थी। मृतक के भाई शुभम ने बताया कि संभवतः वह यह बात परिवार को नहीं बता पा रहा था और इसी कारण मानसिक दबाव में था। पुलिस इस पहलू सहित अन्य कारणों की भी जांच कर रही है।

नौकरी छोड़ने के बाद फंदा

दूसरी घटना परदेशीपुरा क्षेत्र की है, जहां 30 वर्षीय मयंक पुत्र रवि तिवारी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। रविवार सुबह परिजनों ने उसे घर में फंदे पर लटका देखा और पुलिस को सूचना दी। पुलिस के अनुसार मयंक पेशे से चालक था और एक बेकरी का वाहन चलाता था। उसने कुछ समय पहले नौकरी छोड़ दी थी। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि घटना से एक दिन पहले वह शराब पीकर घर लौटा था। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दुष्कर्म केस से परेशान

तीसरी घटना हीरा नगर क्षेत्र से सामने आई, जहां 38 वर्षीय विकास पुत्र नंदू ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस के अनुसार उसने आत्मघाती कदम उठाने से पहले कई लोगों को मैसेज भेजे और एक वीडियो भी बनाया, जिसे बाद में व्हाट्सएप पर वायरल किया। जानकारी के मुताबिक विकास ने उस युवती को भी संदेश भेजा था, जिसने उसके खिलाफ दुष्कर्म का प्रकरण दर्ज कराया था। युवती से जुड़े अन्य लोगों और एक अधिवक्ता को भी उसने संदेश भेजे। इसके बाद उसने कनकेश्वरी मैदान क्षेत्र में जहरीला पदार्थ खा लिया। उसे अस्पताल ले जाया गया, लेकिन चिकित्सक उसे नहीं बचा सके। विकास स्वयं को लगातार प्रताड़ित महसूस कर रहा था। उसने अपने मैसेज में युवती, उसके साथी मुकेश महेले तथा सेंधवा के कुछ पुलिसकर्मियों पर भी आरोप लगाए।

फौजी होने का दावा कर दंपत्ति से मारपीट, डिवाइडर में घुसी कार

महिला बाउंसर और पति को रोका, लोगों से भी झड़प की

इंदौर। विजय नगर थाना क्षेत्र में शनिवार रात कार सवार 5 युवकों ने खुद को फौजी बताते हुए एक महिला बाउंसर और उसके पति के साथ मारपीट कर दी। घटना के दौरान दंपती को बचाने पहुंचे लोगों से भी युवकों की कहासुनी और धक्का-मुक्की हुई। आरोप है कि मौके से भागते समय युवकों ने भीड़ की ओर कार दौड़ाई, जिससे अफरा-तफरी मच गई। बाद में उनकी कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर में जा घुसी। विजय नगर थाना प्रभारी चंद्रकांत पटेल के अनुसार महिला बाउंसर रिमझिम बारोसा ने शिकायत में बताया कि वह शनिवार रात अपने पति शिखर के साथ महालक्ष्मी नगर में लगे मेले से घर लौट रही थीं। इसी दौरान बॉम्बे अस्पताल के पास एक कार में सवार युवकों ने उनकी गाड़ी को कट मार दिया। जब दंपती ने इस पर आपत्ति जताई तो कार सवार युवक विवाद करने लगे। कुछ दूरी पर सत्य साईं चौराहे के पास उन्होंने दंपती का रास्ता रोक लिया और मारपीट शुरू कर दी।

बीच-बचाव किया, उनसे भी उलझे

घटना देखकर आसपास मौजूद लोग दंपती की मदद के लिए आगे आए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार युवकों और भीड़ के बीच भी तीखी झड़प हुई। हालात बिगड़ते देख कार सवार युवक वहां से निकलने की कोशिश करने लगे। स्थानीय लोगों का आरोप है कि भागते समय युवकों ने कार तेज गति से भीड़ की ओर बढ़ाई और लोगों को टक्कर मारने का प्रयास किया। इस दौरान कुछ वाहनों को भी नुकसान पहुंचा और उनके शीशे टूट गए।

डिवाइडर में घुसी कार

हंगामे के बीच कार का संतुलन बिगड़ गया और वह डिवाइडर में जा घुसी। घटना के बाद युवक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गए। बाद में क्रेन की सहायता से कार को हटाया गया। पुलिस ने वाहन जब्त कर थाने पहुंचा दिया है। पुलिस का कहना है कि मामले की विस्तृत जांच की जा रही है। कार में सवार युवक वास्तव में सैन्यकर्मी हैं या नहीं, इसकी भी पुष्टि की जा रही है। दोनों पक्षों के बयान लिए जा रहे हैं। जांच पूरी होने के बाद तथ्य सामने आने पर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

बेटे, बेटी की शिक्षा में भेदभाव स्वीकार नहीं, हाई कोर्ट ने बढ़ाया भरण-पोषण

नाबालिग बेटी के अधिकार पर टिप्पणी, 10,000 महीने देने का आदेश

इंदौर। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण निर्णय में स्पष्ट किया है कि पिता बेटे और बेटी की शिक्षा पर होने वाले खर्च में भेदभाव नहीं कर सकता। न्यायालय ने कहा कि यदि पिता अपने बालिग बेटे की तकनीकी शिक्षा पर पर्याप्त खर्च कर रहा है, तो वह नाबालिग बेटी की पढ़ाई और भरण-पोषण की जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकता। न्यायमूर्ति गजेंद्र सिंह की एकलपीठ ने यह आदेश पत्नी और नाबालिग बेटी द्वारा दायर पुनरीक्षण याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया। याचिका में परिवार न्यायालय के उस आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें पत्नी को 5000 रुपये और नाबालिग बेटी को 2000 रुपये प्रतिमाह भरण-पोषण देने का निर्देश दिया गया था। मामले के अनुसार पति-पत्नी का विवाह दिसंबर 2001 में हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार हुआ था। उनके दो बच्चे हैं, जिनमें बड़ा बेटा अब बालिग हो चुका है, जबकि नाबालिग बेटी अपनी मां के साथ रहती है। पत्नी और बेटी ने वर्ष 2024 में दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत आवेदन प्रस्तुत कर पति पर प्रताड़ना और आर्थिक उपेक्षा के आरोप लगाए थे। उनका कहना था कि पति की मासिक आय लगभग 80 हजार रुपये है तथा अचल संपत्तियों से उसे प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख रुपये की अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है।

पढ़ाई और उपचार का तर्क

प्रतिवादी पक्ष ने न्यायालय में कहा कि वह अपने बड़े बेटे की तकनीकी शिक्षा का खर्च वहन कर रहा है। साथ ही पत्नी के हृदय रोग के उपचार पर भी राशि खर्च कर रहा है। यह भी बताया गया कि वह अपने वृद्ध माता-पिता की देखभाल की जिम्मेदारी निभा रहा है। परिवार न्यायालय ने इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए पत्नी और बेटी के पक्ष में भरण-पोषण राशि निर्धारित की थी, लेकिन उनकी मांग से कम राशि स्वीकृत की थी।

बेटी की पढ़ाई नजरअंदाज नहीं

उच्च न्यायालय ने सुनवाई के दौरान पाया कि नाबालिग बेटी 9वीं कक्षा में अध्ययनरत है। स्कूल शुल्क के अतिरिक्त पिता उसकी शिक्षा और अन्य आवश्यकताओं के लिए कोई अलग राशि नहीं दे रहा था। न्यायालय ने कहा कि विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों की आवश्यकताओं को माता-पिता की इच्छा पर नहीं छोड़ा जा सकता। यदि पिता अपनी इच्छा से बेटे की पढ़ाई का खर्च उठा रहा है, तो वह पत्नी और बेटी के भरण-पोषण की कानूनी जिम्मेदारी कम नहीं कर सकता। पीठ ने यह भी माना कि परिवार न्यायालय ने यह तथ्य पर्याप्त रूप से नहीं देखा कि प्रतिवादी के पिता के पास कृषि भूमि से आय का स्रोत है और उन्हें पेंशन भी प्राप्त होती है। न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि बेटे और बेटी की शिक्षा के खर्च में भेदभाव की अनुमति नहीं दी जा सकती। उच्च न्यायालय ने परिवार न्यायालय के आदेश में संशोधन करते हुए पत्नी के लिए भरण-पोषण राशि 5000 रुपये से बढ़ाकर 7500 रुपये प्रतिमाह तथा नाबालिग बेटी के लिए 2000 रुपये से बढ़ाकर 10000 रुपये प्रतिमाह निर्धारित कर दी।

संपादकीय

बंगाल: यह हिंसा अस्वीकार्य है

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव नतीजे आने के करीब महीने भर बाद भी जिस तरह की हिंसा हो रही है, उसके लिए दोषी जो हो, लेकिन उसे किसी हाल में जायज नहीं ठहराया जा सकता। क्योंकि तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और सांसद अभिषेक बनर्जी पर सोनारपुर में जिस तरह जानलेवा हमला हुआ, उसके बाद राज्य सत्तासीन भाजपा संदेह के घेरे में है। यह मामला ठंडा भी नहीं हुआ था कि टीएमसी के एक और सांसद कल्याण बनर्जी पर घातक हमला किया गया। अभिषेक चुनाव के दौरान हुई हिंसा में मारे गए उनकी पार्टी के कार्यकर्ता के परिजनों को सांत्वना देने गए थे तो कल्याण बनर्जी गिरफ्तार पार्टी कार्यकर्ताओं को छुड़ाने के लिए थाने में ज्ञापन देने के लिए गए थे। अभिषेक पर हमले को देश में भी तीखी प्रतिक्रिया हुई है। तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरोप लगाया है कि बीजेपी लोकतंत्र की हत्या कर रही है। उन्होंने घायल अभिषेक के इलाज में एक अस्पताल द्वारा हीलाहवाले की भी कड़ी आलोचना की। विपक्ष के सभी नेताओं ने अभिषेक पर हमले की कड़ी निंदा की है। अभिषेक बनर्जी ने भी कहा है कि वह केवल जनता के सामने ही झुकेंगे, सत्ता के आगे नहीं। उन्होंने कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद भी दिया।

आज मैं राजनीतिक हिंसा और राज्य प्रायोजित आतंकवाद का शिकार हूं, जिसे उन लोगों ने बढ़ावा दिया है जो खुद को राष्ट्रवाद का संरक्षक बताते हैं। उधर भाजपा परोक्ष रूप से इन हमलों को जायज ठहराने की कोशिश कर रही है। उसका कहना है कि ये डेढ़ दशक के ममता राज के प्रति लोगों में भरे गुस्से की सार्वजनिक अभिव्यक्ति है। पार्टी का यह भी कहना है कि हमला करने वाले भाजपा कार्यकर्ता न होकर आम लोग हैं, जो अब खुलकर अपनी नाराजी जता रहे हैं। शुरू में तो भाजपा पूरे मामले पर या तो खामोश रही या लीपापोती करती रही, लेकिन मामला राष्ट्रीय स्तर चर्चा का विषय बन गया तो पार्टी ने इस तरह के हमलों की निंदा करते हुए दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की बात कही। अभिषेक बनर्जी पर हमला करने वाले पांच लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार भी किया है। भाजपा नेताओं का कहना है कि टीएमएससी ने बीते डेढ़ दशक में जो बोया है, उसी का काट रही है। अभिषेक और कल्याण पर हमला करने वाले कौन हैं, इसको लेकर भी आरोप-प्रत्यारोप हो रहे हैं? टीएमएसी इसके पीछे भाजपा कार्यकर्ताओं का हाथ बता रहा है कि बीजेपी का कहना है कि टीएमसी के नाराज कार्यकर्ता ही अपने नेताओं पर हमले कर रहे हैं। पुलिस ने भी कहा है कि अभिषेक पर हमला करवाने वाला उनका करीबी एक पुराना टीएमसी कार्यकर्ता लवली मैत्रा ही है। वैसे यह भी सच है कि बंगाल में सारी राजनीति सत्ता के इर्द-गिर्द ही घूमती है। एक समय था जब तमाम राजनेता ममता के चक्कर लगाते थे। जबकि आज तमाम नेता और कार्यकर्ता उनसे पल्ला झाड़ने में लगे हैं। यहां तक कि टीएमसी द्वारा राज्यभर में विरोध प्रदर्शन के लिए बुलाई गई बैठक में 80 में से मात्र 20 विधायक ही पहुंचे। बाकी ने कन्नी काट ली। इसका सीधा अर्थ यही है कि ममता की पार्टी पर अब पहले सी पकड़ नहीं रह गई है। इन तमाम बातों के बावजूद विपक्षी नेताओं पर हमले सही नहीं माने जा सकते। वर्तमान में सत्ताधीशों की जिम्मेदारी है कि वो सभी को सुरक्षा मुहैया कराए और राज्य में अमन चैन का माहौल बनाए रखे।

प्रश्नपत्र लीक: क्या सुरक्षित हैं हमारी परीक्षाएँ?

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

देश में इन दिनों एक बार फिर राष्ट्रीय परीक्षाओं की विश्वसनीयता चर्चा के केंद्र में है। पहले नीट-यूजी के प्रश्नपत्र लीक और परीक्षा प्रबंधन को लेकर उठे विवादों ने लाखों विद्यार्थियों और अभिभावकों को चिंतित किया था। इसके बाद सीबीएसई की डिजिटल मूल्यांकन प्रणाली में कथित तकनीकी गड़बड़ियों की खबरें सामने आईं। अब विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए आयोजित की जाने वाली सीयूईटी-यूजी परीक्षा में तकनीकी समस्याओं और परीक्षा केंद्रों पर अव्यवस्थाओं ने इस चिंता को और गहरा कर दिया है। इन घटनाओं ने केवल कुछ परीक्षाओं की निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाया है, बल्कि उस पूरे तंत्र की विश्वसनीयता को चुनौती दी है, जिस पर करोड़ों युवाओं के सपने और भविष्य आधारित हैं। आज प्रश्न केवल यह नहीं है कि किसी परीक्षा में तकनीकी त्रुटि क्यों हुई, बल्कि यह है कि क्या भारत की परीक्षा व्यवस्था तेजी से बदलती तकनीकी दुनिया के अनुरूप स्वयं को पर्याप्त रूप से तैयार कर पा रही है।

भारत को अक्सर युवाओं का देश कहा जाता है। यहां हर वर्ष करोड़ों विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेते हैं। इन परीक्षाओं का महत्व केवल नौकरी या प्रवेश तक सीमित नहीं होता, बल्कि ये सामाजिक गतिशीलता, अवसरों की समानता और प्रतिभा के सम्मान का माध्यम भी होती हैं। ऐसे में जब किसी परीक्षा की निष्पक्षता पर संदेह उत्पन्न होता है, तो उसका प्रभाव केवल परिणामों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह युवाओं के मनोबल, व्यवस्था के प्रति विश्वास और लोकतांत्रिक संस्थाओं की साख पर भी पड़ता है। यही कारण है कि हाल के वर्षों में बार-बार सामने आ रही परीक्षा संबंधी समस्याएं एक गंभीर राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गई हैं।

राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) की स्थापना वर्ष 2017 में इस उद्देश्य से की गई थी कि देश की प्रमुख प्रवेश परीक्षाओं का संचालन अधिक पेशेवर, पारदर्शी और त्रुटिरहित ढंग से किया जा सके। इसके माध्यम से जेईई, नीट, सीयूईटी जैसी महत्वपूर्ण परीक्षाओं को एक सुव्यवस्थित ढांचे के अंतर्गत लाने का प्रयास किया गया। प्रारंभिक वर्षों में यह व्यवस्था अपेक्षाकृत सफल भी दिखाई दी। डिजिटल तकनीक के उपयोग, ऑनलाइन परीक्षाओं और केंद्रीकृत प्रबंधन ने प्रक्रिया को आधुनिक बनाने में मदद की। किंतु समय के साथ अनेक विवादों और तकनीकी चुनौतियों ने यह संकेत दिया कि केवल संस्थागत ढांचा बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसकी कार्यकुशलता और जवाबदेही भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

सीयूईटी-यूजी परीक्षा में सामने आई तकनीकी समस्याएं इसी व्यापक संकट का हिस्सा हैं। कई केंद्रों पर सर्वर संबंधी दिक्कतें, कंप्यूटरों की खराबी, लॉगिन में विलंब तथा परीक्षा संचालन में बाधाएं देखने को मिलीं। डिजिटल परीक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य मानवीय त्रुटियों को कम करना और प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी बनाना था, लेकिन जब तकनीक स्वयं समस्या का कारण बन जाए तो

विद्यार्थियों के लिए यह दोहरी चुनौती बन जाती है। परीक्षा के दौरान कुछ मिनटों का व्यवधान भी किसी अभ्यर्थी के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या तकनीकी अवसंरचना को पर्याप्त रूप से परखा और मजबूत किया गया था।

समस्या का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम परीक्षा के बढ़ते डिजिटलीकरण से जुड़ा है। डिजिटल तकनीक निस्संदेह आधुनिक परीक्षा प्रणाली की आवश्यकता है, किंतु इसके साथ अनेक जोखिम भी जुड़े हैं। साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण, सर्वर क्षमता, नेटवर्क स्थिरता और आपदा प्रबंधन जैसी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं। भारत जैसे विशाल देश में, जहां लाखों विद्यार्थी एक साथ परीक्षा देते हैं, वहां किसी भी तकनीकी विफलता का प्रभाव बहुत व्यापक हो सकता है। इसलिए केवल तकनीक अपनाना पर्याप्त नहीं है; उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण उसका सुरक्षित, विश्वसनीय और निरंतर परीक्षण किया हुआ होना है।

परीक्षा व्यवस्था के संकट का एक मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है, जिस पर अपेक्षाकृत कम चर्चा होती है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थी वर्षों तक कठिन परिश्रम करते हैं। वे अपनी पारिवारिक परिस्थितियों, आर्थिक सीमाओं और व्यक्तिगत संघर्षों के बीच सफलता का सपना देखते हैं। जब परीक्षा में किसी प्रकार की अनियमितता या तकनीकी गड़बड़ी सामने आती है, तो सबसे अधिक आघात इन्हीं विद्यार्थियों को पहुंचता है। उन्हें लगता है कि उनकी मेहनत का मूल्यांकन निष्पक्ष रूप से नहीं हो पाया। यह भावना निराशा, हताशा और व्यवस्था के प्रति अविश्वास को जन्म देती है। कई बार यह मानसिक स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव डालती है।

इस समस्या का सामाजिक आयाम भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत में शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक उन्नति का सबसे बड़ा माध्यम माना जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों, छोटे कस्बों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लाखों विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से अपने जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं। यदि परीक्षा प्रणाली की निष्पक्षता संदिग्ध हो जाए, तो अवसरों की समानता का सिद्धांत कमजोर पड़ने लगता है। तब यह धारणा बनने लगती है कि सफलता केवल प्रतिभा और परिश्रम से नहीं, बल्कि व्यवस्था की कमियों या संयोगों से भी प्रभावित हो सकती है। यह स्थिति किसी भी लोकतांत्रिक समाज के लिए चिंताजनक है।

परीक्षा संबंधी विवादों ने संस्थागत जवाबदेही पर भी गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में सार्वजनिक संस्थाओं की विश्वसनीयता उनकी पारदर्शिता और उत्तरदायित्व पर निर्भर करती है। यदि बार-बार एक जैसी समस्याएं सामने आती हैं, तो यह केवल तकनीकी त्रुटि नहीं रह जाती, बल्कि प्रबंधन और निगरानी की विफलता का संकेत बन जाती है। इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक विवाद की स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच हो, दोषियों की पहचान की जाए और सुधारात्मक कदमों को समयबद्ध ढंग से लागू किया जाए। केवल आश्वासन देने से विश्वास बहाल नहीं होगा; उसके लिए ठोस कार्रवाई आवश्यक है।

हाल ही में गठित विभिन्न विशेषज्ञ समितियों और न्यायिक हस्तक्षेपों ने भी इस बात को रेखांकित किया है कि परीक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों की आवश्यकता है। सुधार का अर्थ केवल नई तकनीक लाना नहीं है, बल्कि एक ऐसी समग्र व्यवस्था विकसित करना है जिसमें तकनीकी दक्षता, प्रशासनिक जवाबदेही और मानवीय संवेदनशीलता का संतुलन हो। परीक्षा केंद्रों के चयन से लेकर तकनीकी ऑडिट, साइबर सुरक्षा परीक्षण, कर्मचारियों के प्रशिक्षण और शिकायत निवारण तंत्र तक हर स्तर पर सुधार की आवश्यकता है। इसके साथ ही परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ाना भी अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों को यह जानने का अधिकार है कि परीक्षा प्रक्रिया कैसे संचालित होती है, सुरक्षा उपाय क्या हैं और किसी समस्या की स्थिति में उनके अधिकार क्या होंगे। पारदर्शिता न केवल विश्वास बढ़ाती है, बल्कि संस्थाओं को अधिक उत्तरदायी भी बनाती है। सूचना का अभाव अक्सर अफवाहों और संदेहों को जन्म देता है, जो किसी भी परीक्षा की साख को नुकसान पहुंचा सकता है। एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष संघीय सहयोग का है। शिक्षा और परीक्षा प्रबंधन केवल किसी एक संस्था की जिम्मेदारी नहीं है। इसमें केंद्र सरकार, राज्य सरकारें, विश्वविद्यालय, विद्यालय, तकनीकी सेवा प्रदाता और सुरक्षा एजेंसियां सभी शामिल होते हैं। इसलिए सुधारों को भी समन्वित दृष्टिकोण के साथ लागू करने की आवश्यकता है। यदि किसी एक स्तर पर कमजोरी रह जाए तो पूरी प्रणाली प्रभावित हो सकती है।

आज जब भारत ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है, तब उसकी परीक्षा प्रणाली का मजबूत और विश्वसनीय होना अनिवार्य है। दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देश में शिक्षा और प्रतिभा का मूल्यांकन केवल प्रशासनिक कार्य नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि प्रतिभाशाली युवाओं का विश्वास व्यवस्था से उठने लगे, तो इसका प्रभाव दीर्घकालिक और व्यापक होगा।

नीट, सीबीएसई या सीयूईटी जैसे विवाद केवल अलग-अलग घटनाएं नहीं हैं। ये उस गहरे संस्थागत संकट के संकेत हैं, जो परीक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों पर मौजूद कमजोरियों को उजागर कर रहे हैं। आवश्यकता केवल तात्कालिक संकट प्रबंधन की नहीं, बल्कि दीर्घकालिक संरचनात्मक सुधारों की है। ऐसी परीक्षा व्यवस्था का निर्माण करना होगा जिसमें तकनीक सहायक बने, बाधा नहीं; प्रशासन जवाबदेह हो, उदासीन नहीं; और सबसे बढ़कर, विद्यार्थियों को यह विश्वास हो कि उनकी सफलता का आधार केवल उनकी प्रतिभा, परिश्रम और योग्यता है। जब यह विश्वास स्थापित होगा, तभी परीक्षा वास्तव में ज्ञान और क्षमता की परीक्षा होगी, न कि व्यवस्था पर भरोसे की।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आगमन : जीवन की नई दहलीज़ पर मानव

तकनीक

डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट

लेखक स्तंभकार हैं।

मानव सभ्यता का इतिहास निरंतर परिवर्तन का इतिहास है। कभी पत्थरों को घिसकर आग जलाने वाला मनुष्य आज तारों के पार झाँकने लगा है। पहिए के आविष्कार से लेकर इंटरनेट तक, हर नई खोज ने जीवन को नया आकार दिया है। किंतु इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में जिस तकनीक ने सबसे अधिक चर्चा, आश्चर्य और संभावनाएँ जगाई हैं, वह है—कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात् आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.)। यह केवल एक तकनीक नहीं, बल्कि मानव बुद्धि के विस्तार का नया अध्याय है। जिस प्रकार कभी बिजली ने अंधकार को चुनौती दी थी, उसी प्रकार ए.आई. ने ज्ञान, श्रम और सृजन की पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देना आरंभ कर दिया है। आज हम ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ मशीनें केवल आदेशों का पालन नहीं करतीं, बल्कि सीखती हैं, समझती हैं और अनेक बार निर्णय भी लेती हैं।

परिवर्तन की दस्तक : जब मशीनें सोचने लगीं

कुछ दशक पहले तक कंप्यूटर केवल गणनाओं के उपकरण थे। वे उतना ही करते थे जितना उन्हें बताया जाता था। किंतु ए.आई. ने मशीनों को अनुभव से सीखने की क्षमता प्रदान की। अब वे भाषा समझ सकती हैं, चित्र पहचान सकती हैं, संगीत रच सकती हैं और प्रश्नों के उत्तर भी दे सकती हैं। यह परिवर्तन किसी क्रांति से कम नहीं है। ऐसा लगता है मानो मानव ने अपनी बुद्धि का एक अंश मशीनों में स्थापित कर दिया हो। आज जब कोई छात्र कठिन विषय को समझने के लिए ए.आई. की सहायता लेता है, कोई चिकित्सक रोग की पहचान में उसका उपयोग करता है, या कोई लेखक विचारों को व्यवस्थित करने के लिए उससे संवाद करता है, तब स्पष्ट दिखाई देता है कि ए.आई. हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है।

ज्ञान का नया साथी

ज्ञान की दुनिया में ए.आई. ने एक अद्भुत परिवर्तन किया है। पहले जानकारी खोजने के लिए पुस्तकालयों की अलमारियाँ खंगालनी पड़ती थीं, फिर इंटरनेट के विशाल समुद्र में गोते लगाने पड़ते थे। आज ए.आई. उस ज्ञान को व्यवस्थित रूप में हमारे सामने प्रस्तुत कर सकती है। विद्यार्थियों के लिए यह एक धैर्यवान शिक्षक की तरह है, जो बार-बार पूछे गए प्रश्नों का भी उत्तर देने से नहीं थकता। शोधकर्ताओं के लिए यह एक सहायक है, जो लाखों पृष्ठों की सामग्री को कुछ ही क्षणों में विश्लेषित कर सकता है। लेखकों के लिए यह विचारों का साथी है और शिक्षकों के लिए शिक्षण का नया माध्यम। ज्ञान का लोकतंत्रीकरण शायद ए.आई. की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। अब जानकारी केवल विशेष संस्थानों या विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रही; वह सामान्य व्यक्ति की पहुँच में भी आ गई है।

कार्यस्थलों का बदलता स्वरूप

ए.आई. के आगमन ने कार्य करने की पद्धतियों को भी बदल दिया है। अनेक दोहराव वाले कार्य अब मशीनें करने लगी हैं। बैंकिंग, लेखांकन, ग्राहक सेवा, चिकित्सा, परिवहन और उद्योग—हर क्षेत्र में इसका प्रभाव दिखाई दे रहा है। कार्यालयों में फाइलों का ढेर कम हुआ है और डिजिटल प्रक्रियाएँ बढ़ी हैं। चिकित्सकों को रोग-निदान में सहायता मिल रही है। किसानों को मौसम और फसल संबंधी सुझाव प्राप्त हो रहे हैं। व्यापारियों को ग्राहकों की आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाने में मदद मिल रही है। हालाँकि इसके साथ एक चिंता भी जुड़ी हुई है। अनेक लोगों को भय है कि मशीनें उनके रोजगार छीन लेंगी। किंतु इतिहास बताता है कि हर नई तकनीक कुछ कार्यों को समाप्त करती है तो नए अवसर भी पैदा करती है। आवश्यकता केवल इतनी है कि मनुष्य स्वयं को नए कौशलों से सुसज्जित करे।

सृजनात्मकता का नया आयाम

कभी यह माना जाता था कि रचनात्मकता केवल मनुष्य की विशेषता है। कविता, चित्रकला, संगीत और साहित्य को मानव आत्मा की अभिव्यक्ति माना जाता था। किंतु ए.आई. ने इस धारणा को भी चुनौती दी है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता कविताएँ लिख सकती है, चित्र बना सकती है, संगीत रच सकती है और कहानियाँ गढ़ सकती है। यद्यपि इन रचनाओं में मानव अनुभव की गहराई और संवेदना का अभाव हो सकता है, फिर भी यह एक नई संभावना का द्वार खोलती हैं। अब कलाकार और लेखक ए.आई. को प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सहयोगी के रूप में देखने लगे हैं। यह विचारों को विस्तार देने, प्रारूप तैयार करने और सृजनात्मक प्रयोगों को गति देने का माध्यम बन रही है।

संबंधों और जीवनशैली पर प्रभाव

ए.आई. का प्रभाव केवल कार्यक्षेत्र तक सीमित नहीं है; यह हमारे दैनिक जीवन में भी प्रवेश कर चुकी है। मोबाइल फोन के वर्चुअल असिस्टेंट, ऑनलाइन खरीदारी की सिफारिशें, नेविगेशन सिस्टम, मनोरंजन मंचों की पसंदीदा सूची—सब कहीं न कहीं ए.आई. से संचालित हैं। यह हमारे समय की बचत करती है और जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाती है। किंतु सुविधा के साथ एक चुनौती भी आती है। यदि मनुष्य अत्यधिक निर्भर हो जाए, तो उसकी स्वयं सोचने और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

यही कारण है कि तकनीक और मानवीय विवेक के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

नैतिक प्रश्नों की छाया

हर बड़ी शक्ति के साथ बड़ी जिम्मेदारी भी आती है। ए.आई. के विकास ने अनेक नैतिक प्रश्नों को जन्म दिया है। यदि कोई मशीन गलत निर्णय ले तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी? व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा कैसे सुनिश्चित होगी? क्या मशीनें कभी मानव स्वतंत्रता के लिए चुनौती बन सकती हैं? ये प्रश्न केवल वैज्ञानिकों के नहीं, बल्कि पूरे समाज के हैं। तकनीक का उद्देश्य मानवता की सेवा होना चाहिए, न कि उस पर नियंत्रण स्थापित करना। इसलिए ए.आई. के विकास के साथ नैतिकता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को भी समान महत्व देना होगा।

मानव और ए.आई. : प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयात्रा

बहुत से लोग ए.आई. को मानव का प्रतिस्पर्धी मानते हैं, किंतु वास्तव में यह दृष्टिकोण अधूरा है। ए.आई. गणना, विश्लेषण और सूचना-संसाधन में मानव से आगे हो सकती है, परंतु करुणा, संवेदना, नैतिकता, प्रेम और आध्यात्मिक चेतना अभी भी मानव की विशिष्ट शक्तियाँ हैं। मशीनें उत्तर दे सकती हैं, परंतु अनुभव नहीं कर सकतीं। वे शब्दों को समझ सकती हैं, किंतु भावनाओं की गहराई को पूरी तरह नहीं जी सकतीं। इसलिए भविष्य का संसार मानव और ए.आई. के सहयोग का संसार होगा, जहाँ तकनीक मानव क्षमता को बढ़ाएगी, उसका स्थान नहीं लेगी।

भविष्य की ओर एक संतुलित कदम

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आगमन मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। यह अवसर भी है और चुनौती भी। यह हमें अधिक ज्ञानवान, अधिक सक्षम और अधिक उत्पादक बना सकती है, यदि हम इसका विवेकपूर्ण उपयोग करें। आज आवश्यकता इस बात की नहीं है कि हम ए.आई. से भयभीत हों, बल्कि इस बात की है कि हम उसे समझें, उसके साथ चलना सीखें और उसे मानव कल्याण का साधन बनाएँ। तकनीक तब तक शुभ है, जब तक वह मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता और संवेदना का सम्मान करती है। मानव ने बुद्धि से मशीन बनाई है; अब चुनौती यह है कि वह अपनी बुद्धिमत्ता से उस मशीन का मार्गदर्शन भी करे। तभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का यह नया युग मानवता के लिए उज्ज्वल, संतुलित और मंगलमय सिद्ध होगा।

आजादी के 8 दशक: पानी भी मयस्सर नहीं!

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

मध्यप्रदेश हो या देश के अन्य राज्य, सभी राज्यों में पीने के पानी के लिए लोग परेशान है। अधिकतर गाँव और शहरों में लोग पीने के पानी के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। चारों ओर भीषण गर्मी पड़ रही है। ऐसे में पीने के पानी की व्यवस्था करना आमजन के लिए एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

आइए, कुछ गाँवों और शहरों का जायजा लेते हैं। मध्यप्रदेश के आदिवासी जिले उमरिया के गाँव माली में तेज धूप में सिर पर घड़े रखे बच्ची और महिलाएँ पानी के लिए जद्दोजहद करती हुई दिखाई दे रही है। इस गाँव के 900 परिवारों के बीच मात्र 1 कुँआ है, वह भी 3 किलोमीटर दूर। आदिवासी बच्चे और महिलाएँ और पुरूष रोज 3 किलोमीटर दूर जाते हैं, तब जाकर उन्हें पानी नसीब होता है। बूंद-बूंद पानी उनके जीवन का संघर्ष बन गया है।

अब बात करते हैं, मण्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के गृह नगर उज्जैन की! उज्जैन में अनेक मोहल्ले ऐसे हैं, जो पीने के पानी के लिए रोज संघर्ष कर रहे हैं। पिछले दिनों से मिल्कीपुरा और ढाबा रोड क्षेत्र के रहवासी पानी को लेकर परेशान हो रहे हैं। इसी प्रकार विक्रम नगर और आसपास के क्षेत्र में भी पानी की किल्लत बनी हुई है। कई बार शिकायत करने पर पानी का टैंकर आता है। इसके लिए भी रोज ही मशक्कत करनी पड़ती है। तब जाकर उन्हें पानी मुहैया हो पाता है। इसी प्रकार नागझिरी क्षेत्र के आदर्श नगर में कई दिनों से गंदे पानी की सप्लाई की शिकायत आ रही है। उज्जैन के विक्रम नगर क्षेत्र की हालत और भी ज्यादा खराब है। यहाँ के 400 परिवार बूँद-बूँद पानी के लिए तरस रहे हैं। टैंकर के आने पर महिला और बच्चे धक्का-मुक्की के बीच पानी भरने के लिए मजबूर है। विक्रम नगर में पीने के पानी के लिए 64 लाख की लागत की पाईप लाईन मंजूर है। उसके बावजूद अभी तक नगर निगम ने काम ही शुरू नहीं किया है। आज से 7 साल पहले 2019 में विक्रम नगर में 2 करोड़ 17 लाख रूपए की लागत से पानी की टंकी बनाई गई थी। इससे विक्रम नगर, विवि कैम्पस, भर्तृहरि नगर, रेलवे कॉलोनी और 3 नम्बर नाका क्षेत्र में पानी पहुंचाना था। पाईप लाईन भी डाली गई। लेकिन रेलवे लाईन पार करने की अनुमति नहीं मिलने से बीच में ही काम अटक गया। हाल ही में रेलवे से अनुमति मिल गई है, किन्तु पाईप लाईन डालने का काम अभी तक शुरू नहीं हुआ है। इस कारण उक्त मोहल्लों के रहवासी पानी का संकट झेल रहे हैं। इन मोहल्ले में टैंकर आते ही पानी प्राप्त करने के लिए पाईप लेकर टूट पड़ते हैं।

अब हम बात करते हैं, देश के सबसे स्वच्छ नगर इन्दौर की। इन्दौर के पालदा और सुखलिया के लोग पानी नहीं मिलने के कारण उनमें हाहाकार मचा हुआ है। पिछले दिनों इन्दौर-नेमावर रोड पर पानी के लिए धरना प्रदर्शन किया तो पुलिस उन्हें हटाने पहुंच गई। उन्हें तत्काल पानी तो नहीं मिला, किन्तु भँवर कुँआ पुलिस ने बिना अनुमति प्रदर्शन करने और रास्ता बाधित करने के मामले में 18 लोगों पर केस दर्ज जरूर कर लिया! भारत की आजादी के 79 वें साल हो गए। लेकिन भारत-पाक बॉर्डर के आखिरी गाँव अकली और कैर कोरी में पानी का संकट जस का तस है। यहां के लोग आज भी आजादी से पहले बनी बेरियों (छोटे कुँए) पर निर्भर हैं। कई महिलाएं रात में बेरियों पर पहरा देती है, ताकि रिस-रिस कर जमा हुआ पानी भर सके। बॉर्डर के इन इलाकों में 700 किलोमीटर दूर से नर्मदा का पानी घर-घर तक पहुँचाने के दावे तो अनेक हुए। कागजों में टंकियां भी खड़ी कर दी गई। लेकिन हकीकत यह है कि कई घरों तक नल कनेक्शन पहुंच ही नहीं पाए।

मध्यप्रदेश के गुना शहर से केवल 15 किलोमीटर दूर भीलपुरा मोहल्ले की तस्वीर सरकारी व्यवस्थाओं की पोल खोल रही है। मोहल्ले में करीब 32 साल से बसे लगभग 20 परिवार आज भी स्वच्छ पेयजल जैसी बुनियादी सुविधा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हालात इतने बद्तर हैं कि ग्रामीणजन जमीन खोदकर झिर बनाते हैं और उसी गंदे पानी को कपड़े से छानकर पीने के लिए मजबूर है। यहाँ पर दूषित पानी पीने से बच्चे और बूढ़े लगातार बीमार पड़ रहे हैं। भीलपुरा पहुंचने के लिए आज भी पक्की सड़क नहीं है। गांव में जाने के लिए कच्ची सड़क और बीच में पड़ने वाले नाले को पार करना पड़ता है। बरसात के दिनों में यह रास्ता पूरी तरह से बंद हो जाता है, और ग्रामीणों का सम्पर्क बाहरी दुनिया से पूरी तरह कट जाता है। इन आदिवासियों की इस समस्या पर किसी का ध्यान नहीं है। अब हम बात करते हैं, गुजरात के चैरापूंजी की। गुजरात के बलसाड़ जिले में गुजरात-महाराष्ट्र बॉर्डर पर बसे मोटी पलसाण गाँव के बेरस्ता फलिया में पीने के पानी के लिए लोगों को आज भी जान जोखिम में डालनी पड़ती है। यहाँ करीब 45 फीट गहरे कुएं में सीढ़ी के सहारे उतरकर पानी भरना उनकी मजबूरी है। विडंबना यह है कि इस इलाके को गुजरात का चेरापूंजी कहा जाता है। फिर भी हर गर्मियों में जल संकट खड़ा हो जाता है। सरकार की करोड़ों रूपयों की एस्टोल समूह जल आपूर्ति योजना यहां फेल साबित हो रही है। गाँव में हर घर नल कनेक्शन दे दिए गए हैं। लेकिन नलों में पानी ही नहीं आता है।

आजादी के 8 दशक हो जाने के बावजूद लोगों को पीने का पानी मयस्सर नहीं होना केन्द्र और राज्य सरकार दोनों के लिए शर्मनाक है। पिछले कुछ समय से केन्द्र सरकार ने नल-जल योजना शुरू की थी। यह वाकई अच्छी पहल थी, किन्तु अधिकारियों की लापरवाही से अनेक गाँव ऐसे हैं, जहाँ पाईपलाईन डल गई तो टंकी नहीं बनी। कई गांव में टंकियां बन गई तो पाईप लाईन नहीं डली। कुछ गांव में टंकी और पाईप लाईन दोनों डल गई किन्तु पंचायत और संबंधित विभाग की लापरवाही से इन नलों में पानी ही नहीं आता है। नियमित संधारण नहीं होता है। एक रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश नल-जल योजना की हालत खस्ताहाल है। इस और किसी का ध्यान नहीं है। केन्द्र और राज्य सरकार को चाहिए कि गाँव हो या शहर वहां के लोगों को नियमित रूप से पेयजल प्राप्त हो इसके लिए प्राथमिकता पर समीक्षा करते हुए कार्रवाई की जानी चाहिए, ताकि वहां के निवासियों को पेयजल प्राप्त हो सके।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सरकारी तंत्र बनाम गिरावट, मिलावट और बनावट

व्यंग्य

डॉ. श्रीकांत द्विवेदी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हाल ही में देश की स्कूली शिक्षा प्रणाली पर नीति आयोग की एक रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ कि पिछले दो दशकों में सरकारी स्कूलों के दाखिले में करीब 22 प्रतिशत की गिरावट आई है। गिरावट आना स्वाभाविक है। क्योंकि, स्कूल जो सरकारी ठहरे। असरकारी होते तो न तो दाखिलों में गिरावट आती और न ही छत दीवारें दरकती। वैसे असरकारी बनने के लिए ज्यादा कुछ करना नहीं पड़ता है। बस, लिबास में मेमोरियल, कान्वेंट, इंटरनेशनल या पब्लिक जैसे चमकदार शब्दों की डिजाइन दे दो, ऊपर से मीडियम इंग्लिश जैसा कोई बॉडी स्प्रे एवं फैब्रिक परफ्यूम छिड़क लें, चल निकलेंगे। ऐसे में सवाल यह उठता है कि जब, गली-मोहल्लों से शुरू हुई कल की दुकानें आज छोटे-मोटे उद्योग में बदलती जा रही है तो फिर बरसों से स्थापित सरकारी स्कूलों को असरकारी क्यों नहीं बनाया जा सकता है? जरूर बनाया जा सकता है। लेकिन यह बनाने वालों की मर्जी पर निर्भर करता है। इनके पास दो विकल्प होते हैं। या तो ये स्कूल असरकारी हो जाए। या फिर स्कूली शिक्षा के बजट से हम असरकारी हो जाए। तय है कि दूसरा विकल्प ही बेहतर रहेगा। फिर सरकारी स्कूल कोई जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों के रहवासी भवन थोड़े ही हैं। और न कलेक्टोरेट भवन, जिला पंचायत का मीटिंग हॉल या फिर कोई बैंक बिल्डिंग है। साथ ही नीति आयोग की रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि देश में एक लाख से ज्यादा स्कूल ऐसे हैं, जो केवल एक-एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं। फिर एक माट्साब क्या -क्या करें। बीएलओ का कार्य करे, जनगणना करें या फिर जानकारी लेकर संकुल केन्द्र पर जाए। इन सबके बाद बच्चों को कब पढ़ाए। ऐसे में मुट्ठी भर विद्यार्थियों और एक-दो शिक्षकों के लिए इन स्कूल भवनों को असरकारी बनाने का कोई औचित्य नहीं है। यह जमीनी हकीकत भी है और भीतर की बात भी है। जबकि, ऊपरी तौर पर दाखिलों में गिरावट को लेकर ऊपर से लेकर नीचे तक हर कोई चिंतित हैं। चिंतित यूं हैं कि बच्चे देश का भविष्य हैं। इसलिए सब मिलकर प्रयास करें कि सरकारी स्कूलों में ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी प्रवेश लें। इसके लिए शिक्षा सत्र की शुरुआत में जोर-शोर के साथ प्रवेशोत्सव मनाया जाता है। जनप्रतिनिधियों और विभागीय अधिकारियों की उपस्थिति में विद्यार्थियों का कुंकुम तिलक लगाकर स्वागत किया जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बातें होती हैं, फोटो होते हैं, अखबारों की बड़ी खबर बनती है। इतना कुछ होने के बाद फिर वही ढर्रा। यानी अतिथि शिक्षकों के भरोसे शालाओं का संचालन। अब शासकीय अस्पतालों को ही लीजिए। बड़े अस्पताल हैं। दवाइयों के भंडार हैं। डॉक्टर भी हैं, मगर समय पर उपलब्ध नहीं। आधुनिक मशीनें हैं, विशेषज्ञ ऑपरेटर नहीं है। सब-कुछ होते हुए कई बार मरीज को प्राइवेट हॉस्पिटल में रेफर कर दिया जाता है और विभागों में कागज पर वजन रखना पड़ता है, वर्ना कागज ही उड़ जाता है। बाकी सामाजिक तौर पर तो गिरावट की पूछो ही मत। भूख से, बीमारी से जितने नहीं मर रहे, उससे ज्यादा खाद्य पदार्थों में मिलावट तथा नकली दवाइयों से मर रहे हैं। जमीन में जिस तेजी से भूजल का स्तर गिर रहा है, उससे कहीं ज्यादा आदमी का ज़मीर गिर रहा। हर तरफ गिरावट के इस दौर में दुष्यंत कुमार के इस शेर पर गौर करें 'सैर के वास्ते सड़कों पर निकल आते थे, अब तो आकाश से पथराव का डर होता है।'

दृष्टिकोण

चैतन्य नागर

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

गुस्से में आग बबूला, अपना आपा भूला

भावनाओं की फेहरिस्त में क्रोध की जगह बहुत ऊपर है और हर आयु-वर्ग के लोगों के लिए यह एक विराट समस्या है। आपसी संबंधों में क्रोध, सड़क पर रोड रेज, प्रेम संबंधों में और महत्वाकांक्षाएं पूरी न होने पर पैदा होने वाला क्रोध, इम्तेहान में सफलता और नौकरी में प्रोन्नति न मिलने से उपजने वाला क्रोध...सड़क दुर्घटना, घरेलू हिंसा या आत्महत्या के रूप में ये अक्सर जानलेवा भी हो जाता है। पर यह सब बड़ा सामान्य हो चला है। इनकी तरफ निहारने की कोई जरुरत ही महसूस नहीं होती। या तो हम इन्हें बेलगाम व्यक्त करते चले जाते हैं, और या फिर इनका दमन करते रहते हैं। दोनों के कुपरिणाम भी भुगतते रहते हैं। इस पर सोचने की जरुरत है कि दमन और अनियंत्रित अभिव्यक्ति के अलावा क्रोध से निपटने का कोई मध्यम मार्ग भी है क्या।

मन की भावनाओं और व्याधियों के बारे में हम चर्चाएँ चाहे जितनी कर लें, वे अपर्याप्त ही रह जाती हैं। शैक्षिक पाठ्यक्रम के विषय विज्ञान, गणित और भाषा पर केंद्रित रहते हैं, लेकिन इनमें मन की भावनाओं को समझने-समझाने को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता। जीवन में इन अपरीक्षित भावनाओं की नासमझी और असंतुलन से कई तकलीफें पैदा होती हैं। यह हमें अभी ठीक से समझ नहीं आया है। स्कूलों में शिक्षक और घरों में भी अभिभावक इन पर संवाद करने की आवश्यकता नहीं समझते। मन में होने वाली न जाने कितनी वेदनाओं का सीधा संबंध भावनाओं और उनकी अपर्याप्त और गलत समझ से ही है, इस सचाई से मुंह मोड़ना बड़ा नुकसानदेह है।

भावनाओं की फेहरिस्त में क्रोध की जगह बहुत ऊपर है और हर आयु-वर्ग के लोगों के लिए यह एक विराट समस्या है। आपसी संबंधों में क्रोध, सड़क पर रोड रेज, प्रेम संबंधों में और महत्वाकांक्षाएं पूरी न होने पर पैदा होने वाला क्रोध, इम्तेहान में सफलता और नौकरी में प्रोन्नति न मिलने से उपजने वाला क्रोध...सड़क दुर्घटना, घरेलू हिंसा या आत्महत्या के रूप में ये अक्सर जानलेवा भी हो जाता है। पर यह सब बड़ा सामान्य हो चला है। इनकी तरफ निहारने की कोई जरुरत ही महसूस नहीं होती। या तो हम इन्हें बेलगाम व्यक्त करते चले जाते हैं, और या फिर इनका दमन करते रहते हैं। दोनों के कुपरिणाम भी भुगतते रहते हैं। इस पर सोचने की जरुरत है कि दमन और अनियंत्रित अभिव्यक्ति के अलावा क्रोध से निपटने का कोई मध्यम मार्ग भी है क्या।

लगता तो ऐसा है जैसे क्रोध अचानक कभी भी, कहीं भी उमड़ पड़ता है; बिन बुलाए आ जाता है; आँखों में खून बनकर उतरता है, धड़कनें बढ़ाता है, रक्तचाप के गणित को उथल-पुथल कर देता है। किसी पर बहुत अधिक चीखने चिल्लाने और उसे बुरी तरह आहत करने का मन करता है। पढ़े-लिखे, संभ्रांत लोग इसे बारीक, चालाक तरीकों से व्यक्त करने की कला तो सीख लेते हैं, इससे पूरी तरह मुक्ति बहुत कठिन है। अरस्तू कहते थे–'सही व्यक्ति पर, सही मात्रा में, सही समय पर, सही उद्देश्य से और सही ढंग से क्रोध करना चाहिए–पर यह हर किसी के वश की बात नहीं'। जब मन में क्रोध का विस्फोट होता है तो सही मात्रा, जगह और समय का भान ही किसे रह जाता है! क्रोध का यह जलजला कहाँ से उठता है? क्या इसके कारण सिर्फ बाहरी परिस्थितियों में हैं या इसकी जड़ें मन की सी गहराइयों में छिपी हैं जहाँ पहुंचना संभव ही नहीं?

संभवतः क्रोध का पहला कारण है किसी इच्छा का पूरा न होना। जब संसार हमारे खुद के कथानक के विरुद्ध चलता है, सारी योजनाएँ टूट कर बिखर जाती हैं, तो मन बौखला उठता है। हम अपेक्षा करते हैं कि जीवन हमारे अपने रंग में ही रंग जाए, और जब ऐसा नहीं होता, तब गुस्सा भड़क उठता है। जितनी अधिक ताकत के साथ हम अपनी अपेक्षाओं को थामते हैं, उनके अपूरित होने पर उतनी ही गहरी चोट लगती है और उतना ही गुस्सा आता है।

अपूरित इच्छाओं के नीचे अक्सर भय भी छिपा रहता है। भय को क्रोध के वस्त्र पहनना भाता है। जब भी हानि, अपमान, असुरक्षा या फिर अज्ञात का भय सताता है, तब मन क्रोध का कवच ओढ़ लेता है। भय के पीछे दुबक जाता है। घायल पशु भयभीत होकर ही सबसे अधिक गुर्राता है। भय हमें असुरक्षित भी महसूस कराता है। आकार में छोटे पशु अक्सर बहुत आक्रामक हो जाते हैं क्योंकि उन्हें बड़ी असुरक्षा महसूस होती है। असुरक्षा, भय और क्रोध के बीच का सीधा और स्पष्ट संबंध होता है।

अहंकार क्रोध के लिए बड़ी उर्वर भूमि है। सम्मान पर चोट, अपमान का अंदेशा, अपनी छवि पर मंडराता खतरा–ये सभी क्षण भर में क्रोध की आग भड़का देते हैं। सबसे खतरनाक होता है संचित पीड़ाओं से जन्मा क्रोध। मौन में पाला गया रोष, बरसों पुराने जख्म, जंग लगी रंजिशें राख के नीचे अंगारों की तरह सुलगती रहती हैं। हवा का एक हल्का झोंका काफी होता है उन्हें भड़काने के लिए। यही वह क्रोध है जो परिवारों और राष्ट्रों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी जहर भरता रहता है, उन्हें भीतर और बाहर से तोड़ देता है। एक और दिलचस्प बात है। गौर से देखें तो क्रोध एक झटके में हमें आस-पास के वातावरण से बिलकुल अलग कर देता है। हम

पूरी तरह भूल जाते हैं कि हमारा चिल्लाना-चीखना, हमारे हाव-भाव बाकी लोगों को कितने हास्यास्पद और अनावश्यक भी लग रहे होंगे। क्रोध में आपा खो देने और अंधे हो जाने की बात बिलकुल सही है।

सवाल उठता है कि क्रोध का मुकाबला हम कैसे करें। शायद पहला उपचार है जागरूकता। जब क्रोध उमड़ता है तो क्या उसे थोडा ठहर कर देखा जा सकता है? यूनानी दार्शनिक एपिक्टेटस कहता है–'तुम्हारे साथ जो होता है वह मायने नहीं रखता; मायने यह रखता है कि तुम उसका प्रत्युत्तर कैसे देते हो।' क्रोध को तुरंत व्यक्त न करके उसे सिर्फ देखते रहने से आवेग और प्रतिक्रिया के बीच एक अंतराल बनता है–यह अंतराल ही समझ के लिए जगह बना सकता है। जब क्रोध आये, तो क्या उसी समय हम बिलकुल शांत बैठ सकते हैं? बगैर हिले-डुले, और यह देख सकते हैं कि मन में क्या चल रहा है? इस तरह के शांत अवलोकन की ऊर्जा अक्सर क्रोध की आग को शांत करने का काम करती है। प्रयोग के तौर पर यह जरुर किया जाना चाहिए।

क्षमा करना भी एक कारगर उपाय है पर इसके लिए गहरी आत्मिक दृढ़ता की आवश्यकता है। गांधीजी ने ठीक कहा है–'कमजोर कभी क्षमा नहीं कर सकता। क्षमा बलवानों का गुण है।' क्षमा करना अपराध को स्वीकार करना नहीं; इसका अर्थ बस यही है कि हम दूसरों के प्रति द्वेष को अपने बोझ के रूप में ढोना नहीं चाहते। कृतज्ञता भी क्रोध की एक कारगर औषधि है। कृतज्ञ हृदय के पास कटुता के लिए जगह कम रह जाती है। कृतज्ञता शांत है; क्रोध उग्र।

बौद्ध धर्म में क्रोध एक मौलिक भ्रम है और 'तीन विषों' में से एक है, जो आंतरिक शांति को भंग कर देता है। इसे एक अशुभ मानसिक अवस्था के रूप में वर्णित किया जाता है। इसके लिए बौद्ध धर्म गहन अवलोकन की वकालत करता है। माइंडफुलनेस के माध्यम से हम बिना किसी नतीजे के क्रोध का साक्षी बनना सीखते हैं, और वह स्वाभाविक रूप से विलीन हो जाता है। ऐसा होता है या नहीं, यह कर के ही देखना होगा, क्योंकि इन सभी शिक्षाओं का परीक्षण हमारे दैनिक जीवन में न हो, तो उनका कोई अर्थ नहीं रह जाता। आधुनिक मनोविज्ञान क्रोध को एक गौण भावना के रूप में परिभाषित करता है, जो आमतौर पर गहरी भावनाओं जैसे चोट, शर्मिंदगी या असुरक्षा को छिपाने के लिए उपजता है। आधुनिक मनोविज्ञान क्रोध को एक वैध और अनुकूल संकेत मानता है, जिसका उद्देश्य दूसरों के लिए सीमाएँ स्थापित करना या अन्याय का सामना करना होता है।

क्रोध सभी के जीवन में कभी अतिथि और कभी स्थाई पारिवारिक सदस्य की तरह आता है। पर वह बस एक संकेत या लक्षण है, किसी गहरे उद्वेलन का, जो आगे चलकर किसी व्याधि का रूप भी ले सकता है। क्रोध की सही समझ नए दरवाजे भी खोल सकती है। जिद्दू कृष्णमूर्ति कहते हैं कि क्रोध को अपनी हथेलियों में एक आभूषण की तरह रखो और उसे निहारो। उसकी जड़ों तक पहुँचने की कोशिश करो। शायद ऐसा करने पर यह भी दिख सकता है कि क्रोध की ऊर्जा प्रेम की ऊर्जा से अलग नहीं। सतही तौर पर भले दोनों एक दूसरे के विपरीत दिखें,पर उनके पीछे छिपी ऊर्जा एक ही हो सकती है।

कोई कुछ भी कहे, क्रोध की समझ जरूरी है हम सभी के लिए। यह हमें पंगु बना देता है। हम अपना आपा खो बैठते हैं, जब भी यह हमें गिरफ्त में लेता है। यदि इसका उन्मूलन संभव न दिखता हो तो कम से इसकी अभिव्यक्ति पर तो किसी तरह नियंत्रण करने की कोशिश करनी ही चाहिए।

किताब इन दिनों

डॉ. शेफाली चतुर्वेदी

समीक्षक

संवाद की सभ्यता का घोषणापत्र 'संजय उवाच'

पुस्तक का पहला अध्याय 'संवाद से बनेगी सुंदर दुनिया', केवल शीर्षक नहीं, एक दर्शन है। लेखक उपदेशक की ऊँची पीठ से नहीं बोलते, बल्कि एक सहयात्री की तरह साथ चलते हैं। और यही उनकी सबसे बड़ी शक्ति है यह पुस्तक पढ़ी नहीं जाती, सुनी जाती है। मीडिया पर उनका चिंतन उस दौर में और भी अनिवार्य हो जाता है, जब पत्रकारिता बाज़ार के शोर में अपनी आत्मा गँवाती जा रही है। पैंतीस से अधिक पुस्तकों के रचयिता और 'मीडिया विमर्श' पत्रिका के कार्यकारी संपादक यह स्थापित करते हैं, पत्रकारिता मिशन है, व्यवसाय नहीं। जड़ों की ओर लौटने का उनका आग्रह, भारतीय लोकजीवन से मीडिया के टूटते रिश्ते की व्याकुल पुकार है।

कुछ लोग जब बोलते हैं, तो शब्द नहीं, विचारों की बौछार होती है। कभी वह बौछार भिगो देती है, कभी चौंका देती है, और कभी-कभी असहज भी कर देती है। प्रो. संजय द्विवेदी ऐसे ही वक्ता हैं।उनकी बातचीत की शैली में चुटकियाँ भी हैं, तंज भी, और वह बेधड़क स्पष्टता भी, जो कभी मुरीद बनाती है, कभी बेचैन कर देती है। पर यह भी सच है कि संजय जी की कही हर बात को उनके लहजे से हटकर सुना जाए, तो भीतर कुछ बहुत महीन और जरूरी मिलता है।यही बात उनकी नवीनतम पुस्तक 'संजय उवाच' पर भी लागू होती है।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष और भारतीय जन संचार संस्थान, दिल्ली के पूर्व महानिदेशक प्रो. द्विवेदी ने पहले भी अनेक पुस्तकें लिखी हैं पर यह कृति उन सबसे विशिष्ट है। शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित यह 370 पृष्ठों का व्याख्यान संग्रह संवाद की विधा को लेखनी में पिरोने का दुर्लभ प्रयास है। संजय जी ने लिखा बहुत है पर बोलने की उष्मा को लिखित शब्द में इस तरह जीवित रखना, यह पहली बार इतनी सफलता से हुआ है।

पुस्तक का पहला अध्याय 'संवाद से बनेगी सुंदर दुनिया', केवल शीर्षक नहीं, एक दर्शन है। लेखक उपदेशक की ऊँची पीठ से नहीं बोलते, बल्कि एक सहयात्री की तरह साथ चलते हैं। और यही उनकी सबसे बड़ी शक्ति है यह पुस्तक पढ़ी नहीं जाती, सुनी जाती है।

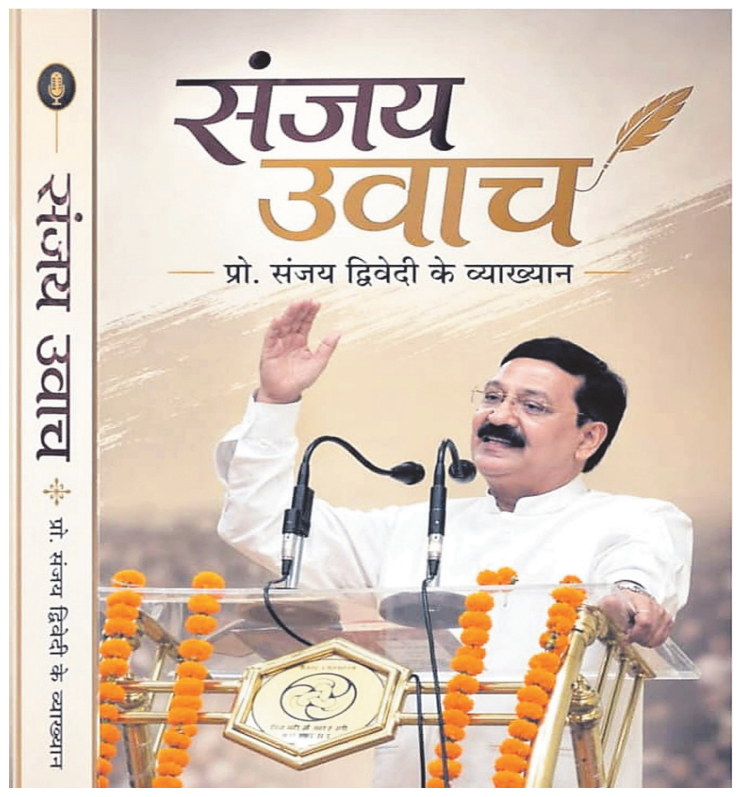

मीडिया पर उनका चिंतन उस दौर में और भी अनिवार्य हो जाता है, जब पत्रकारिता बाज़ार के शोर में अपनी आत्मा गँवाती जा रही है। पैंतीस से अधिक पुस्तकों के रचयिता और 'मीडिया विमर्श' पत्रिका के कार्यकारी संपादक यह स्थापित करते हैं, पत्रकारिता मिशन है, व्यवसाय नहीं। जड़ों की ओर लौटने का उनका आग्रह, भारतीय लोकजीवन से मीडिया के टूटते रिश्ते की व्याकुल पुकार है।

भाषा पर वे न तलवार उठाते हैं, न किसी को कठघरे में खड़ा करते हैं, बस इतना याद दिलाते हैं कि भाषा केवल संप्रेषण का उपकरण नहीं, किसी जाति की सांस्कृतिक स्मृति की जड़ें हैं। हिंदी को वे भारत की सेतु-भाषा बताते हैं,वर्चस्व की भाषा नहीं, प्रेम की भाषा।

अंबेडकर, तुलसीदास, नेताजी, दीनदयाल इन सबको एक ही सूत्र में पिरोते हुए वे सिद्ध करते हैं कि भारत राजनीतिक राष्ट्र-राज्य नहीं, करुणा और सहअस्तित्व से निर्मित एक जीवंत सभ्यता है।

'संजय उवाच' को ठहरकर पढ़िए जल्दी में नहीं। जैसे संजय जी की बातें उनके लहजे के पार जाकर सुनने पर असली अर्थ देती हैं, वैसे ही इस किताब के पन्ने भी उन्हें ही कुछ देंगे, जो रुककर पढ़ेंगे। क्योंकि यह पुस्तक अंततः एक ही बात कहती है – सभ्यता का आधार शक्ति नहीं,' संवाद ' है।

श्रद्धांजलि: सुमन कल्याणपुर

संदीप सृजन

लेखक पत्रकार हैं।

स्वर की वह शालीन नदी, जो चुपचाप बहती रही

भारतीय फिल्म संगीत के स्वर्णिम इतिहास का एक और उज्ज्वल अध्याय समाप्त हो गया। सुप्रसिद्ध पार्श्व गायिका सुमन कल्याणपुर के निधन के साथ वह मधुर, कोमल और आत्मीय स्वर हमेशा के लिए मौन हो गया, जिसने कई दशकों तक भारतीय संगीत प्रेमियों के हृदयों को स्पंदित किया। वे उन विरल कलाकारों में थीं जिनकी पहचान केवल उनके गीत नहीं थे, बल्कि उनका सादा व्यक्तित्व, संगीत के प्रति समर्पण और प्रसिद्धि के बीच भी बनी रही उनकी विनम्रता थी। आज जब हम उन्हें स्मरण करते हैं, तो केवल एक गायिका को नहीं, बल्कि भारतीय संगीत की उस परंपरा को याद करते हैं जिसमें साधना, संस्कार और सुरों की पवित्रता सर्वोपरि थी।

सुमन कल्याणपुर का जन्म 28 जनवरी 1937 को ढाका में हुआ था। बाद में उनका परिवार मुंबई आकर बस गया। बचपन से ही संगीत के प्रति उनका झुकाव था और उन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की। संगीत उनके लिए केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं था, बल्कि जीवन का आधार था। यही कारण था कि उनकी गायकी में कृत्रिमता नहीं, बल्कि सहजता और आत्मीयता दिखाई देती थी। जब वे गाती थीं तो ऐसा लगता था मानो कोई बहुत अपना व्यक्ति मन की बात कह रहा हो।

सुमन कल्याणपुर ने ऐसे समय में संगीत जगत में कदम रखा जब लता मंगेशकर, गीता दत्त और आशा भोंसले जैसी महान गायिकाओं का वर्चस्व था। उस दौर में किसी नई गायिका के लिए अपनी अलग पहचान बनाना अत्यंत कठिन था। लेकिन सुमन जी ने अपनी प्रतिभा, अनुशासन और निरंतर अभ्यास के बल पर धीरे-धीरे संगीत जगत में अपनी विशिष्ट जगह बनाई। उनकी आवाज़ में एक अद्भुत कोमलता थी जो प्रेमगीतों, विरह गीतों और भावपूर्ण रचनाओं को विशेष ऊँचाई प्रदान करती थी।

उनके करियर की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने कभी किसी से प्रतिस्पर्धा नहीं की। वे स्वयं को किसी दौड़ का हिस्सा नहीं मानती थीं। शायद यही कारण था कि जब लोगों ने उनकी तुलना बार-बार लता मंगेशकर से की, तब भी उन्होंने कभी कोई कटु टिप्पणी नहीं की। उन्होंने हमेशा कहा कि यदि श्रोता उनके गीतों को पसंद करते हैं, तो वही उनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। यह विनम्रता उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी पहचान थी।

सुमन कल्याणपुर के जीवन से जुड़ा एक अत्यंत रोचक किस्सा संगीत प्रेमियों के बीच वर्षों से चर्चित रहा है। उनकी आवाज़ का स्वरूप इतना मधुर और परिष्कृत था कि अनेक बार रेडियो श्रोता उनके गीतों को लता मंगेशकर का गीत समझ लेते थे। कई संगीत प्रेमियों को वर्षों बाद पता चला कि उनके प्रिय गीत वास्तव में सुमन कल्याणपुर ने गाए थे। इस भ्रम को लेकर वे कभी असहज नहीं हुईं। वे मुस्कराकर कहती थीं कि यदि लोग गीत को पसंद कर रहे हैं, तो यही सबसे बड़ी बात है। उनके लिए कला कलाकार से बड़ी थी।

1960 के दशक का एक और महत्वपूर्ण प्रसंग उनके जीवन से जुड़ा है। उस समय मोहम्मद रफ़ी और लता मंगेशकर के बीच रॉयल्टी को लेकर मतभेद हो गया था और दोनों ने कुछ समय तक साथ गाना बंद कर दिया था। संगीतकारों के सामने कठिनाई थी कि रफ़ी साहब के साथ युगल गीत कौन गाए। ऐसे समय में सुमन कल्याणपुर ने अपनी प्रतिभा का ऐसा परिचय दिया कि संगीतकारों का विश्वास उन पर और बढ़ गया। उन्होंने मोहम्मद रफ़ी के साथ अनेक युगल गीत गाए जो बाद में बेहद लोकप्रिय हुए। यह उनकी गायकी की शक्ति थी कि इतने बड़े गायक के साथ भी उनकी आवाज़ पूरी गरिमा और आत्मविश्वास के साथ उभरकर सामने आती थी।

मोहम्मद रफ़ी और सुमन कल्याणपुर की जोड़ी हिंदी फिल्म संगीत की सबसे मधुर जोड़ियों में गिनी जाती है। दोनों की आवाज़ों में अद्भुत सामंजस्य था। जब भी उन्होंने साथ गाया, ऐसा लगा मानो दो स्वर एक-दूसरे को पूर्णता प्रदान कर रहे हों। उनके अनेक युगल गीत आज भी रेडियो, मंचों और संगीत समारोहों में सुनाई देते हैं। संगीत समीक्षकों का मानना है कि यदि उस दौर की श्रेष्ठ युगल जोड़ियों की सूची बनाई जाए तो रफ़ी और सुमन कल्याणपुर का नाम निश्चित रूप से अग्रणी स्थान पर होगा।

उनकी गायकी की एक और विशेषता थी शब्दों के भाव को समझने की क्षमता। वे केवल सुरों की शुद्धता तक सीमित नहीं रहती थीं। गीत रिकॉर्ड करने से पहले उसके अर्थ, भाव

और परिस्थिति को समझती थीं। परिणामस्वरूप उनके गीत केवल सुने नहीं जाते, बल्कि महसूस किए जाते हैं। यही कारण है कि उनके गाए हुए दर्दभरे गीत आज भी श्रोताओं के मन को छू लेते हैं।

सुमन कल्याणपुर का व्यक्तित्व अत्यंत सरल और संकोची था। फिल्म जगत में जहां कलाकारों के लिए लगातार चर्चा में बने रहना महत्वपूर्ण माना जाता है, वहीं उन्होंने हमेशा प्रचार से दूरी बनाए रखी। वे पार्टियों, विवादों और सुर्खियों से दूर रहती थीं। उन्हें लगता था कि कलाकार का सबसे बड़ा परिचय उसका काम होता है। आज के दौर में जब प्रसिद्धि के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए जाते हैं, सुमन जी का जीवन इस बात का उदाहरण है कि केवल प्रतिभा और परिश्रम के बल पर भी सम्मान अर्जित किया जा सकता है।

मराठी संगीत जगत में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने अनेक मराठी भावगीत और भक्ति गीत गाए जो आज भी लोकप्रिय हैं। महाराष्ट्र के संगीत प्रेमियों के बीच उनका सम्मान किसी दिग्गज कलाकार से कम नहीं था। उनकी आवाज़ में भक्ति और संवेदना का जो अद्भुत मेल था, वह श्रोताओं को सीधे हृदय तक स्पर्श करता था।

उनके जीवन से जुड़ा एक और सुंदर किस्सा अक्सर उनके समकालीन कलाकार सुनाया करते थे। कहा जाता है कि रिकॉर्डिंग के दौरान वे कभी जल्दबाज़ी नहीं करती थीं। यदि उन्हें लगता कि किसी शब्द का उच्चारण और बेहतर हो सकता है या किसी पंक्ति में भाव और अधिक गहराई से व्यक्त किया जा सकता है, तो वे कई बार अभ्यास करती थीं। संगीत उनके लिए केवल पेशा नहीं था, इसलिए वे हर गीत को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न मानकर गाती थीं। सुमन कल्याणपुर ने हिंदी के अलावा मराठी, गुजराती, बंगाली, असमिया, भोजपुरी, पंजाबी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी गीत गाए। यह उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण था। हर भाषा में वे उस भाषा की आत्मा को पकड़ने का प्रयास करती थीं। यही कारण है कि विभिन्न भाषाओं के श्रोता उन्हें अपना कलाकार मानते थे।

उनके करियर का एक दिलचस्प पहलू यह भी रहा कि उन्होंने अनेक ऐसे गीत गाए जो समय के साथ अमर हो गए। 'आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे', 'तुमने पुकारा और हम चले आए', 'ना ना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे', 'मेरे महबूब ना जा', 'अजब है दास्तां तेरी ऐ जिंदगी' और 'दिल एक मंदिर है' जैसे गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं जितने अपने समय में थे। इन गीतों की सफलता का कारण केवल उनकी धुन नहीं, बल्कि सुमन कल्याणपुर की भावपूर्ण प्रस्तुति भी थी।

संगीत जगत में उन्हें हमेशा एक सुसंस्कृत और मर्यादित कलाकार के रूप में देखा गया। उन्होंने कभी किसी विवाद का हिस्सा बनने की कोशिश नहीं की। उनकी सफलता का आधार केवल उनका संगीत था। शायद यही कारण है कि उनके बारे में बात करते समय लोग उनकी गायकी के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व की भी प्रशंसा करते हैं।

समय बदलता गया, संगीत की शैलियां बदलती गईं, नई पीढ़ियां आती गईं, लेकिन सुमन कल्याणपुर की आवाज़ की मधुरता कभी पुरानी नहीं हुई। उनके गीतों में एक ऐसी शाश्वत ताजगी है जो हर पीढ़ी को आकर्षित करती है। आज भी जब उनके गीत सुनाई देते हैं तो लगता है मानो किसी पुराने मित्र की आत्मीय आवाज़ कानों में गूंज रही हो।

उनके निधन के साथ भारतीय संगीत का एक युग अवश्य समाप्त हुआ है, लेकिन उनकी विरासत कभी समाप्त नहीं होगी। वे उन कलाकारों में थीं जिन्होंने यह सिद्ध किया कि महानता का संबंध प्रसिद्धि से नहीं, बल्कि गुणवत्ता से होता है। उन्होंने अपने पूरे जीवन में संगीत को पूजा की तरह साधा और उसी साधना ने उन्हें अमर बना दिया।

आज जब हम सुमन कल्याणपुर को श्रद्धापूर्वक याद करते हैं, तो उनके स्वर हमारे भीतर फिर से जीवित हो उठते हैं। वे भले ही भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके गीत आने वाली पीढ़ियों तक गूंजते रहेंगे। जब भी कोई संगीत प्रेमी उनके गीतों को सुनेगा, तब वह केवल एक धुन नहीं सुनेगा, बल्कि भारतीय संगीत की उस स्वर्णिम परंपरा को महसूस करेगा जिसका सुमन कल्याणपुर एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय थीं।

सुमन कल्याणपुर का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्ची कला को प्रचार की आवश्यकता नहीं होती। वह अपने गुणों के कारण स्वयं अमर हो जाती है। उनका स्वर आज भी भारतीय संगीत की स्मृतियों में उसी तरह जीवित है जैसे किसी शांत नदी का मधुर कल-कल नाद, जो दिखाई भले न दे, लेकिन सदैव सुनाई देता रहता है। उनकी स्मृति को विनम्र श्रद्धांजलि।

कहीं हम अहंकार को स्वाभिमान तो नहीं समझ रहे हैं?

जीवन के रहस्य

नितिन वैद्य

मानव जीवन का सबसे सूक्ष्म और कठिन विषय है,अहंकार और स्वाभिमान के बीच का अंतर समझना। 'अनेक बार व्यक्ति अपने अहंकार को ही स्वाभिमान का नाम दे देता है और उसी भ्रम में जीवन व्यतीत करता रहता है।' जबकि वास्तविकता यह है कि दोनों का स्वरूप, उद्देश्य और परिणाम पूर्णतः भिन्न होते हैं। स्वाभिमान व्यक्ति को ऊँचा उठाता है, जबकि अहंकार उसे भीतर से खोखला कर देता है।

'स्वाभिमान शब्द दो शब्दों के मेल से बना है -स्व + अभिमान। यहाँ 'स्व' का अर्थ है स्वयं का वास्तविक बोध। जिसने अपने भीतर झाँककर स्वयं को पहचान लिया, जिसने आत्मावलोकन और आत्मसाक्षात्कार कर लिया, उसके जीवन में अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं बचता।' स्वाभिमानी व्यक्ति विनम्र होता है, क्योंकि वह जानता है कि जीवन में प्राप्त प्रत्येक उपलब्धि ईश्वर, समाज और परिश्रम के सम्मिलित आशीर्वाद का परिणाम है। वहीं अहंकारी व्यक्ति स्वयं को ही सर्वश्रेष्ठ मानने लगता है और दूसरों को तुच्छ समझने की भूल कर बैठता है।

इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जहाँ स्वाभिमान ने राष्ट्र और समाज को नई दिशा दी। श्री लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा था 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।' यह कथन किसी व्यक्तिगत अहंकार का नहीं, बल्कि राष्ट्र के स्वाभिमान का उद्घोष था। इसी प्रकार सुभाष चन्द्र बोस का वाक्य- 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' सम्पूर्ण राष्ट्र की अस्मिता और आत्मसम्मान की भावना को प्रकट करता है। इन महान व्यक्तित्वों के शब्दों में जनकल्याण, त्याग और राष्ट्रप्रेम था, इसलिए यह स्वाभिमान था, अहंकार नहीं।

अब अहंकार के दो उदाहरणों को समझना भी आवश्यक है। पहला उदाहरण रावण का है। रावण अत्यंत विद्वान, शिवभक्त और पराक्रमी था, 'किन्तु उसका अहंकार इतना बढ़ गया कि उसने स्वयं को अजेय मान लिया।' उसी अहंकार ने उसके विवेक को नष्ट कर दिया और अंततः उसका सम्पूर्ण साम्राज्य समाप्त हो गया। दूसरा उदाहरण दुर्योधन का है। दुर्योधन का अहंकार उसे सत्य स्वीकार नहीं करने देता था। 'उसने अपने स्वार्थ और घमंड में धर्म का विरोध किया, परिणामस्वरूप महाभारत जैसा विनाशकारी युद्ध हुआ और उसका सर्वनाश हो गया।' जीवन का वास्तविक रहस्य यही है कि मनुष्य अपने भीतर स्वाभिमान को विकसित करे, अहंकार को नहीं। स्वाभिमान व्यक्ति को मर्यादा, विनम्रता और आत्मविश्वास देता है, जबकि अहंकार संबंधों को तोड़ता है और पतन का कारण बनता है। अतः आवश्यक है कि हम स्वयं को पहचानें, विनम्र बने रहें और अपने जीवन को जनकल्याण तथा सद्भावना से जोड़ें। यही सच्चे जीवन की दिशा है।

श्री कृष्ण शरणम् मम।

ग्रामीण उस समय आश्चर्यचकित रह गए जब कलेक्टर बैलगाड़ी से निकले भ्रमण को

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। सरकार आपके द्वार कार्यक्रम एवं ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कलेक्टर नर्मदापुरम श्री सोमेश मिश्रा,एसपी नर्मदापुरम श्री साई कृष्णा एस थोटा आदि शुक्रवार को सोहागपुर विधानसभा के आदिवासी बहुल ग्राम छेड़का में रात्रि विश्राम किया। आपने बैलगाड़ी से ग्राम की सैर करने निकले। इससे उपस्थित जन एवं आदिवासी मातृशक्ति, नागरिकों एवं बच्चे आश्चर्यचकित रह गए।

लगाई चौपाल – कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने ग्राम कामती रंगपुर में रात्रि चौपाल लगाकर ग्रामीणों की समस्याओं को ध्यान पूर्व सुना। आपने अधिकारियों को विभिन्न समस्याओं को निराकरण के निर्देश भी दिए। किसानों के समस्या पर किसानों को पंजीयन एवं टोकन के माध्यम से खाद की पर्याप्त उपलब्धता के भी कलेक्टर ने निर्देश दिए। इसके कलेक्टर ने रात्रि विश्राम करके ग्राम छेड़का में सुबह पारंपरिक खेल गिल्ली-डंडा खेला कर बचपन की यादें को ताजा किया। कलेक्टर ने सुबह की सैर बैलगाड़ी से करके अच्छा संदेश जन-जन तक पहुंचाया। कलेक्टर की सहजता एवं भारतीय सांस्कृतिक के प्रति लगाव की ग्रामीणों में खासी चर्चा रही।

पूर्णिमा महोत्सव पर दिगंबर जैन तीर्थ आहु पार्श्वनाथ मंदिर में भक्तों का सैलाब

धार। पूर्णिमा महोत्सव पर दिगंबर जैन तीर्थ आहु पार्श्वनाथ मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहा उपस्थित सभी भक्तों ने मनोभाव से अभिषेक,शांतिधारा कर पूजा की। मनोकामना पूर्ण इस मंदिर में यूं तो हर समय दर्शनार्थियों का आना जाना चला करता है पर हर पूर्णिमा को यहाँ मेला सा लग जाता है ,कुछ भक्त तो ऐसे भी है जो हर पूर्णिमा को यहाँ आते है। उनका कहना है कि न जाने क्यों पूर्णिमा के दो -तीन दिन पहले हमें आहुजी की याद आने लग जाती है। कहा जाता है कि यहां दिल से मांगी गई हर प्रार्थना कबुल होती है । इस बार गुजरात के मेहसाणा से निलेश -सौ.भारती ने विधान किया। वही प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य धार के सौरभ -सौ.कामना जी जैन को,शांतिधारा करने सौभाग्य इंदौर निवासी कैलाश जी, शेलेष जी जैन व अशोक जी नवीन जी सोनी को प्राप्त हुआ । वही श्रीजी की आरती करने का सौभाग्य श्रीवास्तव राकेश जी-सौ.अनिता जी विनायका को प्राप्त हुआ । जानकारी देते हुए संस्था के कार्यवाहक अध्यक्ष नवीन गोधा ने बताया कि दिगंबर जैन तीर्थ आहु धार से 13 किमी दूर होकर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है पर संस्था ने सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा रखी है यहाँ वर्तमान में धर्मशाला का कार्य पूर्णता की ओर है जिसमें सर्वसुविधा युक्त 10 कमरे व विशाल भोजन शाला व बड़ा बैठक हाल है। श्री गोधा ने बताया कि पूर्णिमा पर सभी भक्तों का स्वागत व आभार संस्था के चन्द्रप्रकाश गंगवाल, विकास छाबड़ा व सुभाष गंगवाल तथा महिला प्रतिनिधि अभिलाषा गोधा ने किया ।

उज्जैन रोड के अव्यवस्थित निर्माण कार्यों को लेकर कांग्रेस ने किया लोक निर्माण विभाग का घेराव

देवास। लोक निर्माण विभाग द्वारा उज्जैन रोड़ चोड़ीकरण का काम बहुत धीमी गति से किया जा रहा हैं,जिससे हजारों नागरिकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शीघ्र रोड़ निर्माण की मांग को लेकर शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रयास गौतम एवं ग्रामीण जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनीष चौधरी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कांग्रेस जनों ने लोक निर्माण विभाग के कार्यालय का घेराव कर ज्ञापन दिया। कांग्रेस प्रवक्ता हारिस गजधर ने बताया कि कांग्रेस द्वारा ज्ञापन के जरिए मांग की गई कि उज्जैन रोड़ चोड़ीकरण का कार्य बारिश के पूर्व शीघ्र पूरा किया जाए एवं निर्माण एजेंसी को निर्देशित की जाए कि वह निर्माण युद्ध स्तर पर शुरू करें। अगर बारिश के पूर्व रोड़ नहीं बना तो परेशानी और ज्यादा बढ़ जाएगी। ज्ञापन देने के दौरान एसडीओ के देर से पहुंचने पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री चौधरी ने नाराजी व्यक्त करते हुए कहा कि जब हमने पूर्व में सूचना दे दी थी कि हम ज्ञापन देने आएंगे, तो फिर आखिर क्यों आप समय पर मौके पर उपस्थित नहीं रहें। इस अवसर पर शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रयास गौतम, मनीष चौधरी,प्रदीप चौधरी, रोशन रायकवार ने भी अपनी बात रखी। इस अवसर पर कांग्रेस नेता गुरूचरण सिंह सलूजा,नज़र शेख़, जाहिद पठान, सुजीत सांगते ज्ञान सिंह दरबार विक्रम मुकाती,सुधीर शर्मा, उमेश झंवर, राजेश राठौर,रूपेश कल्याणे, दिलीप परमार,मनोज हेतावल, अजय सिंह राजोदा, अनिल गोस्वामी, आबिद खान, प्यारे मियां पठान,वसीम हुसैन, दिग्विजय सिंह झाला, गजेंद्र तोमर, खलील अहमद शेख, प्रवीण शर्मा, डॉ.मंसूर शेख, प्रतीक शास्त्री, प्रहलाद मिस्त्री, राजेश जायसवाल, विमल चौधरी, सुरेश कुमावत, बाबूलाल भाट, निलेश वर्मा, वंदना पांडे ,कविता वर्मा,वंदना बड़ोदिया ,आशा मालवीय, अंकित खरे,दीपेश हरोड़े,दीपक धाकड़, अजय गुर्जर, आकाश चौहान, राजकुमार मालवीय सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित रहें।

सौहार्द्र, सम्मान, संस्कार और राष्ट्रप्रेम के संदेश के साथ ब्रह्माकुमारी कार्यक्रम का समापन हुआ

वरिष्ठजनों के अनुभव और युवाओं की ऊर्जा को जोड़ने की पहल, बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से मोहा मन

बैतूल। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के समाजसेवा प्रभाग द्वारा संचालित संगम प्रोजेक्ट का जिलास्तरीय शुभारंभ एवं बच्चों के छह दिवसीय आवासीय समर कैंप का समापन समारोह ब्रह्माकुमारी के स्थानीय सेवाकेंद्र बटामा बडोरा बैतूल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारियों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों, वरिष्ठजनों, अभिभावकों एवं गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी अतिथियों का तिरंगा पटका एवं बैज लगाकर स्वागत एवं सम्मान किया गया। कार्यक्रम में संयुक्त कलेक्टर एवं नजूल अधिकारी मकसूद अहमद, थाना प्रभारी अंजना धुर्वे, जिला पेंशनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सुंदरलाल कड़वे, जिला सीएससी प्रबंधक कमलेश रघुवंशी सहित कई अधिकारीगण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

वरिष्ठजनों के अनुभव और युवाओं की ऊर्जा को जोड़ने की पहल, संगम– इस अवसर पर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू ने संगम प्रोजेक्ट की जानकारी देते बताया कि यह पहल वर्तमान पीढ़ी और वरिष्ठजनों के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य करेगी। उन्होंने कहा कि आज समाज को युवाओं की ऊर्जा और वरिष्ठजनों के अनुभव दोनों की आवश्यकता है। यह प्रोजेक्ट दोनों पीढ़ियों को जोड़कर संस्कार, अनुभव और जीवन मूल्यों के आदान-प्रदान का माध्यम बनेगा, जिससे परिवार और समाज अधिक सशक्त एवं समरस बन सकेंगे। मुख्य अतिथि संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद ने कहा कि वरिष्ठजन समाज की अमूल्य धरोहर हैं। उनके अनुभव और मार्गदर्शन से नई पीढ़ी को सही दिशा प्राप्त होती है। उन्होंने संगम प्रोजेक्ट को सामाजिक समरसता, पारिवारिक मूल्यों तथा पीढ़ियों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करने वाली सराहनीय पहल बताया।

समर कैंप के समापन पर बच्चों की प्रस्तुतियों ने सबका मनमोहा– कार्यक्रम के दौरान छह दिवसीय आवासीय समर कैंप का भी समापन किया गया। कैंप में बच्चों को नैतिक मूल्य, व्यक्तित्व विकास, सकारात्मक सोच, राजयोग मेडिटेशन, आत्मविश्वास, अनुशासन एवं विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया गया था। समापन अवसर पर बच्चों ने गीत, नृत्य, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों एवं मूल्य आधारित शिक्षाप्रद कार्यक्रमों द्वारा अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उनकी प्रस्तुतियों ने उपस्थित अतिथियों एवं अभिभावकों का मनमोह लिया, जिन्होंने बच्चों के प्रयासों की सराहना जोरदार तालियां बजाकर की। इसके बाद अतिथियों ने बच्चों को उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं देते हुए ऐसे संस्कारमूलक आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया। अंत में सभी उपस्थितजनों ने राष्ट्रभक्ति एवं एकता का संदेश देते हुए सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का गायन किया।

घायल श्रद्धालुओं का हाल जानने पहुंचे भाजपा जिला अध्यक्ष व विधायकगण

बैतूल। रविवार को चिचोली क्षेत्र स्थित मां चंडी दरबार से लौट रहे श्रद्धालुओं का वाहन हिवरखेड़ी के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। हादसे में घायल श्रद्धालुओं को जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। सोमवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल के निर्देश पर भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख तथा गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा जिला चिकित्सालय पहुंचे। जनप्रतिनिधियों ने चिकित्सकों की उपस्थिति में घायलों का

हालचाल जाना और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। उन्होंने चिकित्सकों को सभी घायलों का बेहतर उपचार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस दौरान सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे एवं डॉ. रानू वर्मा भी मौजूद रहे । घायल श्रद्वालूओं से मुलाकात के दौरान जनप्रतिनिधियों ने घायलों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने की जानकारी मिली। इस पर विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने अपनी विधायक निधि से आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। उल्लेखनीय है कि दुर्घटना में घायल सभी श्रद्धालु मुलताई विधानसभा क्षेत्र के ग्राम सालीढाना के निवासी हैं। वे रविवार को मां चंडी दरबार में दर्शन एवं पूजा-अर्चना के लिए आए थे। दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल कुछ श्रद्धालुओं को बेहतर उपचार के लिए भोपाल रेफर किया गया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के निर्देश पर कोठीबाजार मंडल अध्यक्ष विक्रम वैद्य रविवार रात जिला अस्पताल पहुंचे थे। उन्होंने घायलों के उपचार की व्यवस्था का जायजा लिया तथा गंभीर घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद भोपाल रवाना कराने की प्रक्रिया में सहयोग किया।

बैतूल में श्रद्धालुओं से भरा ट्रक पलटा, एक की मौत, 28 घायल

चंडी दरबार से लौटते समय इंदौर हाईवे पर हुआ हादसा

बैतूल। इंदौर हाईवे पर चंडी दरबार से लौट रहे श्रद्धालुओं से भरा एक ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। कोतवाली थाना क्षेत्र के हिवरखेड़ी के पास रविवार रात हुए इस सडक़ हादसे में 28 लोग घायल हो गए, जबकि 65 वर्षीय एक बुजुर्ग की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, यह दुर्घटना ट्रक चालक की लापरवाही के कारण हुई, जो घटना

के बाद मौके से फरार है। हादसे के बाद सभी घायलों को तुरंत बैतूल जिला अस्पताल पहुंचाया गया। यहां गंभीर रूप से घायल सलाईढाना निवासी 65 वर्षीय सुखीराम धुर्वे को आईसीयू में भर्ती किया गया था, जहां देर रात उपचार के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। वहीं, हादसे में घायल हुए दो अन्य लोगों की गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें बेहतर इलाज के लिए भोपाल रेफर कर दिया है। इस हादसे में कुल 28 लोग घायल हुए थे। इनमें से कुछ लोगों को प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है, जबकि अन्य मरीजों का जिला अस्पताल में इलाज अभी जारी है। पुलिस और प्रशासन की टीम घायलों के समुचित उपचार की निगरानी कर रही है। पुलिस ने पोस्टमार्टम की कार्रवाई पूरी होने के बाद मृतक सुखीराम का शव उनके परिजनों को सौंप दिया है। हादसे के बाद से आरोपी ट्रक चालक वाहन छोडक़र मौके से फरार हो गया था। पुलिस ने मामले को जांच में लिया है और फरार ड्राइवर की सरगर्मी से तलाश की जा रही है।

स्व. कौशल्या वागद्रे का श्रद्धांजली कार्यक्रम कल

बैतूल। नगरपालिका बैतूल की अध्यक्ष एवं वरिष्ठ भाजपा नेत्री श्रीमती पार्वती ताई बारस्कर तथा लक्ष्मीनारायणजी, संतोषजी, राजाजी, वरिष्ठ अधिवक्ता कृष्णा वागद्रे (वागद्रे ट्रेडर्स) एवं उमेश वागद्रे की वयोवृद्ध माताजी स्व. कौशल्या बाई वागद्रे का विगत 24 मई को स्वर्गवास हो गया था। जिनकी दशक्रिया का कार्यक्रम आज 2 जून मंगलवार को ताप्ती घाट खेड़ी सांवलीगढ एवं तेरहवीं (श्रद्धांजली) कार्यक्रम कल बुधवार 3 जून को प्रातः 11 बजे कस्तूरी बाग, वागद्रे ट्रेडर्स के सामने, इटारसी रोड सदर बैतूल में रखा गया है। शोकाकुल परिवार ने सभी परिचितों से कार्यक्रम में उपसिथत होकर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से की जाने वाली प्रार्थना में शामिल होने का आग्रह किया है।

पुरुषोत्तम मास निमित्त श्री महालक्ष्मी-नारायण अनुष्ठान संपन्न

इंदौर/देवास । श्री समर्थ मराठी सामाजिक कल्याण समिति, इंदौर द्वारा पुरुषोत्तम मास के पावन अवसर पर आयोजित श्री विश्व मंगल लोककल्याणकारी श्री महालक्ष्मी-नारायण अनुष्ठान रविवार को, मौर्य हिल्स स्थित सुठीदेवी दौलतराम छावछरिया पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित कुसुमदेवी बालकिशन छावछरिया सभागृह कनाडिया रोड पर बहुत ही भक्ति और उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

समिति के अध्यक्ष संदीप कुलकर्णी ने बताया कि, प्रातः 10:30 बजे से प्रारंभ हुआ यह अनुष्ठान दोपहर 3:30 बजे तक चला, जिसमें 150 से अधिक श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर धर्मलाभ प्राप्त किया। वातानुकूलित सभागार में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में अत्यंत सुंदर एवं भक्तिमय वातावरण निर्मित हुआ। मंत्रोच्चार, पूजा-अर्चना एवं धार्मिक अनुष्ठानों से संपूर्ण परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत रहा।

समिति के वरिष्ठ सदस्य विजय कोरान्ने एवं डी आर घुले ने बताया कि, अनुष्ठान का संचालन एवं मार्गदर्शन परम पूज्य श्री स्वामी श्रीधर जी महाराज एवं सूरज महाराज के दिव्य सान्निध्य में संपन्न हुआ। उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं आशीर्वचनों ने उपस्थित श्रद्धालुओं को धर्म, संस्कृति एवं अध्यात्म के प्रति प्रेरित किया।

पूजा स्थल पर आकर्षक रंगोली, आकर्षक सज्जा, सुव्यवस्थित व्यवस्था तथा श्रद्धालुओं की उत्साहपूर्ण उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गरिमा प्रदान की।

समिति के सक्रिय सदस्य लोकेंद्र नामजोशी ने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ कार्यक्रम की सफलता के लिए सहयोग प्रदान करने वाले उपस्थित सभी श्रद्धालुओं, दानदाताओं, सहयोगकर्ताओं एवं स्वयंसेवकों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस भाव भक्ति से परिपूर्ण गरिमामय कार्यक्रम में मौर्या हिल्स स्थित पारमार्थिक ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी श्री बालकिशनजी छावछरिया एवं हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल एवं वरिष्ठ विधिवेत्ता श्री बी वी कोकजे विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने समिति के इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन की सराहना करते हुए समाज में ऐसे आयोजनों की निरंतर आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के आयोजन में विपिन वालूंजकर, अन्शुल कोरान्ने, अरुण गोखले, स्मिता मोकाशी, सायली कुलकर्णी, दिलीप अण्वेकर जी प्रदीप कुलकर्णी, संगीता नामजोशी , सृष्टि आवारे, अर्चना देसाई एवं प्रदीप गोडबोले का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के समापन पर सभी उपस्थित भक्तजनों को महाप्रसाद एवं भोजन प्रसादी का वितरण किया गया।

सोहागपुर विधानसभा के आदिवासी बहुल ग्राम छेड़का ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने पहुंचे कलेक्टर, किया रात्रि विश्राम

सोहागपुर । सोहागपुर विधानसभा के आदिवासी बहुल ग्राम छेड़का ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने पहुंचे कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने 'प्रशासन आपके द्वारा' अभियान के अंतर्गत सोहागपुर के पर्यटक ग्राम छेड़का में रात्रि विश्राम किया। इस दौरान कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के साथ पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्णा एस थोटा, डीएफओ श्री गौरव शर्मा, जिला पंचायत सीईओ श्री हिमांशु जैन सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारियों ने भी ग्राम छेड़का में ग्रामीण पर्यटन विकास को दृष्टिगत रखते हुए तैयार किए गए होम-स्टे में रात्रि विश्राम किया। इस। रात्रि विश्राम के दौरान अधिकारियों ने स्टार गेजिंग गतिविधि में सहभागिता करते हुए टेलीस्कोप के माध्यम से चंद्रमा एवं अन्य खगोलीय पिंडों का अवलोकन किया। इस अवसर पर प्रकृति एवं खगोल विज्ञान से संबंधित रोचक जानकारियों पर भी चर्चा की गई। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा सहित अन्य अधिकारियों ने सप्त ऋषि, शुक्र ग्रह जिसे 'सुबह का तारा' या 'शाम का तारा' कहा जाता है, सहित अन्य खगोलीय संरचनाओं को टेलीस्कोप के माध्यम से देखा। आसमान में दिखाई देने

वाली खगोलीय घटनाओं एवं प्राकृतिक गतिविधियों को देखकर सभी अधिकारी रोमांचित हुए।

मिलेट्स से बने पारंपरिक व्यंजनों का लिया स्वाद– कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने सतपुड़ा ट्राइबल होम-स्टे में रात्रि विश्राम के दौरान मिलेट्स से बने पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद लिया तथा होम-स्टे में पर्यटकों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का स्वयं अनुभव किया। इस दौरान एसपी श्री साई कृष्णा एस थोटा नर्मदापुरम, डीएफओ श्री गौरव शर्मा,जिला पंचायत सीईओ श्री हिमांशु जैन आदि अधिकारियों ने मिलेट्स से बनी रोटी, खीर एवं अन्य स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया।

ग्रामीण जीवन शैली – कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने कहा कि होम-स्टे ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने की एक प्रभावी एवं व्यापक पहल है। इसके माध्यम से पर्यटकों को ग्रामीण जीवन शैली, प्राकृतिक सौंदर्य एवं स्थानीय संस्कृति का विशेष अनुभव प्राप्त होता है। आपने कहा कि इस प्रकार की पहल से स्थानीय रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे । वहीं ग्रामीण क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान को नई पहचान एवं दिशा मिलेगी। इस प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम में सोहागपुर अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी सहित अनुविभाग के अधिकारी भी मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

29वीं बटालियन विशेष सशस्त्र बल दतिया में विदाई समारोह कार्यक्रम संपन्न

दतिया , निप्र। वीं बटालियन के ऑडिटोरियम हॉल में आज शनिवार को विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपसेनानी श्री राकेश खाकाएवं विशिष्ट अतिथि के रूप में एसडीओपी आजाक श्री उमेश कुमार गर्ग उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत सहायक उप निरीक्षक मानसेवी श्री सिरोमन सिंह द्वारा अपनी 44 वर्ष की सेवा पूर्ण कर सेवानिवृत होने पर उप सेनानी श्री राकेश खाका द्वारा उनका माल्यार्पण कर साल श्रीफल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर उप सेनानी श्री राकेश खाका द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया की कर्मचारी अपना पूरा जीवन अपनी शासकीय सेवा में देता है और रिटायरमेंट के बाद उसका पुनर्जन्म होता है। वह परिवार और समाज में समय देता है जो वह शासकीय सेवा के दौरान नहीं दे पाया इसलिए वह परिवार और समाज में थोड़ा झिझकता है लेकिन धीरे-धीरे सब सामान्य हो जाता है इसलिए व्यक्ति को हमेशा सामाजिक और पारिवारिक व्यक्तियों के साथ अपनी सेवा के दौरान भी मेलजोल बना के रखना चाहिए ताकि जब सेवानिवृत हो और घर जाएं तब झिझक ना लगे। इस दौरान उन्होंने सेवानिवृत होने वाले शासकीय सेवक को भरोसा दिलाया गया कि आपको किसी भी प्रकार की आवश्यकता हो तो वाहिनी आपका परिवार है आप निसंकोच अपनी बात यहां रख सकते हैं आपको पूरा सहयोग किया जाएगा। सहायक उप निरीक्षक सिरोमन सिंह ने भी अपने 44 साल की सेवा काल के अनुभव सभी के बीच साझा किये और सभी को अनुशासन और ईमानदारी से शासकीय सेवा करने की सीख दी। कार्यक्रम का संचालन सहायक उप निरीक्षक श्री कमलेश प्रजापति के द्वारा किया गया।इस अवसर पर वाहिनी के क्वार्टर मास्टर श्री संतोष कुमार सेन, मुख्यालय निरीक्षक श्री अजय राय, मुख्य क्लर्क श्री रशीद खान, स्टेनो श्री कपिल शर्मा, सहायक उप निरीक्षक श्री नेमीचंद आर्य, प्रधान आरक्षक जगदीश प्रसाद श्री अखिलेश सिंह समेत वाहिनी के समस्त अधिकारी कर्मचारी व सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के परिजन उपस्थित रहे।

सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों का कलेक्टर वानखड़े ने शाल एवं श्रीफल भेंटकर किया सम्मानित

दतिया, निप्र। कलेक्ट्रेट कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए सहायक वर्ग-2 श्री दयाशंकर पांडे एवं होमगार्ड सैनिक श्री नाथूराम को कलेक्टर श्री स्वप्निल वानखड़े द्वारा शाल एवं श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया। आयोजित सम्मान समारोह में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने दोनों सेवानिवृत्त कर्मचारियों के कार्यों की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कलेक्टर श्री वानखड़े ने कहा कि शासकीय सेवा के दौरान कर्मचारियों द्वारा निभाई गई जिम्मेदारियां एवं उनके अनुभव सदैव प्रेरणादायी रहते हैं। उन्होंने कहा कि वर्षों तक निष्ठा, ईमानदारी एवं समर्पण के साथ दी गई सेवाएं प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर कलेक्टर श्री वानखड़े ने दोनों कर्मचारियों को स्वस्थ, सुखमय एवं मंगलमय जीवन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सेवानिवृत्ति जीवन का नया अध्याय है, जिसे सकारात्मक सोच एवं परिवार के साथ खुशहाल तरीके से बिताना चाहिए। सम्मान समारोह के दौरान उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी सेवानिवृत्त कर्मचारियों को शुभकामनाएं दीं।

पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत गठित सलाहकार समिति की बैठक संपन्न

शिवपुरी, निप्र। जिले में लिंगानुपात में सुधार करने और प्रसव पूर्व भ्रूण लिंग परीक्षण जैसी सामाजिक बुराई पर पूरी तरह अंकुश लगाने हेतु कलेक्ट्रेट सभागार में कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा की अध्यक्षता में पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत गठित जिला स्तरीय सलाहकार समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में समिति के सदस्यों के साथ जिले में एक्ट के प्रभावी क्रियान्वयन और मॉनिटरिंग को लेकर विस्तृत समीक्षा की गई।कलेक्टर श्री वर्मा ने दिए सख्त निगरानी के निर्देशबैठक मे कलेक्टर श्री अर्पित वर्मा ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्रसव पूर्व भ्रूण का लिंग परीक्षण करना और करवाना एक गंभीर कानूनी अपराध है। इस पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए ही पीसीपीएनडीटी एक्ट लागू किया गया है।

- यातायात प्रबंधन को लेकर आयोजित हुई बैठक में सर्वसम्मति से हुआ निर्णय
- ऊर्जा मंत्री श्री तोमर एवं सांसद श्री कुशवाह की मौजूदगी में हुई बैठक

15 जून से आईएसबीटी से भी मिलेंगीं मुरैना एवं भिण्ड के लिए बसें

शहर से संचालित सभी वीडियोकोच बसें भी अब आईएसबीटी से संचालित होंगीं

ग्वालियर , निप्र। ग्वालियर में यातायात प्रबंधन के लिये ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर एवं सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह ने संयुक्त रूप से बैठक लेकर यातायात प्रबंधन के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं। ग्वालियर से मुरैना एवं भिण्ड जाने वाले यात्रियों के लिये अब पुराने बस स्टेण्ड के साथ-साथ ग्वालियर में नवनिर्मित आईएसबीटी (अंतर्राज्यीय बस अड्डा) से भी यात्री बसें उपलब्ध होंगीं। इस आशय का निर्णय बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया। बैठक में बस ऑपरेटर्स यूनियन के सदस्यों ने भी इस निर्णय पर सहमति प्रदान की। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर एवं सांसद श्री कुशवाह ने सभी व्यवस्थायें पूर्ण कर 15 जून से आईएसबीटी से भी बसों का संचालन प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में रविवार को यातायात प्रबंधन के संबंध में आयोजित बैठक में ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर एवं सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह ने संयुक्त रूप से शहर की यातायात व्यवस्था को और बेहतर बनाने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गेश कुँवर सिंह जाटव, भाजपा के ग्रामीण जिला अध्यक्ष श्री प्रेम सिंह राजपूत, कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री धर्मवीर सिंह, नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय, जिला परिवहन अधिकारी श्री विक्रमजीत सिंह कंग सहित जनप्रतिनिधि एवं विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। यातायात प्रबंधन के लिये आयोजित बैठक में ग्वालियर शहर से संचालित वीडियोकोच बसों का संचालन भी आईएसबीटी (अंतर्राज्यीय बस स्टैण्ड) से करने की सहमति हुई। इस संबंध में वीडियोकोच बस संचालकों से भी चर्चा की जायेगी। मुरैना एवं भिण्ड के लिये संचालित यात्री बसें पुराने बस स्टैण्ड से चलकर आईएसबीटी पहुँचेंगीं और वहां से सवारियां लेकर रवाना होंगीं। सभी बसों को आईएसबीटी पर पहुंचना अनिवार्य होगा। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि पुराने बस स्टैण्ड से आईएसबीटी तक पहुंचने के लिये यात्रियों को बेहतर परिवहन व्यवस्था उपलब्ध हो, इसके लिये पुलिस विभाग के माध्यम से ऑटो एवं अन्य सवारी वाहनों की दरें भी निर्धारित की जायेंगीं ताकि आम नागरिकों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि स्मार्ट सिटी द्वारा संचालित द सूत्र बस सेवा÷ का संचालन भी आईएसबीटी बस स्टैण्ड से ही किया जायेगा। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि शहर की यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने की जवाबदारी हम सभी की है। ग्वालियर के बस ऑपरेटर इसमें सहयोग करें और ग्वालियर में आधुनिक अंतर्राज्यीय बस स्टैण्ड का संचालन व्यवस्थित रूप से हो ताकि नागरिकों को बेहतर सुविधायें मिल सकें। यातायात प्रबंधन ने शासन-प्रशासन के साथ-साथ सभी लोग सहभागी बनें इसकी महती आवश्यकता है।

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने कहा कि यातायात प्रबंधन के लिये नए बस स्टैण्ड का संचालन सभी की सहमति से शीघ्र अतिशीघ्र प्रारंभ हो, यह जरूरी है। मुरैना एवं भिण्ड की बसें नए बस स्टैण्ड से होकर रवाना हों ताकि वहां के यात्रियों को भी सुविधा मिल सके। उन्होंने कहा कि नए बस स्टैण्ड तक पहुँचने के लिये यात्रियों को सुगम यातायात प्रबंधन के लिये भी प्रशासन व पुलिस की ओर से सार्थक प्रयास किए जायेंगे। इसके लिये ऑटो एवं सवारी वाहनों की दरें निर्धारित करने का कार्य किया जाएगा। निजी वाहनों से सवारी लेजाने वालों पर पुलिस विभाग के माध्यम से कार्रवाई सुनिश्चित की जायेगी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री धर्मवीर सिंह ने कहा कि यातायात के बढ़ते दबाव के कारण शहर में यातायात प्रबंधन में कई प्रकार की समस्यायें आती हैं। यात्री बसों का संचालन नए बस स्टैण्ड से प्रारंभ हो, इसके लिये सभी को मिलकर सार्थक प्रयास करना होंगे। मुरैना एवं भिण्ड की बसें नए बस स्टैण्ड से होकर निकलें, यह व्यवस्था शीघ्र प्रारंभ की जाना चाहिए। पुलिस विभाग के माध्यम से रास्ते में पिकअप केन्द्र स्थापित करने का कार्य भी किया जायेगा। इसके साथ ही यात्री वाहनों की दरें निर्धारित करने का कार्य भी परिवहन विभाग द्वारा सुनिश्चित किया जायेगा। बैठक में बस ऑपरेटर्स यूनियन के पदाधिकारियों ने भी अपने-अपने विचार रखे।

तंबाकू मुक्त दतिया का संदेश लेकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निकला जागरूकता रथ

कलेक्टर श्री वानखड़े ने दिखाई हरी झंडी

दतिया , निप्र। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर आज 31 मई को जिला प्रशासन दतिया द्वारा तंबाकू एवं नशा मुक्ति के प्रति जनजागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विशेष नशा मुक्ति जागरूकता रथ निकाला। कलेक्टर श्री स्वप्निल वानखड़े ने जागरूकता रथ को हरी झण्ड़ी दिखाकर रवाना करते हुए तंबाकू मुक्त दतिया के निर्माण का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हमें अपने आप और आसपास से नशा मुक्त का कार्य शुरू करना चाहिए। नशा मुक्ति जागरूकता रथ जिले के विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में भ्रमण कर आमजन को तंबाकू सेवन से होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करेगा। रथ के माध्यम से नशा मुक्ति संकल्प पत्र, शपथ पत्र एवं जनजागरूकता विषयक पंपलेट वितरित किए जाएंगे तथा नागरिकों को नशामुक्त समाज के निर्माण हेतु प्रेरित किया जाएगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कलेक्टर श्री वानखड़े ने कहा कि तंबाकू सेवन न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करता है, बल्कि उसके परिवार, समाज एवं पारिवारिक आर्थिक स्थिति पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

उन्होंने कहा कि तंबाकू और अन्य नशीले पदार्थ अनेक गंभीर बीमारियों का कारण बनते हैं तथा युवाओं को इनके दुष्प्रभावों से बचाने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने सभी नागरिकों से तंबाकू मुक्त जीवन अपनाने तथा अपने आसपास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। इस अवसर पर उपस्थित नागरिकों, युवाओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने नशा मुक्त समाज के निर्माण हेतु सामूहिक संकल्प लिया। कार्यक्रम के दौरान तंबाकू छोड़ें, जीवन जोड़ें, जीवन अनमोल है, तंबाकू का कोई मोल नहीं, नशा मुक्त दतिया दृ स्वस्थ दतिया तथा तंबाकू को कहो ना, स्वस्थ जीवन को कहो हाँ जैसे प्रेरणादायक नारों के माध्यम से जनजागरूकता का संदेश दिया गया। कार्यक्रम मुख्य उद्देश्य युवाओं एवं समाज के सभी वर्गों को तंबाकू, शराब एवं अन्य मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले स्वास्थ्य, सामाजिक एवं आर्थिक दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना है। ज्ञातव्य रहे कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 2026 के लिए निर्धारित थीम ÷आकर्षण का पर्दाफाश -निकोटीन और तंबाकू की लत का मुकाबला÷ के अनुरूप विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। आयोजन में होगी विविध प्रतियोगिताएं जिले में पोस्टर एवं बैनर प्रदर्शनी, चित्रकला, निबंध, भाषण, रंगोली तथा लेखन प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों एवं युवाओं को जागरूक किया जाएगा। इसके अलावा नुक्कड़ नाटक, गीत-संगीत, संगोष्ठी एवं जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित कर तंबाकू सेवन से होने वाली गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, टीबी, हृदय रोग एवं श्वसन संबंधी रोगों की जानकारी दी जाएगी। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के आसपास 100 मीटर की परिधि में स्थित पान, गुटखा एवं तंबाकू विक्रय केंद्रों के विरुद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए हैं। जिले के सार्वजनिक स्थलों, शासकीय कार्यालयों एवं लोक परिवहन वाहनों पर बैनर, पोस्टर एवं स्टीकर के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश प्रसारित किया जाएगा।

नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए जनभागीदारी अभियान जारी

- जागरूकता रथों और नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से ग्वालियर में गूंजा नशामुक्ति का संदेश

ग्वालियर , निप्र। ग्वालियर जिले को नशामुक्त बनाने और भावी पीढ़ी को व्यसनों से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देशों के अनुपालन में विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में जिले भर में नशामुक्ति के प्रति नागरिकों को जागरूक किया जा रहा है।

संयुक्त कलेक्टर एवं प्रभारी संयुक्त संचालक (सामाजिक न्याय) श्री विनोद सिंह ने बताया कि जिले में विगत एक सप्ताह से विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में रविवार को जिले के विभिन्न क्षेत्रों में नशामुक्ति जागरूकता रथों और नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से आमजन को तंबाकू, शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों के दुष्प्रभावों से अवगत कराया गया। ये जागरूकता रथ ग्वालियर की सभी विधानसभा क्षेत्रों में भ्रमण कर ऑडियो संदेशों, पंपलेट वितरण और जनसंवाद के जरिए लोगों को नशामुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर आयोजित नुक्कड़ नाटकों में कलाकारों ने अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियों के माध्यम से नशे के कारण उत्पन्न होने वाली सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सजीव चित्रण किया। इन कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में उपस्थित नागरिकों को नशे के दुष्परिणामों की जानकारी देने के साथ ही जीवन में कभी भी किसी भी प्रकार का नशा न करने का संकल्प दिलाया गया। इस अवसर पर संयुक्त कलेक्टर श्री विनोद सिंह ने कहा कि नशा न केवल व्यक्ति, बल्कि परिवार और संपूर्ण समाज के लिए घातक है। उन्होंने युवा पीढ़ी को नशे की लत से बचाने के लिए जनजागरूकता को अत्यंत आवश्यक बताते हुए सभी नागरिकों से नशामुक्त समाज के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में रमन शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री हरिओम गौतम, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी श्रीमती पूर्वी अग्रवाल, समाजसेवी श्री रामदास माहौर, श्री अमित मंडेलिया, श्री हिमांशु माहौर, श्री आदित्य बाथम एवं श्री आकाश खरे विशेष रूप से उपस्थित रहे। अभियान के दौरान नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए जिले को नशामुक्त बनाने का सामूहिक संकल्प लिया।

भरोसीराम की जिंदगी बदल दी जनमन ने

ग्वालियर , निप्र। विशेष पिछड़ी जनजातियों में शामिल सहरिया समुदाय के लोगों के जीवन में प्रधानमंत्री जनमन अभियान नई उम्मीद लेकर आया है। ग्वालियर जिले की जनपद पंचायत भितरवार की सुदूर ग्राम पंचायत घरसोंदी से एक छोटी सी आदिवासी दफाई जुड़ी है। इसी आदिवासी दफाई के निवासी श्री भरोसीराम आदिवासी का वर्षों पुराना पक्के घर का सपना पीएम जनमन अभियान (प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान) के माध्यम से साकार हुआ है। सहरिया जनजाति से ताल्लुक रखने वाले भरोसीराम आदिवासी के लिए हर बरसात एक कठिन परीक्षा की तरह आती थी। उनके पास टूटी-फूटी कच्ची झोंपड़ी थी, जिसमें पत्नी और चार बच्चों सहित छह सदस्यों का परिवार रहता था। बारिश में छत टपकती, दीवारें गलती और रातें डर में बीतती थीं।

भरोसीराम अपने परिवार का गुजारा तो आसानी से चला लेते थे, पर आमदनी इतनी नहीं थी कि पक्का घर बनवा सकें। सहरिया जनजाति से ताल्लुक रखने वाले भरोसीराम आदिवासी के लिए हर बरसात एक कठिन परीक्षा की तरह आती थी। उनके पास टूटी-फूटी कच्ची झोंपड़ी थी, जिसमें पत्नी और चार बच्चों सहित छह सदस्यों का परिवार रहता था। बारिश में छत टपकती, दीवारें गलती और रातें डर में बीतती थीं। भरोसीराम अपने परिवार का गुजारा तो आसानी से चला लेते थे, पर आमदनी इतनी नहीं थी कि पक्का घर बनवा सकें।

बदल गई जिंदगी की तस्वीर : आज भरोसीराम के चेहरे पर जो संतोष और प्रसन्नता है, वह शब्दों में बयान करना मुश्किल है। वे कहते हैं कि पहले बारिश में कभी-कभी रात भर जागना पड़ता था। अब हम अपने घर की छत तले परिवार सहित चैन की नींद सोते हैं।

रविवार की छुट्टी के दिन भी स्वामित्व योजना का काम पूर्ण कराने मैदान में उतरे अधिकारी

- ग्वालियर जिले में कलेक्टर के निर्देश पर विशेष अभियान जारी

ग्वालियर , निप्र। ग्रामीण नागरिकों को उनकी आवासीय संपत्ति का वास्तविक मालिकाना हक दिलाने के उद्देश्य से सरकार द्वारा संचालित स्वामित्व योजना को ग्वालियर जिले में मिशन मोड पर पूरा किया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के नेतृत्व में जिला प्रशासन द्वारा इस दिशा में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत रविवार को सार्वजनिक अवकाश के बावजूद वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों और राजस्व अमले ने गाँव-गाँव में पहुँचकर स्वामित्व योजना का काम किया। विशेष अभियान के तहत रविवार को अपर जिला दण्डाधिकारी श्री सी.बी. प्रसाद ने तानसेन तहसील के विभिन्न ग्रामों का सघन दौरा किया। उन्होंने ग्राम डबका, डोंगरपुर और बेहट पहुँचकर स्वामित्व योजना की प्रगति की समीक्षा की। श्री प्रसाद ने न केवल कार्यों का निरीक्षण किया, बल्कि मौके पर ही पोर्टल पर आवश्यक प्रविष्टियां भी सुनिश्चित कराईं। इसी क्रम में एसडीएम भितरवार श्री राजीव समाधिया ने भी अपने क्षेत्र के ग्राम गोहिंदा, बाजना और अन्य प्रभावित गाँवों का भ्रमण किया। उन्होंने ग्रामीणों से संवाद कर योजना के लाभ बताए और राजस्व अधिकारियों को शेष कार्यों को त्वरित गति से पूर्ण करने के निर्देश दिए। इसी तरह जिले के अन्य एसडीएम व तहसीलदारों सहित संबंधित अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यों को गति दी थी।

गुणवत्ता और समय-सीमा पर विशेष जोर : कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने सभी राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया है कि स्वामित्व योजना के शेष कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं। उन्होंने कहा है कि नक्शों का सत्यापन, अभिलेखों का परीक्षण और पोर्टल पर प्रविष्टियों का कार्य पूरी गुणवत्ता एवं पारदर्शिता के साथ किया जाए। किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा है कि पात्र हितग्राहियों को उनके संपत्ति कार्ड (स्वामित्व अभिलेख) उपलब्ध कराने में किसी भी स्तर पर विलंब न हो।

वैधानिक अधिकार

ग्रामीणों को उनकी संपत्ति का कानूनी मालिकाना हक मिलता है।

वित्तीय सुलभता

संपत्ति कार्ड के आधार पर ग्रामीण बैंकों से ऋण और अन्य वित्तीय लाभ आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

विवादों में कमी

सटीक भू-अभिलेखों से संपत्ति संबंधी आपसी विवादों का स्थाई समाधान होता है।

व्यवस्थित विकास

इससे ग्रामीण क्षेत्रों में पारदर्शी और नियोजित ग्राम पंचायत विकास योजनाओं को बल मिलता है।

राइट क्लिक

श्रद्धांजलि

सिने संगीत के स्वर्ण युग का आखिरी 'सुमन' भी मुरझा गया...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

सुमन कल्याणपुर के रूप में भारतीय सिने संगीत के स्वर्णयुग का आखिरी सुमन भी मुरझा गया। सुमनजी ने 89 की उम्र में आखिरी सांस ली। लता-आशा जैसी महान और युगांतरकारी पार्श्वगायिकाओं के दौर में भी सुमन कल्याणपुर ने बिना किसी शिकवे-शिकायत के अपने गायन की स्वणरिखा को यथासंभव दमकाए रखा। हिंदी सिने संगीत की दुनिया में उनका सफर यूं तो फिल्म 'नसीब' में गाए गीत 'जिंदगी इम्तिहान लेती है' के साथ ही खत्म हो गया था। लेकिन मराठी और अन्य भाषाओं में वो बाद में भी गाती रहीं।

सुमन कल्याणपुर की खूबी और खामी यही थी कि उनकी आवाज गानसरस्वती लता मंगेशकर से काफी-कुछ मिलती थी। उनकी नाजुक, मंद हवा के झोंके-सी, मिठासभरी आवाज सुनकर कई बार धोखा होता है कि ये गीत लताजी ने गाया है या सुमन कल्याणपुर ने। बावजूद समकालीन होने की इस कठिन चुनौती के सुमन कल्याणपुर ने कई ऐसे गीत गाए हैं, जो सिर्फ उन्हीं के खाते में क्रेडिट होंगे। मसलन 'बुझा दिए हैं खुद अपने हाथों मुहब्बतों के दिए जलाके' (शगुन), ' मेरे महबूब न जा, आज की रात न जा' (नूरमहल), 'बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है' (रेशम की डोरी), 'नन्हीं सी परी मेरी लाड़ली' (दिल एक मंदिर), 'न तुम हमे जानो न हम तुम्हे जानें' (बात एक रात की), 'यूं ही दिल ने चाहा था रोना- रूलाना, तेरी याद तो बन गई एक बहाना' (दिल ही तो है) आदि। सुमन कल्याणपुर की मुश्किल यह थी कि उन्हें लता मंगेशकर रूपी सूर्य की छाया में ही रहना और बढ़ना था। यह काफी हद तक वृटवृक्ष के नीचे वसंत खिलाने जैसी चुनौती थी। स्वयं लताजी के सक्रिय रहते, उन जैसी आवाज, जिसमे सुमनजी की आवाज में महज 19-20 का फर्क हो, को लेकर आगे बढ़ना यानी 24 कैरेट सोने के साथ 22 कैरेट सोने के स्वर्णाभूषण को एक पलड़े में रखने जैसा था। यह निर्विवाद है कि सुमनजी और लताजी के स्वर की बुनावट और गायन शैली में इतना महीन फर्क है कि अच्छे-अच्छे कानसेन भी धोखा खा जाएं। सुमनजी और लताजी के आवाज की रेंज का बहुत सूक्ष्म अंतर तार सप्तक में जाकर महसूस होता है। इस अनोखे स्वर-साम्य के बावजूद सुमन कल्याणपुर और लताजी में कहीं कोई सीधी प्रतिस्पर्धा नहीं थी। क्योंकि सुमन कल्याणपुर ने 1954 से जब हिंदी फिल्मों में गाना शुरू किया तब लताजी सिने जगत में दिग्गज पार्श्वगायिका के रूप में स्थापित हो चुकी थीं और खुद सुमन कल्याणपुर अपने कॉलेज जीवन में मंच से लताजी के गाए गीत गाया करती थीं। दोनों की उम्र में भी आठ साल का अंतर था। खुद सुमन कल्याणपुर ने भी कभी अपने को लताजी का प्रतिस्पर्धी नहीं माना। लेकिन उनकी आवाज सुनकर समीक्षकों ने उन्हें 'प्रतिलता' भी कहा। चूंकि लताजी के सुरों का जलवा अपने शबाब पर था, इसलिए सुमन कल्याणपुर के हिस्से में वो ही गीत आते थे, जो लताजी गाने से मना कर देती थीं या फिर उनकी तगड़ी फीस के चलते छोटे संगीतकार लताजी की जगह सुमन को ले लेते थे। कहते हैं कि लता मंगेशकर 60 के दशक में प्रति गाना 100 रू. चार्ज करती थीं, जो उस समय के हिसाब से बड़ी रकम थी। साठ के दशक के अंत में लता मंगेशकर और मोहम्मद रफी के बीच पार्श्वगायकों को रॉयल्टी देने के सवाल पर हुए बहुचर्चित विवाद के बाद दोनों ने कुछ समय के लिए साथ गाना बंद कर दिया था। ऐसे में संगीतकारों ने लता की आवाज की पूर्ति सुमन कल्याणपुर के स्वर से की। सुमनजी ने सबसे ज्यादा 137 दोगाने मोहम्मद रफी के साथ गाए। जिनमें 'दिल एक मंदिर है..' (दिल एक मंदिर), आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे हर जबान पर ' (ब्रह्मचारी),' 'नाना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे' (जब जब फूल खिले), 'तुमने पुकारा और हम चले आए' (राजकुमार),(पर्बतों के पेड़ों पर शाम का बसेरा है, सुरमई उजाला है, चंपई अंधेरा है'(शगुन) आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं। सुमनजी ने अपने समय के लगभग सभी बड़े पार्श्वगायकों के साथ गाया। उनमें मुकेश के साथ 'मेरा प्यार भी तू है, ये बहार भी तू है' (साथी), ये किसने गीत छेड़ा' (मेरी सूरत तेरी आंखें), या मन्ना डे के साथ 'तुम जो आ जाए तो प्यार आ जाए' (सखी रॉबिन), 'न जाने कहां तुम थे, न जाने कहां हम थे (जिंदगी और ख्वाब)' फिर किशोर कुमार के साथ 'तेरा मेरा, मेरा तेरा मिल गया दिल दिल से..' (नागिन) आदि। फिल्म 'गंगा की लहरें' का अमर भजन 'जय जय हे जगदम्बे माता, द्वार तिहारे जो भी आता, बिन मांगे सब कुछ पा जाता' भी सुमन कल्याणपुर ने ही गाया है और इसे लिखा था शायर मजरूह सुल्तानपुरी ने। सुमन कल्याणपुर ने अपना पहला फिल्मी गीत जाने माने पार्श्वगायक तलत महमूद के साथ 1954 में फिल्म 'दरवाजा' के लिए रिकॉर्ड किया था। लेकिन सुमनजी को शोहरत 60 के दशक की शुरूआत से मिलनी शुरू हुई। कई बड़े संगीतकारों ने उनकी आवाज का अपने कंपोजिशन्स में बेहतरीन उपयोग किया। सुमन कल्याणपुर ने हिंदी के अलावा मराठी में भी बहुत से कालजयी गीत गाए हैं। खासकर उनके गाए कई गैर फिल्मी भावगीत मराठी सुगम संगीत की अनमोल थाती हैं। इसके अलावा बंगाली और अन्य भारतीय भाषाओं के गीतों को उन्होंने स्वर दिया है।

सुमन कल्याणपुर के व्यक्तित्व के खूबी यही है कि एक उत्कृष्ट पार्श्वगायिका के रूप में उन्होंने अपनी साधना खामोशी के साथ जारी रखी। बिना किसी दौड़ में शामिल हुए, कुछ-कुछ स्वांतः सुखाय सी। एक सच्ची कला साधिका के रूप में सुमन कल्याणपुर समय की स्लेट पर अपनी रेखा बड़ी करती रहीं। खास बात यही है कि उनकी आवाज लताजी जैसी होते हुए भी वो लता मंगेशकर की नकल करती नहीं लगतीं। वैसा ही माधुर्य, वैसी ही गहराई और वैसा ही जज्बा। भले ही सुनने वाले के कानों को धोखा हो जाए। अगले ही क्षण वो सावधान हो जाए कि यह लता नहीं, सुमन है। कहते हैं ? लता जैसी आवाज की धनी होते हुए भी सुमनजी और लताजी की सीधी भेंट पांच-छह बार ही हुई और वो भी बहुत थोड़े समय के लिए। सुमन कल्याणपुर अपनी इस सफल संगीत यात्रा का श्रेय अपने पिता शंकरराव हेमाडी और पति को देती थीं। कहते हैं कि अपनी पत्नी के कॅरियर के लिए उनके पति रामानंद कल्याणपुर ने अपने बिजनेस को भी दांव पर लगा दिया था। सुमन कल्याणपुर का गाया फिल्म 'शमा' का एक मशहूर गीत है 'दिल गम से जल रहा है, जले पर धुआं न हो, कोई इम्तिहां न हो।'' पार्श्वगायन की प्रतिस्पर्धी दुनिया में सुमनजी ने जो भी गाया, दिल से गाया। शोहरत की बुलंदियों की अग्रिम पंक्ति में जगह न मिलने का गम दिल के किसी कोने में भले रहा हो, लेकिन वो कभी जुबां पर नहीं आया। सुमन कल्याणपुर को पार्श्वगायन में उनके विशिष्ट योगदान के लिए कई पुरस्कार मिले। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण और महाराष्ट्र सरकार ने अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'महाराष्ट्र भूषण' से उन्हें विभूषित किया।

सुमन कल्याणपुर का मोहम्मद रफी और मुकेश के साथ गाया एक दर्द भरा गीत है 'दिल ने फिर याद किया, बर्क सी लहराई है। फिर कोई चोट मुहब्बत की उभर आई है।'' इसी गीत में सुमनजी की दिल चीरती आवाज में ये पंक्ति है- 'क्या बताएं तुम्हे हम शम्मा की किस्मत क्या है, गम में जलने के सिवा और मुहब्बत क्या है..।' यह दर्द उस फिल्म की नायिका का ही नहीं, शायद उस पार्श्वगायिका का भी है, जिसकी किस्मत में सिने संगीत की सल्तनत में वो ओहदा शायद नहीं लिखा था, जिसकी वो हकदार थीं। लेकिन फिल्मी और असल हीरोइन में फर्क यही है कि असल जिंदगी में सुमन कल्याणपुर जैसी गंधर्व गायिका अपनी सीमाओं को भी अपनी ताकत बना लेती हैं। सुमन कल्याणपुर ने यही किया। उनके नाम पर सिने पार्श्वगायन का युग भले दर्ज न हो, लेकिन उस युग में उन्होंने अपना योगदान स्वर्णाक्षरों में लिखने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

गंदे पानी की सप्लाई...गर्मी में बढ़ी मुसीबत

वार्ड-27 में टैंकरों से आ रहा पानी
5 हजार आबादी परेशान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वार्ड-27 में गंदे पानी की सप्लाई ने करीब 5 हजार लोगों की मुसीबत बढ़ा रखी है। यहां पर निगम टैंकरों के जरिए पानी की सप्लाई करता है, लेकिन पानी मटमैला आ रहा है। रहवासियों का कहना है कि यह समस्या कई दिन से बनी हुई है।

मांडवा बस्ती के शेर सिंह सोलंकी ने बताया कि यहां पानी की सप्लाई टैंकरों से ही होती है। नल कनेक्शन नहीं है, लेकिन पिछले कुछ दिन से टैंकरों का पानी मटमैला आ रहा है। जिससे यह पीने के लिए उपयोग नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में आसपास से पीने के लिए पानी की जुगाड़ करते हैं। पार्षद से मांग की है कि यहां साफ पानी की सप्लाई करें।

मध्य प्रदेश विधानसभा के सामने नगर निगम के फिल्टर प्लांट का पिछले सप्ताह महापौर मालती राय ने निरीक्षण किया था। मेयर मालती राय ने हाल ही में विधानसभा के सामने नगर निगम के फिल्टर प्लांट का निरीक्षण किया था। इस दौरान उन्होंने कहा था कि जिन इलाकों में बड़ा तालाब का पानी मिल रहा है, वहां रहने वाले लोगों को आरओ लगाने की जरूरत नहीं है। यहां से शुद्ध पानी दिया जा रहा है। हालांकि, कई इलाके ऐसे हैं, जहां लोगों को गंदा पानी मिल रहा है।

प्री-मानसून का हा-हा कार, 100 किमी की रफ्तार से चली आंधी से इंदौर अस्त-व्यस्त

शहरभर में पेड़ और होर्डिंग गिरे, धूल का गुबार, कई जगह पानी गिरा

इंदौर। भीषण गर्मी के बीच प्री-मानसून की दस्तक ने इंदौर वासियों को राहत देने के बजाय आफत में डाल दिया। सोमवार दोपहर बाद मौसम ने अचानक ऐसा रौद्र रूप अख्तियार किया कि पूरा शहर तबाही के मंजर का गवाह बन गया। तेज आंधी के कारण इंदौर आने वाली दो-तीन फ्लाइट अन्य शहरों में डाइवर्ट की गई। एयरपोर्ट पर असमंजस का माहौल बन गया।

करीब 100 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चली चक्रवाती और धूल भरी आंधी के कारण कुछ ही मिनटों में पूरा शहर धूल के गुबार से ढक गया। हालात इस कदर बिगड़ गए कि दृश्यता (विजिबिलिटी) लगभग शून्य पर पहुंच गई और सड़कों पर चल रहे वाहनों को दिन में ही हेडलाइट्स जलानी पड़ीं। आसमान में छाए काले घने बादलों और धूल के कारण शहरवासियों को दिन में ही रात जैसा अहसास होने लगा।

बोर्ड और टीन शेड उड़े

तूफानी हवाओं के चलते शहर भर के बाजारों और रिहायशी इलाकों में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। हवा की रफ्तार इतनी तेज थी कि कई दुकानों के साइन बोर्ड, फ्लेक्स और मकानों-दुकानों के ऊपरी हिस्सों में लगे टीन शेड ताश के पत्तों की तरह हवा में उड़ गए। एमजी रोड, राजवाड़ा, विजयनगर और भवरकुआं जैसे व्यस्त इलाकों में दुकानदारों को अपना सामान सुरक्षित करने के लिए भारी मशक्कत करनी पड़ी। कई स्थानों पर विशालकाय विज्ञापन होर्डिंग भी भरभराकर जमीन पर आ गिरे, जिससे गाड़ियां मलबे में दब गईं।

पेड़ गिरने से यातायात थमा

आंधी और तूफान के इस हमले से शहर का जनजीवन पूरी तरह पटरी से उतर गया। एबी रोड, रिंग रोड और अंदरूनी बस्तियों के प्रमुख मार्गों पर दर्जनों बड़े पेड़ और उनकी भारी-भरकम शाखाएं धराशायी हो गईं। पेड़ गिरने के कारण कई इलाकों में घंटों तक लंबा ट्रैफिक जाम लगा रहा, जिससे राहगीरों को सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। नगर निगम की टीमें कटर लेकर सड़कों से पेड़ हटाने के काम में जुटी रहीं। इसके साथ ही, बिजली के तारों और खंभों पर पेड़ गिरने से शहर के आधे से ज्यादा हिस्से में बिजली आपूर्ति ठप हो गई, जिससे लोगों को भीषण उमस और अंधेरे का सामना करना पड़ा।

अगले 3 दिन येलो अलर्ट

मौसम विभाग ने पहले ही 31 मई से 3 जून तक इंदौर सहित मालवा-निमाड़ के खरगोन, बड़वानी, धार, उज्जैन, खंडवा और बुरहानपुर जिलों के लिए 'येलो अलर्ट' जारी किया था। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, वर्तमान में अरब सागर से आ रही नमी और स्थानीय हीटिंग के कारण यह स्थिति बनी है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि अगले कुछ दिनों तक क्षेत्र में तेज हवाओं, गरज-चमक के साथ धूल भरी आंधी और हल्की से मध्यम बारिश का दौर जारी रह सकता है।

प्रशासन की अपील

अचानक बदले इस मौसम और नुकसान को देखते हुए जिला प्रशासन और आपदा प्रबंधन की टीमें अलर्ट मोड पर आ गई हैं। प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि खराब मौसम के दौरान अनावश्यक रूप से घरों से बाहर न निकलें। विशेष रूप से बड़े पेड़ों, जर्जर इमारतों और बिजली के खंभों या होर्डिंग्स के नीचे खड़े होने से बचें, ताकि किसी भी तरह की जनहानि को रोका जा सके।

किसानों की सहमति के बिना खेतों में टावर निर्माण तत्काल रोका जाए: अजय सिंह

मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप की मांग, किसानों को अडानी कम्पनी चार गुना मुआवजा दे

भोपाल। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने सीधी जिले के चुरहट क्षेत्र में पावर ट्रांसमिशन परियोजना के लिए किसानों की सहमति के बिना उनके खेतों में जबरन टावर बनाये जाने को पूरी तरह गैर-कानूनी, दमनकारी और किसानों के अधिकारों पर सीधा हमला बताया है। अजय सिंह ने कहा कि अडानी की कम्पनी के लोग खेतों में जबरन घुसकर किसानों की खड़ी फसलों को बर्बाद कर रहे हैं। ऊपरी पहुँच बताकर उनके द्वारा अभद्र व्यवहार किया जा रहा है। विरोध करने पर किसानों को झूठे मुकदमों में फंसाने की धमकियों दी जा रही है। उन्होंने कहा कि भले ही कम्पनी की पहुँच ऊपर तक हो लेकिन इस कृत्य को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सिंह ने बताया कि उन्होंने मुख्यमंत्री मोहन यादव से भी इस संबंध में बात की है और कहा है कि जब तक किसानों की सहमति और मुआवजे का निपटारा नहीं हो जाता तब तक मुख्यमंत्री प्रकरण में हस्तक्षेप कर महान पावर ट्रांसमिशन परियोजना के लिए टावर लगाने का काम तुरंत रोकें। अजय सिंह ने कहा कि किसान सरकार के दिशा निर्देशों का पालन कर उन्हें वर्तमान बाजार मूल्य से चार गुना ज्यादा मुआवजा मांग रहे हैं। उनकी यह मांग नियमानुसार है। फिर शासन प्रशासन उनके साथ कम्पनी के दबाव में मनमानी और तानाशाही क्यों कर रहा है? उन्होंने मुख्यमंत्री से इस पर लगाम लगाने की मांग की है। पूर्व नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि कांग्रेस किसानों के साथ खड़ी है और उनके हितों के लिए आर पार की लड़ाई लड़ेगी। अगर किसानों के हक पर डाका डाला गया, तो पूरे क्षेत्र में चक्का जाम और जन-आंदोलन किया जाएगा, जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी।

प्रदेश में तबादलों का दौर 15 जून तक होंगे आदेश

पीएचक्यू के निर्देश पर जिलों में एसआई के हो रहे ट्रांसफर

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में तबादलों का दौर और प्रक्रिया शुरू हो गयी। 15 जून तक सभी विभाग अपने यहां स्वैच्छिक और प्रशासनिक आधार पर अधिकारी, कर्मचारी के तबादले कर सकेंगे।

उधर पीएचक्यू द्वारा 5 जून तक आरक्षक से एसआई तक के तबादले करने के निर्देश के बाद जिलों में एसपी और पुलिस आयुक्तों ने बदलाव शुरू कर दिया है।

दूसरी ओर शिक्षा विभाग समेत कई अन्य विभागों ने एक जून तक जिलों में पदस्थ अफसरों के पूरी डिटेल मांगी है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन ने संविदा पर पदस्थ कर्मचारी अधिकारी से आज दो जून तक ऑनलाइन आवेदन करने को कहा है। मोहन कैबिनेट ने 20 मई की बैठक में तबादला नीति को मंजूरी दी थी। इसके बाद सामान्य प्रशासन विभाग ने 22 मई को वर्ष 2026 की तबादला नीति जारी कर दी है।

नौ दिन के अंतराल में सभी विभागों को तबादले से संबंधित तैयारियां करने और विभागीय तबादला नीति जारी करने के निर्देश भी जीएडी ने दिए हैं। इसके बाद विभाग तबादला नीति के आधार पर स्थानांतरण आदेश जारी कर सकेंगे। जहां 200 से 1000 तक कर्मचारी हैं वहां 15 प्रतिशत तबादले किए जाएंगे। इसके साथ ही 1000 से 2000 तक की कर्मचारियों की संख्या वाले विभागों में 10त्न और 2001 से अधिक कर्मचारी संख्या वाले विभागों में पांच प्रतिशत तबादले किए जाएंगे।

जिन विभागों में 200 तक कर्मचारी हैं उनमें 20 प्रतिशत तबादले

तबादला नीति में कर्मचारियों के स्वैच्छिक और प्रशासनिक आधार पर तबादले को लेकर जो व्यवस्था तय की गई है उसके मुताबिक जिन विभागों में 200 तक कर्मचारी हैं उनमें 20 प्रतिशत तबादले होंगे।

इस तरह के मामले तबादला नीति से बाहर

नीति में कहा गया है कि स्वयं के व्यय वाले तबादलों में दो स्थितियां शामिल नहीं होंगी। इन्हें तबादला नीति से बाहर रखा गया है। इसमें पहला, पति-पत्नी को एक स्थान पर किए जाने वाले तबादले और दूसरा, पति-पत्नी की बीमारी के मामलों में होने वाले तबादले को तबादला नीति से बाहर रखा गया है।

अब भी सता रही करियर की चिंता!

प्रदेश की वाणिज्यिक राजधानी में पिछले दिनों हुए कार्यक्रम में एक केंद्रीय मंत्री महोदय ने आस्था का ऐसा राग अलापा कि दिल्ली तक उसकी गूंज सुनाई दे रही है। मंत्री जी ने अपनी आस्था तो दिखा दी–जो तारीफ के काबिल भी है–लेकिन इसके बहाने उन्होंने अपने भाषण में जो राजनीतिक 'असुरक्षा' जाहिर की, उसने सियासी पंडितों को चटखारे लेने का मौका दे दिया है। राजनीतिक गलियारों में तीखी चर्चा है कि जो शख्स प्रदेश की कमान पूरे तीन कार्यकाल तक अपने हाथों में संभाल चुका हो, उसे आज दिल्ली में बैठकर अपने राजनीतिक करियर की चिंता सता रही है! हद तो तब हो गई जब मंत्री जी ने भरे मंच से यह भी जता दिया कि एक फोन कॉल के जरिए उनकी इस चिंता का समाधान कैसे हुआ। सवाल है कि जो व्यक्ति इतने लंबे समय तक सूबे का 'माई-बाप' रहा हो, उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा भी बढ़ कर है ? इतने रसूख के बाद भी अगर करियर खोने का डर सताए, तो यह उनकी घोर निराशा और पद के प्रति तड़प को ही उजागर करता है।

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

उद्योगपति पर इतनी मेहरबानी क्यों

राज्य शासन के एक बड़े विभाग के विभागाध्यक्ष (आयुक्त महोदय) इन दिनों अपनी पूरी सरकारी ताकत एक रसूखदार उद्योगपति को फायदा पहुंचाने में झोंक रहे हैं। सीधे तौर पर तो हिम्मत नहीं हो रही, इसलिए पिछले दरवाजे से (अप्रत्यक्ष रूप से) फाइल को आगे बढ़ाने की पुरजोर कोशिशें जारी हैं। साहब ने उद्योगपति को पक्का भरोसा दिया था कि 'काम चुटकियों में शासन स्तर से करवा दिया जाएगा।' लेकिन मामला अब बुरी तरह उलझ चुका है। जब सीधे उंगली से घी नहीं निकला, तो आयुक्त महोदय खुद मैदान में उतरे और बड़े अफसरों की गणेश-परिक्रमा शुरू कर दी। पर वहां से भी उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा। अब साहब ने हार नहीं मानी है, अपने एक 'प्रभावशाली' करीबी के जरिए सेटिंग बिठाने का नया खेल शुरू किया है।

देखना यह है कि सरकारी कुर्सी पर बैठकर उद्योगपति की यह चाकरी कब तक रंग लाती है।

नर्मदापुरम रोड पर की 'गुमनाम' डील

कोलार रोड पर एक आईएएस अफसर द्वारा अपने लाडले के नाम जमीन खरीदने का तमाशा अभी शांत भी नहीं हुआ था कि एक और आईएएस जोड़े का नया किस्सा सामने आ गया है। इस रसूखदार आईएएस दंपति ने नर्मदापुरम रोड पर करीब 20 करोड़ रुपये की बेनामी संपत्ति खरीदी है। खेल छुपाने के लिए जमीन किसी और के नाम पर दर्ज कराई गई है। लेकिन पाप का घड़ा फूटने ही वाला है। मंत्रालय के गलियारों तक इस आलीशान सौदे की भनक लग चुकी है। दंपति के विरोधी गुट ने न सिर्फ इस गुप्त खरीदार को ढूंढ निकाला है, बल्कि इसमें लगे धन के पुख्ता सबूत और दस्तावेज भी जुटा लिए हैं। बहुत जल्द मंत्रालय में इसकी औपचारिक शिकायत ठोकने की तैयारी है। जाहिर है, इस भारी-भरकम खरीदी की भनक सरकार को कानोकान नहीं होगी। कोलार से लेकर नर्मदापुरम रोड तक, अफसरों की यह 'जमीन भूख' अब सरकार की नाक के नीचे बड़ा तमाशा खड़ी करने वाली है।